श्री हनुमान साधना संचयन

खंड–1

प्रणेता–डॉ0 नारायणदत्त श्रीमाली

संचयन कर्ता– आचार्य विजय वत्सल
(कुण्डली भाग्य), काशीबाबु पत्रकार भवन,
मंगल बाजार, गुमटी नं0–3,
मुंगेर–811201(बिहार)
ई–मेल vijayvatsalastrologer@gmail.com

।। त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये।।

(1)

Dec, 90

वीरता, तेज, बल, पराक्रम की प्राप्ति

हनुमान साधना

से

होती ही है

जो सरलतम रूप से सम्पन्न की जा सकती है

प्रत्येक व्यक्ति के लिए अत्यन्त श्रेष्ठ, उपयोगी तथा अनिवार्य साधना

जहां भक्ति है, वहीं ज्ञान का प्रकाश भी है, वहीं साधना का स्वरूप भी है, साधना किस स्वरूप में की जाय,—इस विषय में विशेष मत मतान्तर हो सकते हैं, लेकिन इतना तो सिद्ध है, कि साधना का बाण जब छूटता है तो वह लक्ष्य की ओर ही बढ़ता है, यह तो साधक की भावना उसकी भक्ति, उसकी साधना ,गुरु-कृपा पर निर्भर करता है, कि वह अपनी साधना के कारण, अपने साधना बाणों में कितनी तीव्रता ला सकता है, जिससे उसका लक्ष्य शीघ्र प्राप्त हो।

जीवन में हर कोई चाहता है, कि उसे ऐसा शक्ति आधार प्राप्त रहे—जिससे कि हर संकट के समय उसे सहायता चाहे मानसिक हो अथवा किसी अन्य माध्यम से प्राप्त हो, और इसका सबसे बड़ा उपाय साधना ही है, तथा साधना में सेवा-भाव का होना आवश्यक है, जब तक आप अपनी साधना में लीन होने का भाव उत्पन्न नहीं कर देते, शंका के वातावरण में साधना करते हैं—तो फिर सफलता कैसे मिल सकती है ? जो सेवा-भाव से कार्य करता है, भक्ति करता है, साधना करता है—वह अपने आपको सामान्य स्तर से ऊपर उठा देता है, क्योंकि उसमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की चाहत बन जाती है, और जिसकी साधना करता है—उसे प्रसन्न होना ही पड़ता है।

यदि यह कहा जाय कि पूरे भारतवर्ष में देवी-देवताओं के मन्दिर और उनके स्थानों की भरमार ही है, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी, कुछ मन्दिर तो इतने अधिक प्राचीन हैं, कि उस समय की सभ्यता, जीवन-धारा, आदर्श एवं उनके सुख और वैभव को देख कर आश्चर्य ही होता है, लेकिन आज स्थिति बिल्कुल विपरीत होती जा रही है, मन्दिरों की जगह एक प्रकार से दिखावटी महलों का निर्माण किया जाता है, ऐसे स्थानों पर पूजा कर क्या साधना के परमतत्व की अनुभूति हो सकती है ?

पूर्वजों को कम बुद्धिवाला मानने वाले, आज के तर्क बुद्धि रखने वाले व्यक्ति स्वयं ही वास्तविक रूप से मूर्ख व्यक्ति हैं, भारतवर्ष के प्रत्येक गांव में शिव मन्दिर के साथ-साथ हनुमान मन्दिर अथवा हनुमान जी का स्थान अवश्य ही मिलता है, लोक जीवन में हनुमान जी को जो स्थान प्राप्त है, वह किसी अन्य देवी-देवता को प्राप्त नहीं है, इसका कारण यह है, कि हनुमान देव इतने अधिक सरल, सात्विक, कृपालु, बल, बुद्धि, शारीरिक निरोगता के देव हैं–जिन्हें हर साधक, हर व्यक्ति अपने जीवन में सहज ही आदर्श बना सकता है।

हनुमान जी के बारे में दो बातें विशेष सिद्ध हैं, सर्व-प्रथम तो हनुमान–रुद्र अर्थात् शिव के अवतार हैं और दूसरा यह पवन पुत्र हैं, हनुमान-पूजन साधना से रुद्र सिद्धि प्राप्त होती है, श्री हनुमान वीरता, पराक्रम, दक्षता, के प्रतीक हैं, और शक्ति, बल, वीर्य, ओज, स्फूर्ति, धैर्य, यश, निर्भयता, निरोगता, विवेक, वाक्पटुता इत्यादि महा-गुणों के प्रदाता हैं, इस कारण जो साधक, जो व्यक्ति चाहे उसे शास्त्रों का ज्ञान हो या न हो, अपनी बुद्धि के अनुसार पूर्ण सेवा भाव से यदि हनुमान साधना–भक्ति सम्पन्न करता है, तो उसे यह सभी गुण निश्चय ही प्राप्त होते हैं, शक्ति बाहर से प्राप्त नहीं की जा सकती और न ही बाजार में मिलती है, शक्ति-स्रोत तो आपके स्वयं के भीतर छुपा है, उसे जाग्रत करने की आवश्यकता है, जिससे मन के साथ-साथ शरीर भी ऐसा तेजस्वी, बलवान और निरोगी हो जाय कि आत्मविश्वास का अमृत प्याला, शक्ति का सौन्दर्य, ज्ञान की गंगा, धैर्य का सागर, सरस्वती की सिद्धि आपमें छलकने लगे —यही तो भक्ति, साधना का परम स्वरूप है।

हनुमन्त देव—मूल स्वरूप

हनुमान मूल रूप से भगवान शंकर के अवतार हैं, क्योंकि जब भगवान विष्णु द्वारा राम का स्वरूप ग्रहण कर अवतार लिया गया तो भगवान शंकर ने हनुमान के रूप में अवतार लिया, इस प्रकार विष्णु एवं रुद्र के प्रभाव से ही विशिष्ट माया क्रियाएं पूर्ण हो सकीं, मूल हनुमान स्वरूप वीर भाव के साथ-साथ सेवा तथा आदर्श का स्वरूप मुख्य रूप से है, ऐसा अपने कार्यों में पूर्णत्व प्राप्त करने के लिए जिस समर्पण भाव का हनुमान स्वरूप में वर्णन मिलता है, वही समर्पण-स्वरूप साधक द्वारा ग्रहण करने से ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है, हनुमान साधना आदि के सम्बन्ध में सम्पूर्ण ग्रन्थ "हनुमत उपासना कल्पद्रुम" है, जिसमें हनुमान साधना विधि-विधान आदि से सम्बन्धित सम्पूर्ण विवरण सर्वोत्तम रूप से लिखा गया है, पवन-पुत्र होने के कारण हनुमान जी की शक्तियां अत्यन्त विशाल एवं प्रबल मानी जाती हैं, और यही फल साधक को अपनी साधना में प्राप्त होता है।

अलग-अलग शास्त्रों में इस विशेष साधना का अलग-अलग स्वरूप मिलता है, इस सम्बन्ध में वास्तविक स्वरूप पाठकों के लिए सम्पूर्ण रूप से प्रस्तुत किया जा रहा है।

हनुमान पूजा विधान

हनुमान पूजा साधना में सबसे विशेष बात यह है कि साधक, साधना में भावना कैसी रखता है, और उसमें समर्पण भाव कितना है, यह समर्पण भाव ही साधक को इस विशेष साधना में तत्काल फल प्रदान करता है, क्योंकि हनुमान-कृपा, सेवा और समर्पण से ही प्राप्त होती है।

ऐसी कोई बाधा नहीं, ऐसा कोई रोग नहीं, ऐसा कोई संकट नहीं—जो हनुमान साधना से दूर न हो सके, हनुमान साधना में सिद्धि और हनुमान का इष्ट प्राप्त साधक हजारों शत्रुओं के बीच से निकल जाय तो भी शत्रु उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, भूत-पिशाच का डर-भय और हानि हनुमान साधना सिद्ध साधक को कभी नहीं हो सकती, चाहे वह आधी रात को श्मशान में ही जा कर क्यों न बैठ जाय, भूत-प्रेत, पिशाच सभी का बल हनुमान के आगे नष्ट हो जाता है।

जहां तक ग्रहों का प्रश्न है, हनुमान साधना से विप-रीत ग्रह पूर्ण रूप से शान्त होते हैं, और शास्त्रों में ऐसा

लिखा है कि हनुमान और सूर्य एक दूसरे के स्वरूप हैं, और इनकी परस्पर मैत्री अत्यन्त प्रबल है, इसीलिए हनुमान साधना करने वाले साधक में सूर्य तत्व अर्थात् आत्मविश्वास, ओज, तेजस्विता विशेष रूप से आ जाती है, यह तेज ही तो साधक को सामान्य व्यक्तियों से अलग करता है।

हनुमान—मूल साधना

इस विशेष साधना को यदि थोड़े विधि-विधान सहित सम्पन्न किया जाय-तो साधना में फल प्राप्ति शीघ्र होती है, किसी प्रकार का दोष न रहने से साधना तत्व की प्राप्ति बिना विघ्न के, इच्छानुसार प्राप्त होती है, पूजा जिस विधि से की जाय उसका पालन निरन्तर आवश्यक है, कोई भी पूजा-साधना विशेषकर हनुमान साधना तो मजाक के तौर पर अथवा केवल प्रयोग के तौर पर नहीं करनी चाहिए।

षोडशोपचार पूजा

इस पूजा में मूल रूप से सभी साधनाओं में आवश्यक सोलह तत्व विद्यमान हैं और क्रमबद्ध रूप से इन्हें सम्पन्न करने से ही साधना पूर्ण होती है, यह षोडशोपचार पूजन क्रम में—१-आह्वान, २-आसन, ३-पाद्य, ४-अर्घ्य, ५-आचमन, ६-स्नान, ७-वस्त्र, ८-गन्ध, ९-अक्षत (चावल), १०-पुष्प, ११-धूप, १२-दीप, १३-नैवेद्य, १४-पुनराचमन, १५-ताम्बूल (सुपारी), १६-दक्षिणा-प्रदक्षिणा, सम्पन्न करना चाहिए, हनुमान साधना मंगलवार के दिन ही प्रारम्भ की जानी चाहिए, और इस दिन प्रातः साधक स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण कर, अपने पूजा स्थान में सर्वप्रथम **"हनुमानजी की मूर्ति अथवा चित्र"** स्थापित करें, साथ ही सिद्ध **"हनुमान यन्त्र" "हनुमान गुटिका"**, अपने सामने लाल वस्त्र बिछा कर स्थापित करें, सर्वप्रथम साधक सिन्दूर से स्वयं के तिलक करे, और हनुमान मूर्ति (चित्र), हनुमान गुटिका तथा यन्त्र पर भी सिन्दूर अवश्य चढ़ाएं, हनुमान साधना में सिन्दूर का जो कि तेल मिश्रित हो, विशेष विधान है, एक ओर तेल का दीपक तथा दूसरी ओर धूप जलाएं।

सर्व प्रथम पंचामृत से हनुमान गुटिका तथा यन्त्र को स्नान कराएं फिर शुद्ध जल से स्नान कराएं और उसके पश्चात् सिन्दूर अर्पित कर, हनुमान का आह्वान करें।

ध्यान मन्त्र

बालर्कायुत तेजसं त्रिभुवन प्रक्षोभकं सुन्दरम्
सुग्रीवादिसमस्तवानरगणैः संसेव्यपादाम्बुजम्।
नादेनैव समस्तराक्षसगणान्संत्रासयन्तं प्रभुं
श्रीमद्रामपदाम्बुजस्मृतिरतं ध्यायामि वातात्मजम्॥

अर्थात् "बुद्धिमान, सूर्य जैसी आभा वाले, तीनों लोकों को प्रभावित करने वाले, प्रबल, अपने हुंकार से सम्पूर्ण भूत-प्रेत बाधाओं को दूर करने वाले, भगवान राम के परमतत्व स्वरूप-श्री हनुमान जी मेरे पूजा स्थान में आसन ग्रहण करें, और मुझे पूजन का अभीष्ट फल प्रदान करें।"

इसके पश्चात् साधक को सिन्दूर लेपन कर, सामने एक जल पात्र में जल अर्पित कर स्वयं भी थोड़ा जल ग्रहण करना चाहिए और हनुमान यन्त्र और गुटिका को मौली, अबीर-गुलाल, अक्षत, पुष्प, सुपारी तथा गुड़ का प्रसाद समर्पित करना चाहिए।

इसके पश्चात् दोनों हाथ जोड़ कर श्री हनुमान के विभिन्न स्वरूपों का ध्यान करते हुए नमन करना चाहिए—

ॐ राम भक्ताय नमः।
ॐ कपिराजाय नमः।
ॐ द्रोणाद्रिहारकाय नमः।
ॐ दक्षिणाशा भास्कराय-नमः।
ॐ महातेजसे नमः।
ॐ महाबलाय नमः।
ॐ मेरुपीठकार्चन-कारकाय नमः।
ॐ सर्व विघ्न-निवारकाय नमः।

इस प्रकार से पूजन में आठ सुपारी एक-एक करके प्रत्येक नमस्कार के साथ सिन्दूर में भिगो कर अपने सामने स्थापित करनी चाहिए।

हनुमान साधना के विभिन्न स्वरूप होते हुए भी मूल साधना मन्त्र एक ही है, और इस प्रकार विधि-विधान सहित पूजन करने के पश्चात् मन्त्र सिद्ध "मूंगा माला" से उसी स्थान पर बैठे-बैठे ग्यारह माला मन्त्र जप करना चाहिए।

हनुमान बीज मन्त्र

हौं ह्स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं हनुमते नमः ।।

यह बीज मन्त्र प्रबल शक्तियुक्त, द्वादश अक्षर मन्त्र है, जिसके प्रत्येक वर्ण में स्थित शक्ति तत्व है, इसमें इन्द्र, रुद्र, अग्नि, चन्द्र, सूर्य, शक्तिपुंज हनुमान तत्व विद्यमान है।

प्रत्येक माला मन्त्र जप के पश्चात् अपने दोनों हाथों में पुष्प लेकर, अपने सामने हनुमान यन्त्र तथा गुटिका पर अर्पित करने चाहिए, इस प्रकार ग्यारह माला मन्त्र जप सम्पन्न करना आवश्यक है।

मन्त्र जप के पश्चात् साधक हनुमान गुटिका को धारण कर सकता है, और यन्त्र को पूजा स्थान में ही रहने दें, किसी भी विशेष कार्य हेतु अथवा बाहर जाते समय हनुमान ध्यान कर बाहर निकलने से किसी प्रकार कष्ट संकट नहीं रहता।

विभिन्न कार्यों में, विभिन्न मन्त्र जप का विधान है, कुछ विशेष मन्त्र नीचे स्पष्ट किये जा रहे हैं—

१– शत्रु संकट निवारण प्रयोग—इस विशेष हनुमान साधना में पूजा विधान तो वही रहता है, निम्नलिखित मन्त्र की ५१ माला तीन मंगलवार तक नियमित रूप से जप करने से किसी भी प्रकार के शत्रु का भय समाप्त हो जाता है, और शत्रु शान्त होकर साधक के वश में हो जाता है—

मन्त्र

।। ॐ पूर्वकपिमुखाय पंचमुखहनुमते टं, टं, टं, टं सकल शत्रु संहारणाय स्वाहा ।।

२– बीमारी, संकट, ग्रह दोष निवारण हनुमान प्रयोग—इस विशेष प्रयोग को मंगलवार की अर्द्धरात्रि को सम्पन्न करना चाहिए, उस दिन साधक दिन भर उपवास रखें तथा रात्रि को ऊपर दिये गये पूर्ण विधान से यन्त्र तथा गुटिका स्थापित कर, अपने सामने एक साफ कागज पर बीमारी बाधा इत्यादि का विवरण लिख कर गुटिका के नीचे रखें, और फिर इस मन्त्र का जप जब तक पूर्ण ध्यान से सम्पन्न कर सकें, तब तक अवश्य सम्पन्न करें।

मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः, ॐ नमो भगवते महाबल पराक्रमाय भूत-प्रेत-पिशाच ब्रह्मराक्षस शाकिनी डाकिनी यक्षिणी पूतना मारी-महामारी-राक्षस-भैरव-वेताल ग्रहराक्षसादिकान् क्षणेन हन् हन् भंजय भंजय मारय मारय शिक्षय शिक्षय महामाहेश्वररुद्रावतार ॐ हुं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते हनुमदाख्याय रुद्राय सर्वदुष्टजनमुख स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ठं ठं ठं फट् स्वाहा ।।

इसके पश्चात् उस कागज को जला कर, भस्म एक पुड़िया में बांध कर घर से दूर फेंक दें, तो साधक को कुछ ही समय में प्रत्यक्ष परिणाम प्राप्त होता है।

वस्तुतः हनुमान साधना प्रत्येक ही साधक के लिए आवश्यक साधना है, जिसको सम्पन्न करने से कभी भी किसी प्रकार का विपरीत प्रभाव नहीं मिलता, अपितु लाभ ही है, आवश्यकता केवल विश्वास और श्रद्धा की है, और विशेष तो क्या कहा जाय—यदि साधक एक बार विधि-विधान सहित हनुमान सिद्धि प्राप्त कर, प्रति मंगलवार को केवल हनुमान चालीसा का ही पाठ सम्पन्न करें-तो उसके जीवन में रोग, भय, बाधाओं तथा शत्रुओं का प्रवेश हो ही नहीं सकता।

हनुमान साधना तो एक सिद्ध ब्रह्म कवच है जो कि साधक के चारों ओर एक रक्षा कवच बना देती है, और गुरु-भक्ति से साधक अपने सभी कार्यों को सरलतापूर्वक सम्पन्न करने में समर्थ रहता है।

हनुमान यन्त्र	१२०) रु०
हनुमान गुटिका	१०१) रु०
मूंगा माला	६०) रु०

✓

Ju ly 83

महावीर साधना क्यों ?

इतिहास पुरुष हनुमान को कौन नहीं जानता, बच्चा हो या वृद्ध, स्त्री हो या पुरुष इस नाम को सुनते ही सजीव और चेतन सा हो जाता है, उसकी आंखों के सामने अपनी पूंछ से रावण की सोने की लंका में आग लगा देने वाली एक वानर आकृति उभर आती हैं, इस नाम के साथ जुड़ा हुआ है भगवान राम का नाम, बाल्मीकि रामायण हो अथवा तुलसी की रामचरितमानस, दोनों ही ऐतिहासिक ग्रन्थ हनुमान के पराक्रमी बलशाली व्यक्तित्व को स्वीकार करते है; राम के सेवक और अंकिचन दास के रूप में स्वयं को प्रतिष्ठित कर हनुमान ने अपने इष्ट को मां भगवती सीता सहित अपने हृदय में बसा कर जो अलौकिक कार्य अपने काल में कर दिखाये, आज भी वह अपने आप में एक उच्च आदर्श के रूप में अनुकरणीय एवं प्रेरणा के स्रोत रहे है, जन साधारण उनके प्रति नत है, वन्दना और अर्चना करता है इस सरल साधारण से अलौकिक भोले भाले व्यक्तित्व की जो सदा दंभ और कायरता से दूर रहा, अपने राम के लिये प्राण हथेली पर रखे हर पल साथ रहा, जो कार्य कोई न कर सका, संभव कर दिखाये, इसीलिए आज वह केवल वीर ही नहीं महावीर कहलाये, भगवान राम से भी अधिक आज उनके मन्दिर है, घर घर में उनकी पूजा विशेष मान्यता के साथ है. आओ तो देखे इनकी साधना क्यों और किस लिए आवश्यक है ?

शिव-पुत्र एवं शिवावतार

शास्त्रीय प्रमाण एवं पुराण में आई कथा के आधार पर स्पष्ट है कि हनुमान रामायण में आये मात्र एक वानर के पात्र के रूप में नहीं है वरन वह तो सही मायने में शिव से उत्पन्न मां अंजनी के पुत्र है जो शक्ति, पौरुष और असीम बल पराक्रम के प्रतीक है, उनके अंशीभूत होने के कारण ही वह शिव-अवतार के रूप में मान्य है, शौर्य एवं दुर्धर्ष शक्ति की पराकाष्ठा का वह निश्चय ही स्वयं में प्रतीक बन गये है, अन्याय एवं अत्याचार को निर्मूल करने के लिए अपने इष्ट के चरणों में सदा सौम्य बने, दास्य भाव से वह सदा अहर्निशि तत्पर रहे है।

सतयुग, द्वापर, त्रेता, कलियुग सभी कालों में महावीर शब्द का उल्लेख आया है, यदि वेदऋचा भी महावीर का यशोगान करती है, स्वयं भगवान कृष्ण महाभारत के युद्ध क्षेत्र में अर्जुन के रथ पर महावीर की ध्वजा फहराते है, भगवान राम हार कर अन्त में भगवती सीता की खोज में महावीर को भेजकर कुशल क्षेम प्राप्त करते है और अन्त में इन्हीं की मदद से रावण को युद्ध में परास्त कर विजय श्री का वरण करते है तो निःसन्देह ही उनके चरित्र में कहीं न कहीं कोई न कोई विशिष्ट अलौकिकता रही ही होगी आज महावीर हनुमान नाम और चिन्तन हर असम्भव परिस्थिति पर विजय और साफल्यता का प्रतीक है।

ऐसा क्यों ? एक बिल्कुल नवीन चिन्तन-

कहा जाता है और ऐसी स्पष्ट आम मान्यता भी है कि महावीर हनुमान पूर्ण ब्रह्मचारी थे, हम भी इस बात

का समर्थन करते है लेकिन शाब्दिक अर्थवत्ता से हट कर शास्त्र सम्मत मान्यता को लेकर हम अपनी बात की पुष्टि करना चाहेंगे, शास्त्रों में ब्रह्मचारी शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए स्पष्ट किया गया है कि जो हर पल ब्रह्म में विचरण करे वह ब्रह्मचारी है मात्र कुंवारे रहने की स्थिति या विवाह न करके सन्तानोत्पत्ति न करने की स्थिति को ही ब्रह्मचारी नहीं कहा जाता है, इस रूप में महावीर हनुमान का व्यक्तित्व सौ टंच खरा उतरता है, वह निश्चय ही हर पल ब्रह्म में विचरण करते हुए अपने इष्ट से जुड़े हैं, दूसरी स्थिति को देखते हुए तो अंजनी पुत्र हनुमान, पिता थे पुत्र उत्पत्ति उन्होंने की और स्वीकारा, मकरध्वज उन्हीं का पुत्र कहलाया, फिर इसी मान्यता के आधार पर तो वे आजन्म ब्रह्मचारी नहीं रहे, यहां पर इस संकीर्ण चिन्तन से बाहर निकलकर हमें शास्त्र सम्मत उस विराट और व्यापक चिन्तन के परिवेश में ही हनुमान के व्यक्तित्व को देखना होगा तभी हम उन्हें सही अर्थों में ब्रह्मचारी की संज्ञा दे सकेंगे। उनके इसी दिव्य एवं ब्रह्म स्वरूप ने उन्हें महावीर की संज्ञा से विभूषित किया और इतिहास पुरुष बनाकर पराक्रम, ओज, बल, तेज, पौरुष का अनन्यतम स्वरूप प्रदान किया जिसके आगे विश्व सदा झुकता आया है झुकता रहेगा नमन के साथ।

दंभ और अहंकार रहित व्यक्तित्व

बहुत ही कम देखने सुनने में आता है कि जहां बल की पराकाष्ठा हो वहां अहं न पले लेकिन महावीर का स्वरूप स्वयं में विरल एवं पूर्ण अहं रहित व्यक्तित्व है जो सदा दास एवं सेवा भाव में निमग्न रहा, मात्र अपने इष्ट का चिन्तन और कल्याण ही जिसका जीवन बन गया और यही कारण है कि भगवान राम को भी ऐसे विशिष्ट ब्रह्म ज्ञानी से नीचे बैठकर ब्रह्म दीक्षा लेनी पड़ी, ब्रह्मत्व प्राप्ति में महावीर भगवान राम के मार्ग-दर्शक एवं सहयोगी रहे, हर विपत्ति की बेला में उन्होंने महावीर को अपना कुशल एवं विश्वसनीय सलाहकार माना, चाहे वह मां सीता की खोज का प्रसंग रहा हो, अथवा समुद्र पर सेतु निर्माण, लक्ष्मण को संजीवनी बूटी लाने का प्रसंग हो या वानर सेना एकत्रित कर रावण के साथ युद्ध कौशल, महावीर हनुमान सदा अपने इष्ट के लिए पूर्ण समर्पित रहे, ऐसे पराक्रमी दिव्य अहंकार रहित व्यक्तित्व की साधना निश्चय ही दिव्य और सिद्धि दायक है।

इतिहास पुरुष महावीर साधना सम्पन्न कर ही इतिहास पुरुष बन सके

चाहे हमारे ऋषि मुनि, रहे हो अथवा वीर योद्धा, महावीर साधना सम्पन्न कर उन्होंने अपने जीवन का उत्स प्राप्त किया, विश्वामित्र, वशिष्ठ, बाल्मीकि, गोरखनाथ, शंकराचार्य आदि ने स्वयं यह साधना सिद्ध कर अपने शिष्यों को सम्पन्न करवाई, बाल्मीकि ने लव को यह साधना सम्पन्न कराकर १२ वर्ष के लव को इतना पराक्रमी बना दिया कि राम के अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को बांध कर उसने और उसके भाई कुश ने हनुमान और स्वयं राम को बांध कर मां सीता के सामने सशरीर उपस्थित कर दिया, रावण ने मरते क्षणों में अपनी गर्भवती पत्नि मंदोदरी को निर्देश दिया कि यदि वंश परम्परा चलाना चाहती हो तो पुत्रोत्पत्ति से पूर्व महावीर साधना सम्पन्न करना आवश्यक है और मंदोदरी ने यही साधना सम्पन्न कर रावण का कुल दीप जलाये रखा महाभारत युद्ध में स्वयं पांचों पांडव भय क्रान्त जब भगवान कृष्ण के समक्ष मदद के लिए उपस्थित हुए तो स्वयं कृष्ण ने अर्जुन को सम्बोधित करते हुए सभी पांचों पांडवों को महावीर साधना सम्पन्न करने की ही सलाह दी और इस साधना को सम्पन्न करने पर ही पांडव युद्ध में विजयश्री प्राप्त कर सके, अतुलित बल प्राप्त करके इस साधना से असम्भव से असम्भव कार्य को भी सहज रूप से सम्पन्न किया जा सकता है।

महावीर सिद्धि एवं महावीर प्रत्यक्ष दर्शन सिद्धि

महावीर साधना मांत्रिक एवं तांत्रोक्त दोनों ही प्रकार से सिद्ध की जाती है, सर्व मनो कामना पूर्ति एवं सर्व कार्य सिद्ध महावीर सिद्धि साधना सम्पन्न करने पर स्वत: हो जाती है जिसके लिए सियार सिंगी, बजरंग बाण, हकीक पत्थर, गोमती चक्र आदि मन्त्र सिद्ध कुछ दुर्लभ सामग्री अलग अलग विशिष्ट कार्य के लिए प्रयोग में लाना आवश्यक है साथ ही साथ उनके सामने कुछ विशिष्ट मन्त्रों का जाप निर्धारित संख्या में करना चाहिये, इस साधना की अग्र लिखित उपलब्धियां साधकों को प्राप्त हुई है।

१- शत्रु को अनुकूल बनाना अथवा परास्त कर देना।

२- मुकदमे या लड़ाई झगड़े में पूर्ण विजय प्राप्त करना।

३- असाध्य रोग एवं राज्य भय से मुक्ति पाना।

४- समस्त प्रकार की बाधाओं, अड़चनों और कठिनाइयों को दूर करना।

५- भगवान महावीर को सिद्ध कर के भूत-प्रेत योनियों पर नियन्त्रण प्राप्त करना।

६- सम्मोहन, वशीकरण, मारण प्रयोगों में सफलता प्राप्त करना एवं स्वयं भगवान महावीर के प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त कर जीवन भर उनसे वरदान प्राप्त करना।

बजरंग यंत्र पर महावीर प्रत्यक्ष सिद्धि सम्पन्न कर साधक एक दिव्य एवं अलौकिक व्यक्तित्व प्राप्त कर लेता है। उसका पूरा जीवन वरदान मयी बन जाता है, महावीर स्वयं साक्षात् उसके साथ रहते हैं, हर विपत्ति एवं कठिनाई में उसकी पूरी सहायता करते हैं, जीवन में ऐसा साधक किसी के सामने झुकना एवं गिड़गिड़ाना नहीं जानता सदा बुलन्द संकल्पों के साथ ही जीना उसका कल्याणमयी जीवन लक्ष्य बन जाता है, आइए ! ऐसी ही दिव्य साधना का अवसर प्रदान कर रही है, मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका। समझ कर और सफलता प्राप्त कर लोगों को दिखाये कि साधना वास्तव में ही जीवन का परम् और चरम् आनन्द है जिसे ब्रह्मानन्द भी कहा जा सकता है।

हां ! इस मन्त्र से महावीर के प्रत्यक्ष दर्शन होते ही है।

मन्त्र

"ह्लौं ह्लौं हुं फट्"

सिद्ध बजरंग यन्त्र सामने स्थापित कर मंगलवार अर्द्ध रात्रि को लाल लंगोट अथवा लाल वस्त्र पहन कर लाल आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठ जायें और नित्य ७ दिन तक मूंगे की माला से १०१ माला मन्त्र जाप वीरासन में सम्पन्न करें, तेल का अखण्ड दीपक लगायें गुड़ आटे को घी में भून कर लड्डू बनायें और उसका भोग लगाकर वही प्रसाद नित्य मन्त्र जाप के बाद स्वयं पूरा खा ले, और वहीं आसन पर सो जाये, अन्य किसी को भी पूजा कक्ष में प्रवेश न करने दें, मंगलवार से मंगलवार ८ दिन की साधना है, साधना के बाद २ बटुक को भोजन करा कर उचित दान दक्षिणा दें, ऐसा करने पर महावीर बजरंग बली के साक्षात दर्शन होते ही है सर्वमनोकामना पूर्ति के लिए यह अचूक प्रयोग है।

हनुमान साधना का
एक विशिष्ट प्रयोग

हनुमान शक्तिशाली, पराक्रमी, संकटों का नाश करने वाले और दुःखों को दूर करने वाले महावीर हैं, इनके नाम का स्मरण ही अपने आप में साहस और शक्ति प्रदान करने वाला है, हिमालय की तलहटी में स्थित सिद्ध **"योगीराज बालास्वामी"** से जो "हनुमान प्रत्यक्ष साधना सिद्धि प्रयोग" प्राप्त हुआ, उसे मैं स्पष्ट कर रहा हूं ।

मंगलवार के दिन साधक पवित्र हो कर लाल धोती पहिन कर और शरीर पर लाल धोती ओढ़ कर लाल रंग के आसन पर बैठें, और अपना मुंह दक्षिण की ओर करें ।

फिर सामने **रक्त चन्दन से निर्मित हनुमानजी की मूर्ति** को किसी पात्र में स्थापित करें, और उसकी प्राणप्रतिष्ठा करें, इसके बाद इस मूर्ति की पूजा करें, और मूर्ति पर सिन्दूर का तिलक लगावें, और सारे शरीर पर भी सिन्दूर मल दें, फिर गुड़, घी और आटे से बनी हुई रोटी को मिला कर लड्डू बना कर उसका भोग लगावें ।

साधक को चाहिए कि इसके बाद नीचे लिखे मन्त्र का मात्र १५०० बार उच्चारण कर वहीं भूमि पर पूजा स्थान में ही सो जाय, यह साधना रात्रिकालीन साधना है, अतः रात को ही इस मन्त्र का जप करें ।

मंत्र

।। ॐ नमो हनुमन्ताय आवेशय आवेशय स्वाहा ।।

इस प्रकार नित्य करें, जो नैवेद्य हनुमान जी के सामने रखा है, वह आठों पहर रखा रहे, और दूसरी रात्रि को वह नैवेद्य किसी दूसरे पात्र में रख दें, और नया नैवेद्य हनुमान जी को चढ़ा दें, इस प्रकार मात्र ११ दिन करें ।

यह निश्चित है, कि ११ वें दिन हनुमान जी साधक को प्रत्यक्ष दर्शन देंगे, और उसके प्रश्नों का उत्तर देंगे, अथवा जिस निमित्त यह प्रयोग किया गया है, वह कार्य निश्चय ही सम्पन्न होगा ।

जब प्रयोग पूरा हो जाय तो वह एकत्र किया हुआ नैवेद्य या तो किसी गरीब व्यक्ति को दे दें, अथवा दक्षिण दिशा में घर के बाहर भूमि खोद कर उसे गाड़ दें ।

इस प्रयोग से मैंने बड़ी विपत्तियों को अपने ऊपर से टाला है, भयंकर रोगों से छुटकारा मिला है, और सजा पाये हुए लोगों को उससे मुक्त कराया है, वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आप में अचूक और अद्वितीय है । ●

feb - 91

: हनुमान जयन्ती—(३०-३-९१)

बल, वीर्य, पराक्रम साधना

हनुमत् साधना प्रयोग

भक्ति, साधना, शक्ति के साथ-साथ त्याग, तपस्या तथा बल का जो अद्भुत स्वरूप हनुमान में है, वह किसी अन्य देवता में नहीं मिलता और यही बात हनुमान साधना पर भी लागू होती है, साधक विशेष रीति से साधना नहीं कर सकता हो, संस्कृत का उसे गहन ज्ञान न हो, यज्ञ आदि अनुष्ठान नहीं कर सकता हो, तो उसे हनुमान साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

मंगलवार का दिन हनुमान जी का दिन ही माना जाता है, इस दिन साधक चाहे एक माला ही मंत्र जप क्यों न करें हनुमान ध्यान अवश्य करना चाहिए, जीवन में बल, वीर्य, बुद्धि, तेज, शक्ति के अतिरिक्त और है ही क्या, और हनुमान तो इन सब के ही तो देव हैं।

हनुमान जयन्ती के दिन प्रातः साधक स्नान कर लाल रंग की धोती पहिने, उससे पूर्व रात्रि का ब्रह्मचर्य पालन करे, अपने सामने हनुमान प्रतिमा एक ताम्र पात्र में स्थापित करे, पूरी प्रतिमा को तेल मिले हुए सिन्दूर से रंग कर स्वयं के भी सिन्दूर का तिलक लगाये, अब हनुमान प्रतिमा के सामने "८ बजरंग विग्रह" स्थापित करे, ये आठ बजरंग विग्रह-गेहूं की आठ ढेरियां बना कर उस पर स्थापित कर आठों का क्रमशः पूजन करे।—

ॐ रामभक्ताय नमः। ॐ महातेजसे नमः। ॐ कपिराजाय नमः। ॐ महाबलाय नमः। ॐ द्रोणाद्रिहाराय नमः, ॐ रुद्रावताराय नमः, ॐ दक्षिणाशाभास्कराय नमः, ॐ सर्वविघ्ननिवारकाय नमः।

अब लाल डोरे से बांध कर "हनुमान कंकण" हनुमान मूर्ति के आगे स्थापित करें तथा उस पर लाल पुष्प, चंदन, तथा कपूर चढ़ाएं, प्रसाद स्वरूप गेहूं की मोटी रोटी पर गुड़ घी मिला कर एक थाली में अर्पित करें, तत्पश्चात् "मूंगा माला" से निम्न बीजमन्त्र का १२ माला जप करें, इसके बाद दो मंगलवार फिर यही प्रयोग करें।

बीज मन्त्र— ॥ ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा ॥

प्रत्येक साधना दिवस को मन्त्र जप के पश्चात् हनुमान कंकण को दायीं भुजा में धारण कर हनुमान चालीसा पाठ कर, आरती सम्पन्न करें। चढ़ाया हुआ प्रसाद स्वयं ग्रहण करें, आठों बजरंग विग्रह एक लाल कपड़े में बांध कर रख दें, किसी भी प्रकार की कामना, विशिष्ट इच्छा से संबंधित कार्य होने पर अपने सामने पूजा स्थान में सिन्दूर से लिख कर रखें तथा पूजा करें, निश्चित सफलता मिलती है

हनुमान साधना पवित्रता, सात्विकता, तथा पूर्ण भक्तिभाव से सम्पन्न करनी चाहिए, तामसी वस्तुएं अर्थात् मांस, मदिरा आदि न ग्रहण करें, तथा पूर्ण उत्साह, उमंग, श्रद्धा से कार्य सम्पन्न करें।

जब तक कोई बात अनुभव से सिद्ध नहीं हो जाती तब तक हृदय उसे स्वीकार नहीं करता, कभी संकट में, पीड़ा में, यात्रा में, रोग तथा शत्रु बाधा में हनुमान मंत्र जप करके तो देखिए, प्रत्यक्ष प्रमाण आपको प्राप्त हो जायेगा।

Nov. 88

समस्त कार्यों की सिद्धि के लिए

हनुमान चालीसा

अनुष्ठान प्रयोग

मैं बचपन से ही महाबली रामभक्त हनुमान का उपासक रहा हूं, और जीवन में जब भी कोई विपत्ति या परेशानी आई है मैंने श्रद्धा-पूर्वक श्री हनुमानजी को स्मरण कर हनुमान चालीसा का पाठ या उनका अनुष्ठान सम्पन्न किया है, और मुझे अनुष्ठान समाप्त होते होते अनुकूल फल प्राप्त हुआ है ।

१३.१२.८८ हनुमान दिवस है और समस्त साधकों के लिए यह एक दुर्लभ अवसर है इस दिन अवश्य ही श्री हनुमानजी से सम्बन्धित अनुष्ठान या प्रयोग सम्पन्न करे तो तुरन्त ही लाभ प्राप्त होता है ।

इसमें कोई दो राय नहीं कि हनुमान शक्ति के स्रोत और शीघ्र कार्य सिद्ध करने में पूर्ण सहायक है, इनका सहारा तो भगवान राम को भी विजय के लिए लेना पड़ा था, महाभारत युद्ध से पूर्व जब अर्जुन ने श्री कृष्ण को पूछा कि इस युद्ध में विजय के लिए क्या किया जाय, तो श्री कृष्ण ने अर्जुन को हनुमान साधना करने की सलाह दी थी, और अर्जुन ने हनुमान मन्त्र का जप कर अपने रथ की ध्वजा पर हनुमान को स्थापित कर विजय के लिए प्रस्थान किया और महाभारत जैसे युद्ध में पूर्ण विजय प्राप्त की ।

दुर्लभ अनुष्ठान

यह एक दिन का अनुष्ठान है, १३.१२.८८ की रात्रि को साधक स्नान कर लाल धोती पहिन कर लाल आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, और सामने दुर्लभ महावीर बजरंग यन्त्र स्थापित कर दे जो कि मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो, फिर इस यन्त्र की पूजा करें, और इस पर लाल पुष्प चढ़ावे, और फिर मूंगे की माला से १०१ माला मन्त्र जप एक ही रात्रि में सम्पन्न करें ।

मन्त्र समाप्त होने तक साधक अपने आसन से उठे नहीं, और मन्त्र जप से पूर्व हाथ में जल ले कर अपनी इच्छा प्रकट करे कि मैं अमुक कार्य के लिए यह अनुष्ठान सम्पन्न कर रहा हूं, फिर वह कार्य कितना ही कठिन हो; अवश्य ही सफलता दो चार दिन में ही प्राप्त हो जाती है ।

मैंने अनुष्ठान के माध्यम से शत्रुओं पर विजय, मुकदमे मे सफलता और दरिद्रता निवारण जैसे कठिन कार्य सम्पन्न किये हैं, जब भी कोई बीमारी या रोग अथवा घोर विपत्ति आई है, तो मैंने इस मन्त्र का सहारा लिया है और मुझे दूसरे दिन ही सफलता मिल गयी है, अकारण मृत्यु निवारण, रोग मुक्ति और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए तो यह अचूक उपाय है ।

साधक को मन्त्र जप से पूर्व हनुमान जी के चित्र के सामने गुड़ का भोग लगा देना चाहिए, और दूसरे दिन वह गुड़ गली के बालकों में प्रसाद के रूप में वितरण कर देना चाहिए, इसी मन्त्र और अनुष्ठान के द्वारा भगवान श्री कृष्ण ने हनुमान के साक्षात दर्शन किए थे, इसी अनुष्ठान के द्वारा अर्जुन महाभारत के युद्ध में विजय प्राप्त कर सका था, इसी अनुष्ठान के माध्यम से संत तुलसीदास को भगवान श्री राम के दर्शन हुए थे, और इसी अनुष्ठान के द्वारा योगिराज निर्भयानन्द जी ने पूरी पहाड़ी को ही अपने मूल स्थान से उठा कर नैनीताल के के पास रख दिया था ।

मूल मन्त्र

ओम् ह्रौं ह्स्फ्रौं स्फ्रौं हस्स्फ्रौं हुं ।

जैसे कि मैंने बताया है, एक ही रात में इस मन्त्र की १०१ माला मन्त्र जप हो जानी चाहिए, मन्त्र जप के समय हनुमानजी के सामने तेल का दीपक लगा रहना चाहिए और अपनी दृष्टि दुर्लभ महावीर बजरंग यन्त्र पर केन्द्रित करें; (मात्र १५०/रु० न्योछावर पर यह मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त महावीर बजरंग यन्त्र और महावीर चित्र सुरक्षित रूप से भेजने की व्यवस्था की जा सकती है, उत्तम कोटि की मूंगे की माला पर व्यय मात्र ६०/रु० आता है)

१३ दिसम्बर को तो यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए, यों साधक जीवन मे संकट आने पर किसी भी मंगलवार की रात्रि को यह प्रयोग सम्पन्न कर सकता है, यह प्रयोग पुरुष या स्त्री कोई भी अपने घर मे या हनुमानजी के मन्दिर में कर सकते हैं ।

हनुमान चालीसा प्रयोग

संत तुलसी दासजी ने हनुमान चालीसा की रचना की थी, मगर अनुभव में यह आया है, कि हनुमान चालीसा सही अर्थो में मन्त्र स्वरूप बन गया है, यदि साधक नित्य ११ बार हनुमान चालीसा का पाठ करता है, तो उसके दिन भर के सभी कार्य निर्विघ्नता पूर्वक, सफल होते रहते हैं ।

इसके अलावा कुछ विशेष कार्यो की सिद्धि के लिए हनुमान चालीसा में विशेष चौपाइयों का सम्पुट दे कर पाठ करने का विधान भी है, पहले सम्पुट बोले फिर हनुमान चालीसा की चौपाई बोले और फिर सम्पुट का उच्चारण करे, इस प्रकार सम्पुट पाठ किया जाता है, केवल २१ बार सम्पुट पाठ करने से तुरन्त कार्य सिद्धि होती है ।

नीचे मैं विशेष कार्य की पूर्णता के लिए विशेष सम्पुट पाठ की चौपाइयां प्रस्तुत कर रहा हूं –

सम्पुट पाठ की चौपाइयां--

१. बल, बुद्धि एवं परीक्षा में पास होने के लिए

बुद्धि-हीन तनु जानि के सुमिरौ पवन-कुमार ।
बल, बुद्धि, विद्या देहु मोहिं हरउ कलेश-विकार ॥

२. कठिन रोग से मुक्ति पाने के लिए

राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ।
लाय सजीवन लखन जियाये । श्री रघुवीर हरसि उर लाये ।।

या

नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरन्तर हनुमत बीरा ।।

३. किसी भी प्रकार के संकट से मुक्ति पाने के लिए

संकट ते हनुमान छुड़ावे मन क्रम वचन ध्यान जो लावे ।।

या

संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमरे हनुमत बल बीरा ।।

४. मनोवांछित कार्य की सिद्धि के लिए

सब पर राम तपस्वी राजा । तिनके काज सकल तुम साजा ।।
और मनोरथ जो कोई लावे । तासु अमित जीवन फल पावे ।।

५. भूत,प्रेत बाधा दूर करने के लिए

भूत पिशाच निकट नहीं आवे । महाबीर जब नाम सुनावे ।।

६. कठिन कार्य की सिद्धि के लिए

दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।।

७. समस्त प्रकार से परिवार की रक्षा और सुख के लिए

सब सुख लहै तुम्हारो सरना । तुम रक्षक काहू को डरना ।।

पाठकों की सुविधा के लिए मैं नीचे की पंक्तियों में हनुमान चालीसा का पाठ दे रहा हूं, जैसा कि मैंने बताया कि सम्पुट दे कर केवल २१ बार हनुमान चालीसा का पाठ करने से मनोरथ सिद्ध होते हैं, यह पाठ भी बजरंग यन्त्र और और हनुमान चित्र के सामने ही होना चाहिए ।

घोर संकट, बाधा, तकलीफ या बीमारी के लिए हनुमान चालीसा के साथ संकट मोचन का भी पाठ करना चाहिए ।

हनुमान चालीसा

श्री गुरू चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि ।
बरणौं रघुवर बिमल जस, जो दायक फल चारि ।।

बुद्धि - हीन तनु जानि के, सुमिरौं पवन - कुमार ।
बल, बुद्धि, विद्या देहु मोहि, हरहु कलेश बिकार ।।

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर । जय कपीस तिहुं लोक उजागर ।।
राम दूत अतुलित बल धामा । अंजनि पुत्र - पवन-सुत नामा ।।

महावीर विक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुण्डल कुंचन केशा ॥
हाथ बज्र औ ध्वजा विराजै । कांधे मूंज जनेऊ साजै ॥
संकर सुवन केसरी नन्दन । तेज प्रताप महा जग वंदन ॥
विद्यावान गुणी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लषन सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा । बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर संहारे । रामचन्द्र के काज संवारे ॥
लाय संजीवन लषन जियाये । श्री रघुवीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति किन्हीं बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो यश गावैं । अस कहि श्रीपति कठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥
यम कुबेर दिगपाल जहां ते । कवि कोबिद कहि सके कहाँ ते ।
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना । लंकेश्वर भए सब जग जाना ॥
युग सहस्र योजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही । जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुलारे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रक्षक काहू को डरना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हाँक ते काँपै ॥
भूत पिशाच निकट नहिं आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ॥
नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥
संकट ते हनुमान छुड़ावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।
सब पर राम तपस्वी राजा । तिनके काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोई लावै । तासु अमित जीवन फल पावै ॥
चारों युग परताप तुम्हारा । है पर सिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु सन्त के तुम रखवारे । असुर निकन्दन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन्ह जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥
तुम्हरे भजन राम को भावै । जन्म जन्म के दुख बिसरावै ॥
अन्त काल रघुवर पुर जाई । जहां जन्म हरि - भक्त कहाई ॥

हथेली पर रख कर उनकी पूजा अर्चना, साधना सम्पन्न करते थे। वास्तव में हो हनुमान साधना में वे अपने आप में अद्वितीय आचार्य और सिद्ध योगी थे।

उन्होंने एक बार बताया था कि जो अपने जीवन में हनुमान साधना सम्पन्न कर लेता है, उसे अन्य किसी भी प्रकार की साधना करने की जरूरत नहीं होती, क्योंकि इस एक साधना से ही अष्ट सिद्धियां प्राप्त होती है. उनके अनुसार इस साधना को सम्पन्न करने से व्यक्ति में अतुलनीय बल, साहस और पराक्रम आ जाता है, उसके शरीर के समस्त रोग समाप्त हो जाते है और उसे वृद्धावस्था व्याप्त नहीं होती। मानसिक रूप में वह अत्यन्त प्रबल, तेजस्वी और पराक्रमी होता है। ऐसे साधक की आखों में एक विशेष प्रकार की लपक पैदा हो जाती है जो सामने वाले व्यक्ति को हतप्रभ और निस्तेज बना देती है, भगवान महावीर हर क्षण ऐसे व्यक्ति के साथ रहते है और आने वाली प्रत्येक बाधा, अड़चन और समस्या को समाप्त कर देते है। शत्रुओं पर तो वह साधक हावी रहता है, और जीवन में उसे किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।

लगभग एक साल बाद मेरे अनुरोध पर उन्होंने मुझे अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ श्री महावीर साधना का रहस्य समझाया था और बताया था कि संसार में अन्य साधनाएं तो फिर भी इधर उधर से प्राप्त हो सकती है, परन्तु यह साधना तो अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ है। इस एक साधना से ही जीवन के समस्त मनोरथ पूर्ण हो जाते है।

उन्होंने इस साधना के रहस्य को समझाते हुए कहा था कि यह साधना चैत्र शुक्ल चतुर्दशी अर्थात् हनुमान जयन्ती के अवसर पर हो सम्पन्न की जाती है, और वर्ष में केवल एक ही दिन साधक को प्राप्त होता है जब वह इस आश्चर्यजनक साधना को सम्पन्न कर सकता है। इस वर्ष हनुमान जयन्ती २०-४-८६ को आ रही हैं।

श्री रामशरणदास जी ने इस साधना के मर्म को समझाते हुए कहा था कि इसे कोई भी साधक सम्पन्न कर सकता है ऐसा कोई भेद नहीं है कि इसे स्त्री या बालिका नहीं कर सकती। इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है गृहस्थ, योगी, यति सन्यासी पुरुष या स्त्री इस साधना को सम्पन्न कर जीवन की आश्चर्यजनक उपलब्धियों को प्राप्त कर सकता है। यह केवल एक दिन की साधना है।

साधना रहस्य

इस साधना की सिद्धि प्राप्त करने के लिए तेल का दीपक शहद, दही गाय का दूध, गुड़, तिल, मूंग, राई, आदि सामग्री की आवश्यकता होती है।

इस दिन रात्रि को लगभग ९ बजे के आसपास साधक को चाहिए कि वह स्नान कर लाल धोती धारण कर ले, यदि धोती के नीचे अन्तरंग वस्त्र धारण करना चाहे तो वह भी लाल रंग का ही होना चाहिए, सामने एक हाथ लम्बा और एक हाथ चौड़ा लाल वस्त्र किसी लकड़ी के बाजोट या तख्ते पर बिछा दे और साधक स्वयं दक्षिण की ओर मुंह कर बैठे।

लाल वस्त्र के बीचो बीच चने के दाल की ढेरी बनावे और उस पर तांबे का छोटा सा पात्र रख दे। इस पात्र के मध्य में सिन्दूर से (सिन्दूर बाजार में मिलता है और इसे तेल में मिलाकर स्याही की तरह लेप बना कर प्रयोग में लेना चाहिए) बिन्दी लगावे और उस पर "तांत्रिक नारियल" स्थापित कर दे। यह नारियल लघु आकार का मगर आश्चर्यजनक सिद्धिदायक है। सौभाग्यशाली व्यक्ति के घर में ही इस प्रकार का तांत्रिक नारियल होता है। इस नारियल को स्थापित कर उसके ऊपर सिन्दूर की पांच बिन्दियां लगावे और फिर इस तांबे के पात्र के सामने ही दूसरा पात्र रखें और इस तांबे के पात्र में पंच महावीर बीज सिन्दूर से अंकित करे। पंच महावीर बीज में हनुमान के पांचों बीजों का अंकन किया जाता है। ये पांच बीज हैं-

ह्रौं हस्फ्रौं ष्ट्रां हस्हस्फ्रौं ह्रौं

इसके बाद यदि साधक चाहे तो, पहले से ही मूंगा रत्न पर अंकित हनुमान चित्र को प्राप्त कर ले, या मूंगा रत्न खरीद कर किसी मंगलवार के दिन उस पर हनुमान की मूर्ति का अंकन करवा ले। इस हनुमान विग्रह को पंच मुखी हनुमान विग्रह कहा जाता है और इसे इस पात्र में जो पांच बीज सिन्दूर से लिखे हुए हैं वहा पर स्थापित कर दे और फिर इसके सामने गुड़ और घी का भोग लगावे।

साधक को चाहिए कि वह पहले से ही १०८ लाल पुष्प मंगवा कर रखे, और फिर जो तांत्रिक नारियल स्थापित हुआ है, उस पर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए १०८ पुष्प चढावे। एक मन्त्र बोल कर एक पुष्प चढ़ावे, इसके बाद निम्न लिखित मंत्र का १०८ बार उच्चारण कर १०८ पुष्पों को समर्पित करे।

इसके बाद साधक स्वयं वही पर बैठे बैठे सुई के द्वारा लाल धागे में उन १०८ पुष्पों को पिरो कर गले में धारण कर ले।

मूल मंत्र

ॐ हुं हुं हसौं हस्फ्रौं हुं हुं हनुमते नमः

इसके बाद साधक ने जो तांत्रिक नारियल स्थापित किया है, उस तांबे के पात्र के चारों और आटे के पांच छोटे-छोटे दीपक बना कर उसमें रूई की बाती तेल में भिगो कर रखे और उन्हें जला दें। जब तेल खत्म हो तो उसमें थोड़ा थोड़ा कर के डालता रहे, और उपरोक्त मूल मंत्र का जप मूंगे की माला से सम्पन्न करे। यह मूंगे की माला साधक को पहले से ही लाकर रखनी चाहिए। इस बात का ध्यान रहे कि इससे पहले इस मूंगे की माला का अन्य किसी साधना में प्रयोग नहीं किया हुआ हो।

साधक को लाल आसन बिछा कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर तांत्रिक नारियल पर दृष्टि रखते हुए, मूंगा माला से ११ माला मंत्र जप करना चाहिए।

जब ११ माला पूरी हो जाय तब साधक उन पांच आटे से बने हुए दीपकों की पूजा करें, ये सभी महावीर के प्रतीक है, और देव असुर, सिद्धों से पूजित है। इनकी पूजा जल से और सिन्दूर से करे। इसके बाद तांत्रिक नारियल के पास ही तांबे के पात्र में उपरोक्त पंच महावीर बीज सीधे लिखे और उसी के नीचे सिन्दूर से उलटे भी लिखे, इसका तात्पर्य यह है कि पांचो अक्षर एक बार सीधे लिखे जायेंगे, और उसी के ठीक नीचे ये पांचों अक्षर बिल्कुल उल्टे लिखे जायेंगे ऐसा लिखना जरूरी है, यह लेखन सिन्दूर से होना चाहिए।

इसके बाद वही पर बैठे बैठे तांबे के छोटे से पात्र में (ऐसे ताम्रकुण्ड बाजार में मिलते है, यदि नहीं हो तो किसी तांबे के पात्र में छोटी छोटी लकड़ियों को जलाकर आहुतियां दी जा सकती है) अग्नि स्थापित कर घी, गुड़ तेल, मूंग चने की दाल तिल और राई को परस्पर मिला कर उनकी आहुतियां दी जानी चाहिए, इसमें केवल २१ आहुतियां उपरोक्त मूल मंत्र का उच्चारण करते हुए दी जाती है। इक्कीसवी आहुति देते समय उस यज्ञ ज्वाला में पूरा ध्यान रखें, क्योंकि इस आहुती को देते समय यज्ञ ज्वाला में ही महावीर के साक्षात दर्शन हो जाते है।

इस प्रकार आहुतियां देने के बाद साधक उस रात्रि को भूमि शयन करे, सुबह उठ कर उस तांत्रिक नारियल को गोपनीय स्थान पर घर में ही रख दें, और यदि मूंगा रत्न पर हनुमान विग्रह अंकित किया हुआ हो, तो उस अंगूठी में जड़वा कर हाथ की अंगुली में धारण करले या लाकिट में जड़वा कर गले में पहन ले, जो भोग लगाया हुआ है उसे छोटे छोटे बालकों में बांट दे।

दूसरे दिन प्रातः काल पांच बालकों को भोजन कराने का विधान है या तो उन्हें घर में बुला कर भोजन करा दें या किसी स्कूल में लड्डू बांट दे अथवा अनाथालय में जाकर बालकों को भोजन कराया जा सकता है।

(शेष पृष्ठ २० पर)

March, 90

हनुमान जयन्ती : ९-४-९०

दुःख बाधा पीड़ा सबै
हनुमत से कट जाय

कलियुग में हनुमान की साधना समस्त बाधाओं कष्टों और अड़चनों को तुरन्त मिटाने में पूर्णतः सहायक है। मुकदमे में सफलता और शत्रुओं का नाश करने में तो हनुमान का नाम और हनुमान की साधना अद्वितीय है।

और इस हनुमान जयन्ती पर हम अपने समस्त साधकों को एक दुर्लभ प्रयोग दे रहे हैं, आप स्वयं इसे आजमा कर देख लीजिए कि इस कलियुग में यह प्रयोग कितना अचूक और तुरन्त फल देने वाला है।

मैं अपने जीवन में राम सेवक प्रभु हनुमान का साधक रहा हूं मैने अपने जीवन में अन्य किसी भी साधना को न तो सीखा और न ही स्वीकार किया, परन्तु मैने यह अनुभव किया है कि इस साधना से, जीवन के सभी पाप और कष्ट पल भर में ही समाप्त हो जाते हैं।

दिखने में यह प्रयोग अत्यन्त सरल है, परन्तु इसका प्रभाव अपने आप में अचूक और अद्वितीय है, मेरे पिताजी भी हनुमान भक्त थे, और मेरे मन पर बचपन से ही हनुमान जी की साधना का प्रभाव पड़ता रहा, मेरे पिताजी को उत्तर काशी में एक उच्चकोटि के योगी मिले थे, और उन्होंने एक अत्यन्त गोपनीय प्रयोग मेरे पिताजी को समझाया था।

मुझे अच्छी तरह से याद है, कि बचपन में हम अत्यन्त गरीब थे, और पिताजी पर कई कारणों से कर्जा चढ़ गया था, यही नहीं, अपितु आस पास कई नये शत्रु पैदा हो गये थे, और लगभग बीस से ज्यादा मुकदमें मेरे पिताजी पर चल रहे थे, इन सब से मेरे पिताजी अत्यन्त दुखी और परेशान थे।

उन्हीं दिनों हम पूरे परिवार के साथ बद्रीनाथ के दर्शन करने के लिए रवाना हुए, उत्तर काशी में हम लोगों ने एक दिन का विश्राम लिया, और वहीं इन सन्यासी से भेंट हो गई जिन्होंने मेरे पिताजी को देख कर ही सारी बातें समझ ली थी, कि उन्हें क्या कष्ट है।

साथ ही साथ उन्होंने हनुमान साधना से सम्बन्धित एक महत्वपूर्ण प्रयोग भी बताया था, जिसके सम्पन्न करने पर हम कर्जे से मुक्ति पा सके, जो शत्रु थे, वे मित्रवत व्यवहार करने लगे, और यह एक चमत्कार ही हुआ, कि छः महीने के भीतर भीतर विरोधियों ने मेरे पिताजी के ऊपर से सारे मुकदमे हटा लिये।

इसके बाद का जीवन हमारा सुखी और सफल रहा और हमारे अपने जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहा, यही नहीं अपितु मैने अपने जीवन में इसी प्रयोग को सम्पन्न किया और आज तक करता आ रहा हूं, इसके फलस्वरूप मैं अपने जीवन में सभी दृष्टियों से सुखी सफल, सम्पन्न और मधुरता युक्त पारिवारिक जीवन व्यतीत कर रहा हूं।

हनुमान जयन्ती के अवसर पर मैं अपने पिता जी के द्वारा बताये हुए उस गोपनीय रहस्य को पाठकों के सामने स्पष्ट कर रहा हूं, और मुझे विश्वास है कि इससे जहां मैं अपने जीवन में सभी दृष्टियों से लाभान्वित हुआ हूं, अवश्य ही आपको भी इस प्रयोग से पूरी पूरी सफलता मिलेगी।

मेरे अनुभव में यह आया है कि कलियुग में महाकाली और श्री हनुमान दोनों ही शक्ति स्वरूप हैं, और इनसे संबन्धित साधना करने पर तुरन्त और अचूक फल प्राप्त होता है। कई बार तो अनुभव में आया है कि प्रयोग समाप्त होते होते ही अनुकूल फल प्राप्त हो जाता है।

इस प्रयोग को सम्पन्न करने से छः प्रभाव और परिणाम तो तुरन्त ही प्राप्त होते हैं क्योंकि इन प्रभावों को मैंने हर बार अनुभव किया है।

१ - इस प्रयोग को सम्पन्न करने से कठोर शत्रु भी शान्त हो जाते हैं या समाप्त हो जाते हैं अथवा उनके मन की शत्रुता समाप्त हो जाती है।

२ - यदि राज्य बाधा हो या राज्य से संबंधित कोई विपत्ति मंडरा रही हो अथवा आप किसी विपत्ति या परेशानी में घिर गये हो तो इस प्रयोग से विपत्ति के बादल छंट जाते हैं और अनुकूल परिस्थितियां बन जाती है।

३ - इस प्रयोग से मन का भय दूर हो जाता है, और साधक तथा उसका परिवार तनाव मुक्त जीवन व्यतीत करने लगता है।

४ - इस प्रयोग से सभी प्रकार का कर्जा तुरन्त समाप्त हो जाता है, और चारो तरफ से आर्थिक उन्नति होने लगती है।

५ - इस प्रयोग से स्वयं की या परिवार की बीमारी निश्चय ही समाप्त होती है यदि कोई व्यक्ति बीमार हो, और उसके सिरहाने बैठ कर कभी भी इस प्रयोग को सम्पन्न किया जाय तो निश्चय ही अनुकूल परिणाम अनुभव होने लगते हैं, इससे अकाल मृत्यु का भय समाप्त हो जाता है, और बच्चों की बीमारी या मृत्यु होने की संभावना नहीं रहती।

६ - यह प्रयोग सभी दृष्टियों से उन्नतिदायक एवं सफलता दायक है, यह प्रयोग करने से पूर्व साधक हाथ में जल लेकर जो इच्छा प्रगट करता है, उसका तुरन्त एवं अनुकूल परिणाम साधना समाप्त होते होते अनुभव होने लगता है।

वास्तव में ही यह प्रयोग कलियुग में तो चमत्कारिक प्रयोग कहा गया है, और साधकों को चाहिए कि वे वर्तमान की बाधाओं को तो दूर करे ही, आने वाली बाधाओं को या संभावित परेशानियों को भी इस प्रयोग से दूर कर सकते हैं।

साधना समय

९-४-९० को हनुमान जयन्ती है, अतः इस रात्रि को यह साधना सम्पन्न की जा सकती है, अथवा इस हनुमान जयन्ती पर यह प्रयोग प्राप्त न हो या कोई अन्य कारण हो तो किसी भी मंगलवार या शनिवार की रात्रि को यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है।

साधना सामग्री

इसमें साधक लाल धोती पहिन कर लाल आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठे, सामने यदि हनुमान जी का फ्रेम मढ़ा हुआ चित्र हो तो स्थापित कर दें, तथा पूजा में जल पात्र, सिन्दूर और लाल पुष्प रखें।

इसके अलावा सिद्ध बजरंग यंत्र और मूंगे की माला की अनिवार्यता भी इस साधना में आवश्यक है, जिसकी वजह से यह प्रयोग पूर्णतः सिद्ध होता है।

साधना प्रयोग

साधक इस दिन एक समय भोजन करे, या निराहार रहे रात्रि को साधक आसन पर बैठ कर तांबे के पात्र में **सिद्ध बजरंग यंत्र** को स्थापित कर दें, उन स्वामी जी ने मेरे पिताजी को विशेष विधि से बजरंग यंत्र सिद्ध करने की विधि बताई थी, मैं पत्रिका सदस्यों के लिए श्रेष्ठ पण्डितों से उसी विधि से **बजरंग यंत्र** सिद्ध करवा कर भेज रहा हूं जिससे कि ज्यादा से ज्यादा साधकों को इसका लाभ मिल सके।

इस बजरंग यंत्र को तांबे की थाली या पात्र में रख दें, और उस पर सिन्दूर का तिलक करें, इसके बाद साधक स्वयं अपने ललाट पर सिन्दूर का तिलक करें और सामने रखे हुए हनुमान जी के चित्र की संक्षिप्त पूजा करें। संक्षिप्त पूजा का तात्पर्य जल से धो कर पोंछ कर तिलक करें और यदि संभव हो तो उन्हें लाल पुष्पों की माला पहिनावें।

इसके बाद तांबे के पात्र में रखे हुए यंत्र को जल से धोवें और फिर उसे पोंछकर तांबे के पात्र को साफ कर मध्य में पुनः यंत्र को रख दें और उस पर सिन्दूर का तिलक करें, फिर उस यंत्र के सामने एक लाल पुष्प चढ़ायें, यदि लाल पुष्प न हो तो अन्य किसी भी प्रकार के पुष्प का प्रयोग किया जा सकता है।

इसके बाद हाथ में जल ले कर संकल्प करें, कि मैं अमुक गोत्र तथा अमुक नाम का साधक अपनी समस्त बाधाओं, कष्टों और विपत्तियों को समाप्त करने तथा शत्रुओं का नाश करने के लिए यह प्रयोग आज की रात्रि को सम्पन्न कर रहा हूं, यदि साधक किसी विशेष इच्छा को ले कर यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हो तो उस इच्छा को भी इस यंत्र के सामने व्यक्त कर दें।

बजरंग सिद्ध पाठ

इसके बाद साधक आगे दिया हुआ "संकट मोचन हनुमान अष्टक" के ५१ पाठ इसी रात्रि को संपन्न करें।

यह हनुमान अष्टक अपने आप में अचूक और अद्वितीय है, जब गोस्वामी तुलसीदास जी को भयंकर रोग हो गया था, और सारे शरीर में पीड़ा व्याप्त हो गई थी, तब उन्होंने इसी प्रयोग से उस रोग को समाप्त किया था, यही नहीं अपितु इस प्रयोग से तुलसीदास जी के सामने स्वयं हनुमान जी प्रत्यक्ष प्रकट हुए थे, और उनकी मदद से गोस्वामी तुलसीदास जी को भगवान श्रीराम के दर्शन प्राप्त हुए थे।

जब यह पाठ समाप्त हो जाय, तब किसी पात्र में अग्नि जला कर निम्न मन्त्र की १०८ आहुतियां दें, प्रत्येक आहुति में घृत और **मूंगे की माला का एक मनका** प्रयोग में लें, अर्थात एक बार मन्त्र बोल कर अग्नि में चम्मच से थोड़ा सा घी और जो मूंगे की माला है, उसका एक मनका अग्नि में समर्पित करें, समर्पित करते समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करें –

मन्त्र

ॐ हं हनुमतयै नमः

जब यज्ञ पूरा हो जाय, तब "सिद्ध बजरंग यन्त्र" को गुड़ और घी से बने हुए लड्डू का भोग लगावें, और भोग लगाने के बाद वह लड्डू घर के बाहर सड़क पर रख दें।

उस यन्त्र को साधक चाहे तो धारण कर ले, अथवा पूजा स्थान में स्थापित कर दें, इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न होता है, आश्चर्य की बात यह है, कि यह प्रयोग सम्पन्न होते होते ही अनुकूल परिणाम प्राप्त होने लग जाता है, और निश्चय ही इस प्रयोग से उसकी सारी परेशानियां समाप्त हो जाती हैं।

यदि साधक के लिए सम्भव हो तो आगे भी प्रत्येक मंगलवार या शनिवार की रात्री को उपरोक्त संकट मोचन हनुमान अष्टक के पांच पाठ करे, जिससे कि उसके जीवन में सभी दृष्टियों से अनुकूलता बनी रहे।

वास्तव में ही यह प्रयोग अदभुत आश्चर्यजनक और प्रत्येक साधक के लिए अनिवार्य है, स्त्रियां भी इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकती हैं, इसमें कोई दोष नहीं है।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

संकटमोचन हनुमानाष्टक

बाल समय रवि भक्षि लियो तब
तीनहु लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सो त्रास भयो जग को
यह संकट काहु सो जात न टारो ॥
देवन आनि करी विनती तब
छांड़ि दियो रवि कष्ट निवारो ।
को नहिं जानत है जग में
कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥१॥

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि
जात महाप्रभु पन्थ निहारो ।
चौंकि महामुनि शाप दियो तब
चाहिय कौन विचार विचारो ॥
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु
सो तुम दास के शोक निवारो ॥को०॥२॥

अगंद के संग लेन गये सिय
खोज कपीश यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु
बिना सुधि लाये इहाँ पगु धारो ।
हेरि थके तट सिन्धु सबै तब
लाय सिया सुधि प्रान उबारो ॥को०॥३॥

रावन त्रास दई सिय को तब
राक्षसि सों कहि सोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु
जाय महा रजनीचर मारो ।
चाहत सीय अशोक सों आगि सु
दे प्रभु मुद्रिका शोक निवारो ॥को०॥४॥

बान लग्यो उर लछिमन के तब
प्राण तजे सुत रावण मारो ।
ले गृह बैद्य सुखेन समेत
तबै गिरि द्रोण सुबीर उपारो ।
आनि सजीवन हाथ दई तब
लछिमन के तुम प्राण उबारो ॥को०॥५॥

रावण युद्ध अजान कियो तब
नाग कि फाँस सबे सिर डारो ।
श्री रघुनाथ समेत सबै दल
मोह भयो यह संकट भारो ।
आनि खगेश तबै हनुमान जु
बन्धन काटि सुत्रास निवारो ॥को०॥६॥

बन्धु समेत जबै अहिरावण
ले रघुनाथ पताल सिधारो ।
देविहि पूजि भली विधि सों बलि ।
देउ सबै मिलि मन्त्र बिचारो ।
जाय सहाय भयो तबहीं
अहिरावण सैन्य समेत संहारो ॥को०॥७॥

काज कियो बड़ देवन के तुम
वीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब को
जो तुमसों नहिं जात है टारो ।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु
जो कछु संकट होय हमारो ॥को०॥८॥

March-92

लोक देव, तांत्रिक देव, विश्व वेद सम

श्री हनुमान

शास्त्र अनेक हैं, और प्रत्येक शास्त्र अपनी उपासना पद्धति में एक दूसरे से अलग, इसी विभिन्नता ने आगे चल कर हिन्दू समाज को सम्प्रदाय में विभक्त कर दिया—वैष्णव, शैव, नाथ, स्वामी नारायण, रामानन्द, वल्लभ, श्री समर्थ, वैखानस, मध्व इत्यादि इत्यादि सम्प्रदाय तो कुछ उदाहरण हैं, पूजा साधना अनुष्ठान की इस विभिन्नता से ही हिन्दू संस्कृति का विकास हुआ, वहीं कुछ आपसी संघर्ष से धार्मिक गुट बन गये, जो शिव की साधना करने लगा उसने अन्य देवी-देवताओं को छोड़ दिया, तो नाथ सम्प्रदाय में कुछ और ही प्रकार की उपासना होने लगी।

इन सब स्थितियों के बावजूद केवल एक देव हैं, जिनके सम्बन्ध में न तो कोई संघर्ष है, न ही वैचारिक भेद और जिन्हें प्रत्येक सम्प्रदाय द्वारा सर्वोपरि देव माना गया है, वे देव हैं श्री हनुमान ! नाम भिन्न हो सकते हैं, लेकिन श्री हनुमान की स्तुति सभी अवश्य करते है, और इनका महत्व कितना विशाल है कि अपनी सरलता के कारण श्री हनुमान जन-जन के देव बन गये, ऐसा कोई गांव नहीं होगा, जहां श्री हनुमान का मन्दिर न हो, उनकी पूजा नहीं की जाती हो, कहीं **'वीरदेव'** के रूप में स्थान हैं, तो कहीं **'जागते देवता'** के रूप में, तो कहीं **महावीर** के रूप में देवालय हैं, यहां तक कि झाड़-फूंक, भूत-पिशाच-प्रेत, जनपीड़क, अपदेवता, के नाश हेतु श्री हनुमान को सर्वप्रथम याद किया जाता है, जन-जन में यह भाव स्थायी रूप से विद्यमान है, कि **'जय हनुमान'**, **'जय-महावीर'**, **'जय बालाजी'** का स्मरण ही भय मुक्त कर देता है।

हनुमानजनी सुनुर्वायुपुत्रो महाबल: ।
रामेष्ट: फाल्गुनसख: पिंगक्षोऽमितविक्रम: ।।
उदधिक्रमणश्चैव सीताशोक विनासन: ।
लंक्ष्मणप्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा ।।
एवं द्वादश नामानि कपीन्द्रस्य महात्मन: ।
स्वापकाले प्रबोधे च यात्राकाले च य: पठेत् ।।

तस्य सर्वभयं नास्ति रणे च विजयी भवेत् ।
राजद्वारे गह्वरे च भयं नास्ति कदाचन ।।

१- हनुमान २- अंजनी पुत्र ३- वायु पुत्र ४- महाबल ५-रामेष्ट (राम प्रिय) ६-फाल्गुनसख (अर्जुन के मित्र) ७- पिंगाक्ष (भूरी आंखों वाले) ८- अमित विक्रम ९- उदधिक्रमण (समुद्र को जीतने वाले) १०- सीता शोक विनाशक ११- लक्ष्मण प्राणदाता १२- दशग्रीव दर्पहा, इन बारह नामों का जो पठन कर लेता है उसे न तो स्वप्न में, न यात्रा में, न युद्ध में, कोई भय रहता है न राजकीय बाधा आती है और न शत्रु भय रहता है, श्री हनुमान का केवल नाम स्मरण करने वाला साधक विजयी हो जाता है।

केवल इसी बात से यह स्पष्ट होता है कि श्री हनुमान की साधना का कितना महत्व है और कितनी सरल है इनकी साधना।

आठ यौगिक सिद्धियां और श्री हनुमान

आठ यौगिक सिद्धियां—अणिमा, महिमा गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व ये आठों सिद्धियां परम पूज्य श्री हनुमान जी में सम्यक रूप से प्रतिष्ठित थीं, और जैसा कि शास्त्रोक्त कथन है कि जैसे देव की पूजा साधना करते हैं, वैसी ही सिद्धि प्राप्त होती है, तो इन आठ यौगिक सिद्धियों की प्राप्ति भी श्री हनुमान साधना से ही सम्भव है, इसमें कोई संदेह नहीं।

श्री हनुमान तो रुद्रावतार हैं, **तारसारोपनिषद** में लिखा है—

ॐ यो ह वै श्री परमात्मा नारायणः स भगवान् मकारवाच्यः शिवस्वरूपो हनुमान् भूर्भुवः स्वः तस्मै वै नमो नमः।

अर्थात् परब्रह्म नारायण शिव स्वरूप हनुमान ही हैं, श्री शिव के ग्यारह रुद्र स्वरूपों में ग्यारहवें रुद्र श्री हनुमान हैं, जो कि शत्रु संहारकर्ता, अति बलशाली, और इच्छानुसार कार्य करने वाले हैं।

श्री हनुमान की मानस साधना भी सम्भव है, मूर्ति साधना भी की जा सकती है, मान्त्रिक साधना और तान्त्रिक साधना भी है, इसी कारण रामायण में लिखा है कि परब्रह्म रुद्र रूप हनुमान की महिमा उन्हीं की कृपा से समझ में आ सकती है, वे सर्व मंगल निधि, सच्चिदानन्द घन परमब्रह्म रुद्र रूप हनुमान तो ओंकार स्वरूप पूर्ण ब्रह्म हैं।

वर्तमान युग और श्री हनुमान

श्री हनुमान जन-जन के देव अपनी सरलता और भक्तों पर सहज कृपा कर देने के कारण ही बने हैं, साधक चाहे किसी भी मत का हो, कोई भी उपासना अपनाता हो, वह श्री हनुमान की साधना सम्पन्न कर सकता है, जीवन में सबसे बड़ा दुख 'भय' है, और जो साधक श्री हनुमान का नाम ही स्मरण कर लेता है, वह भय पर विजय प्राप्त कर लेता है।

विशेष बात यह है कि श्री हनुमान अपने भक्त को, अपने साधक को बुद्धि, बल, वीर्य प्रदान करते हैं अर्थात् मानसिक दुर्बलता हो या शारीरिक दुर्बलता, रोग हो अथवा शोक श्री हनुमान साधना से इस पर विजय प्राप्त होती है, श्री हनुमान चरित्र में एक पूर्ण आदर्श व्यक्तित्व उभरता है, जिसमें न तो कोई कमी है, न ही चारित्रिक दुर्बलता, भक्ति, श्रद्धा, ब्रह्मचर्य, चरित्र रक्षा, बल-बुद्धि का विकास, निष्काम भाव से कार्य करने की प्रेरणा श्री हनुमान चरित्र से ही प्राप्त होती है, वर्तमान युग में तो श्री हनुमान साधना पूर्ण साधना मानी जा सकती है। ●

श्री हनुमान जयन्ती — (१७-४-९२)

March 92

चमत्कार को नमस्कार है

तो फिर कीजिए

बजरंग बली हनुमत् साधना

कहावत है कि "**घर का जोगी जोगिया और आन गांव का सिद्ध**" यह बात पवन पुत्र रुद्रावतार श्री हनुमान के सम्बन्ध में लागू होती है, श्री हनुमान साधना कर कष्टों का निवारण जिस सरल और सहज भाव से हो सकता है उतनी सरल कोई अन्य साधना नहीं है, फिर क्लिष्ट साधनाएं क्यों की जांय, हनुमान साधना तो रामबाण साधनाएं हैं।

कई वर्ष पुरानी बात है, मेरे एक मित्र का नौकरी के लिए इन्टरव्यू था, मित्र बड़े परेशान और वास्तव में भयभीत थे, नौकरी की बहुत सख्त आवश्यकता थी, इन्टरव्यू के लिए बुलावा दो सौ से अधिक लोगों का था और चयन केवल पांच का होना था, चिन्ता से, अनिश्चय से मित्र बड़े व्याकुल थे, मैंने कहा कि इन्टरव्यू में भीतर जाने से पहले शान्त मन से एक बार **हनुमान-तन्त्र चमत्कारानुष्ठान** का पाठ अवश्य कर लेना, अब परीक्षार्थी तो पुस्तक टटोल रहे हैं और मित्र एक कुर्सी पर बैठ कर हनुमान तन्त्र चमत्कारानुष्ठान का पाठ कर रहे थे, पाठ करने के बाद उनका नम्बर आया और वे सहज भाव से पूरे आत्म विश्वास के साथ भीतर गये, बिना किसी सिफारिश के उनका सलेक्शन हो गया, यह श्री हनुमान चमत्कार ही है।

यह सिद्ध बात है कि कृष्ण पक्ष में अर्द्ध रात्रि के पश्चात् शहर क्या घने जंगल अथवा श्मशान में भी हनुमान मन्त्र, हनुमान चालीसा इत्यादि का पाठ करते हुए निकल जांय तो सर्प, बिच्छू, जंगली जानवर क्या भूत-प्रेत-पिशाच भी आपके पास नहीं फटक सकते।

मरणान्तक पीड़ा से व्याप्त कष्ट झेलते हुए रोगियों को हनुमान साधना से अभिमन्त्रित कर जल पिलाया है और हनुमान जी की कृपा से वे पूर्ण स्वस्थ हुए हैं, क्योंकि ऐसा चमत्कार केवल हनुमान ही कर सकते हैं, वे अपने भक्त को कष्ट में नहीं देख सकते और उनके लिए कुछ भी करना सहज सम्भव है, जो एक संजीवनी बूंटी के लिए पूरा पहाड़ उठा कर ले जा सकते हैं, जो रावण जैसे महा प्रतापी का अहंकार चूर-चूर कर सकते हैं ऐसे एकादश रुद्र की महिमा उनकी भक्ति करके ही जानी जा सकती है।

श्री हनुमान प्रतीक हैं— ब्रह्मचर्य, बल, पराक्रम, वीरता, भक्ति, निडरता, सरलता, और विश्वास के, इनके एक-एक गुण के सम्बन्ध में हजारों अध्याय लिखे जा चुके हैं. निर्बल हो कर आधीन हो कर जीना भी कोई जीना है क्या? शत्रु अथवा बाधा बड़ा अथवा छोटा नहीं होता, वह तो केवल व्यक्ति अथवा घटना होती है, और उस पर आत्म विश्वास द्वारा विजय प्राप्त की जा सकती है और जो श्री हनुमान का साधक है उसके भीतर तो आत्म-विश्वास की आत्म शक्ति छलकती रहती है, उसे ज्ञान है कि मेरे पीठ के पीछे प्रबल पराक्रम देव श्री हनुमान बजरंग बली खड़े हैं फिर मुझे काहे की चिन्ता।

जन-जन में श्री हनुमान जी के प्रति एक वीरता, गौरव का भाव भरा हुआ है और इनके स्थान-स्थान पर मन्दिर बने हुए हैं, आप कभी श्री हनुमान जी की मूर्ति के सामने जा कर खड़े हो कर और उनके नेत्रों की ओर देखें तो सीधा आपके मन में बल पराक्रम का श्रेष्ठ भाव ही आयेगा, दुर्बलता हवा में विलीन हो जायेगी, हनुमान साधना के सम्बन्ध में प्रमुख ग्रन्थ हैं—हनुमदुपासना, पैशाचभास्यम-स्तोत्र, कुसुमांजली, श्री मद्रामपवनात्मच, चतुर्थदश रहस्यम, हनुमान बाहूक, हनुमत सतक, मारुति स्तोत्रम ये तो हिन्दी और संस्कृत में प्रमुख ग्रन्थ हैं, इसके अलावा मराठी, गुजराती, बंगला, उड़िया, तेलगू, कन्नड़, मलयालम तथा अंग्रेजी में भी विशेष ग्रन्थ हैं।

सरल कृपालु, सिद्ध देव श्री हनुमान की साधना के कुछ विशेष नियम हैं, जिनकी परिपालना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा रुष्ट हनुमान सर्वनाश हो कर देते हैं, साधक लोग इन सब बातों की ओर विशेष ध्यान दें।

१-हनुमान साधना के दिन के प्रत्येक कार्य में शुद्धता होना आवश्यक है, जो भी प्रसाद नैवेद्य अर्पित करें वह शुद्ध घी का बना होना चाहिए।

२ कुएं के जल से स्नान कर पूजा करना श्रेष्ठ माना गया है।

३-हनुमान मूर्ति को तिल के तेल में मिले हुए सिन्दूर का लेपन करना चाहिए।

४-श्री हनुमान को केवल केसर के साथ घिसा हुआ लाल चन्दन लगाना चाहिए।

५-पुष्पों में केवल लाल पीले और बड़े फूल अर्थात् कमल, हजारा, सूर्य मुखी, के फूलों को ही अर्पित करना चाहिए।

६-नैवेद्य में प्रात: पूजन में गुड़, नारियल का गोला, और लड्डू मध्याह्न में गुड़, घी और गेहूं की रोटी का चूरमा अथवा मोटा रोट तथा रात्रि में आम, अमरूद अथवा केला का नैवेद्य अर्पित करना चाहिए।

७ हनुमान साधना में घी में भीगी हुई एक अथवा पांच बत्तियों का ही दीपक जलाना चाहिए, यह बात महत्वपूर्ण है।

८-हनुमान साधना के दिवस साधक ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्ण रूप से अवश्य पालन करें, और जो नैवेद्य श्री हनुमान को अर्पित हो, उसी को ग्रहण करना चाहिए।

९-हनुमान साधना में मन्त्र जप बोल कर अर्थात् आवाज के साथ किया जाता है और श्री हनुमान की मूर्ति के समक्ष नेत्रों की ओर देखते हुए मन्त्र जप सम्पन्न करें।

१०-अनिष्ट की इच्छा से श्री हनुमान देव का अनुष्ठान करना गलत है, स्वकल्याण, स्वशक्ति की भावना से ही कार्य करना चाहिए।

११-हनुमान साधना में दो प्रकार की मालाओं का प्रयोग किया जाता है, सात्विक कार्यों हेतु **रुद्राक्ष माला** तथा तामसी पराक्रमी कार्यों हेतु **मूंगा माला** का प्रयोग करें।

१२-श्री हनुमान, सेवा पूजा के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, अत: साधक द्वारा सेवा करके फल प्राप्ति की इच्छा रखनी चाहिए, पूजा में पूर्ण श्रद्धा और सेवा भाव होना चाहिए।

कब करें हनुमान साधना

जिस प्रकार आप नित्य प्रति अपना नित्य कर्म करते हैं, उसी प्रकार हनुमान जी की साधना तो प्रत्येक साधक को नित्य ही करनी चाहिए, संकट के समय तो हर कोई देवता को याद करता है, लेकिन वास्तविक भक्ति तो शुभ और अशुभ दोनों समय में पूर्ण श्रद्धा से की गई साधना से ही है।

मंगलवार पवन पुत्र श्री हनुमान का दिन है, इस दिन साधक साधना के ऊपर दिये गये सभी नियमों का पालन करते हुए विशेष अनुष्ठान अवश्य सम्पन्न करें, इसके अतिरिक्त शनिवार को भी हनुमान पूजा का विधान है।

श्री हनुमान जयन्ती

चैत्र शुक्ल पूर्णिमा शुक्रवार दिनांक १७-४-९२ को हनुमान जयन्ती है, इस दिन साधक संकल्प लेकर विशेष अनुष्ठान अवश्य प्रारम्भ करें, हनुमान जयन्ती ऐसा मुहूर्त सिद्ध दिवस है, जिस दिन लिया गया संकल्प निष्फल नहीं जा सकता और साधक सात दिन अथवा २१ दिन में ही प्रत्यक्ष प्रमाण सहित फल प्राप्त करता है।

यह दिवस कुछ विशेष संकल्पों का दिवस है, इस दिन प्रत्येक साधक अपने जीवन में परिवर्तन के लिए अपनी आत्म शक्ति, आत्म विश्वास, बल वीर्य, बुद्धि, हेतु विशेष संकल्प ले कर नये जीवन की ओर प्रवेश करें क्योंकि साधना में श्री हनुमान का आशीर्वाद और शक्ति है।

श्री हनुमान साधना में जो ध्यान किया जाता है, उसका विशेष महत्व है, वर्तमान समय में कामना के अनुकूल स्वरूप की सकाम साधना ही श्रेष्ठ है, जैसा ध्यान करें वैसी ही मूर्ति अपने मानस में स्थिर करें और ऐसा अभ्यास करें कि नेत्र बन्द कर लेने पर ही वही स्वरूप दिखाई पड़े।

श्री हनुमान ध्यान

उद्यन्मार्तण्डकोटिप्रकटरुचियुतं चारुवीरासनस्थं।
मौञ्जीयज्ञोपवीतारुणरुचिरशिखाशोभितं कुण्डलांकम्॥
भक्तानामिष्टदं तं प्रणतमुनिजनं वेदनादप्रमोदं।
ध्यायेद्नित्यं विधेयं प्लवगकुलपतिं गोष्पदी भूतवारिम्॥

उदय होते हुए करोड़ों सूर्यों जैसे तेजस्वी, मनोरम, वीर आसन में स्थित मुञ्ज की मेखला और यज्ञोपवीत धारण किये हुए कुण्डल से शोभित मुनियों द्वारा वन्दित, वेद नाद से प्रहर्षित बानरकुल स्वामी, समुद्र को एक पैर में लांघने वाले देवता स्वरूप भक्तों को अभीष्ठ फल देने वाले श्री हनुमान मेरी रक्षा करें।

हनुमान साधना में अलग-अलग कार्यों की संकल्प पूर्ति हेतु, बल प्राप्ति हेतु, अलग-अलग मन्त्र, सामग्री एवं जप अनुष्ठान का विधान है।

पूजन सामग्री

श्री हनुमान साधना में षोडशोपचार पूजा का उल्लेख आया है, इस पूजा में शुद्ध कुएं का जल, दूध, दही घी, मधु और चीनी का पंचामृत, तिल के तेल में मि सिन्दूर, रक्त चन्दन, लाल पुष्प, जनेऊ, सुपारी, नैवेद्य गुड़, नारियल का गोला, पांच बत्ती का दीप, अष्टग आवश्यक है।

साधना सामग्री

हनुमान साधना में अपने पूजा स्थान में एक आला (ताक) निश्चित कर दें, उस स्थान पर हनुमान चित्र, सामग्री के अतिरिक्त केवल राम सीता का चित्र अथवा मूर्ति रख सकते हैं अन्य कोई चित्र या मूर्ति रखना वर्जित है।

इस साधना में सात सामग्रियों का पूरा विधान है प्रत्येक सामग्री एक विशेष कार्य हेतु सिद्ध होती है और उसकी पूजा समर्पण उसी कार्य को ध्यान में रखते हुए करें—

अमित विक्रमाय हनुमत् यन्त्र—पूर्ण कल्याण एवं सर्वोन्नति हेतु

तीन मधुरूपेण रुद्राक्ष—संकल्प सिद्धि हेतु

गोपद् गुटिका—बल प्राप्ति हेतु

बालाविकम् दंड—शत्रु बाधा निवारण हेतु

मारुति मुञ्ज फल—अनंग शक्ति, वीर्य शक्ति हेतु

मारुति मूंगा माला तथा रुद्राक्ष माला—कार्य अनुसार जप हेतु

हनुमान मुद्रिका—रक्षा हेतु धारण करने के लिए
हनुमान चित्र—वीर मुद्रा में स्थित महाबली

विधान

हनुमान जयन्ती तारीख १७-४-९२ शुक्रवार को साधक स्नान कर शुद्ध लाल वस्त्र धारण कर स्वयं उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठें, तथा अपने सामने हनुमान जी की मूर्ति तथा चित्र स्थापित करें, दक्षिणाभिमुख हनुमान साधना का ही विधान है, सामने पूजा स्थान पर गोबर तथा मिट्टी मिला कर उसे लीप दें अथवा चौकी ला कर पूरी चौकी पर सिन्दूर छिड़क दें और उस पर अपने सामने हनुमान चित्र के आगे सभी सामग्री क्रम से तल की सात ढेरी पर रख दें तत्पश्चात् पूजन कार्य प्रारम्भ करें, सबसे पहले हाथ में जल ले कर संकल्प करें कि मैं अमुक (अपना नाम), अमुक पुत्र (पिता का नाम) अमुक कार्य हेतु यह अनुष्ठान सम्पन्न कर रहा हूं, श्री हनुमान मुझ पर पूर्ण कृपा करें।

अब साधक गुरु ध्यान कर वीर मुद्रा में बैठ कर दीपक जलाएं और फिर हनुमान मूर्ति पर हनुमान यन्त्र पर तथा ताबीज को पंचामृत से फिर शुद्ध जल से स्नान कराकर तेल मिले सिन्दूर का लेपन करें, यह लेपन कर लाल पुष्प चढ़ाएं, वस्त्र अर्पित करें, अब सामने जनेऊ सुपारी रख कर ध्यान मन्त्र का ग्यारह बार जप कर श्री हनुमान देव का आह्वान करें तथा नैवेद्य अर्पित करें, साधक व्रत रखें और नियम से कार्य करें।

अलग-अलग कार्यों हेतु अलग-अलग मन्त्र का विधान है इसे शुद्ध रूप से कम से कम पांच माला का जप अवश्य करें आगे यह अनुभूत मन्त्र दिये जा रहे हैं, सर्वप्रथम तो साधक एक माला बीज मन्त्र का जप करें—

हनुमान बीज मन्त्र

।। ॐ हुं हुं हसौं हस्फ्रौं हुं हुं हनुमते नमः ।।

अब अपने कार्य के अनुरूप मन्त्र अनुष्ठान करें—

१-कार्य सिद्धि के लिए

ॐ नमो भगवते सर्व ग्रहान् भूतभविष्यवर्तमानान् दूरस्थ समीपस्थान् छिन्धि छिन्धि भिन्दि भिन्दि सर्व काल दुष्टबुद्धिनुच्चाटयोच्चाटय परबलान् क्षोभय क्षोभय मम सर्व कार्याणि साधय साधय। ॐ नमो हनुमते ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं फट्। देहि ॐ शिव सिद्धिं, ॐ ह्रां ॐ ह्रीं ॐ ह्रूं ॐ ह्रैं ॐ ह्रौं ॐ ह्रः स्वाहा ।।

२-सर्व विघ्न निवारण के लिए

ॐ नमो हनुमते परकृतयन्त्रमन्त्रपराहंकारभूतप्रेत पिशाच परदृष्टिसर्वविघ्नमार्जनहेतु विद्यासर्वोग्रभयान् निवारय निवारय वध वध लुण्ठ लुण्ठ पच पच विलुंच विलुंच किलि किलि किलि सर्वकुयन्त्राणि दुष्टवाचं ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा।

३-शत्रु संकट निवारण के लिए

।। ॐ पूर्व कपिमुखाय पंचमुखहनुमते टं टं टं टं टं सकलशत्रुसंहारणाय स्वाहा ।।

४-प्रेत बाधा निवारण के लिए

।। ॐ दक्षिणमुखाय पंचमुख हनुमते करालवदनाय नरसिंहाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सकलभूतप्रेतदमनाय स्वाहा ।।

५-महामारी, अमंगल, ग्रह दोष एवं भूत प्रेतादि नाश के लिए

।। ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ॐ नमो भगवते महाबलपराक्रमाय भूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षस शाकिनी डाकिनी यक्षिणी पूतनामारी महामारी राक्षस भैरव वेताल ग्रह राक्षसादिकान् क्षणेन हन हन भंजय भंजय मारय मारय शिक्षय शिक्षय महामाहेश्वररुद्रावतार ॐ ह्रूं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते हनुमदाख्याय रुद्राय सर्वदुष्टजनमुख स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ठं ठं ठं फट् स्वाहा।

इन मन्त्रों में जो शक्ति है, वह तो साधक श्री हनुमान अनुष्ठान सम्पन्न कर ही प्रत्यक्ष रूप से अनुभव कर सकता है, विधान ऐसा है कि जितनी संख्या में मन्त्र जप करें उसका दसवें हिस्से मन्त्र का हवन अवश्य करें ।

अनुष्ठान पूर्ण होने पर साधक मुद्रिका को धारण कर लें, मधुरूपेण रुद्राक्ष किसी हनुमान मन्दिर में अर्पित कर दें अन्य सामग्री अपने पूजा स्थान में रखे रहे ।

साधकों को इस महत्वपूर्ण अवसर का पूर्ण लाभ प्राप्त हो, वे हनुमान साधना सम्पन्न कर जीवन को नया तेज दें इस हेतु सभी सामग्री का एक पैकेट हनुमान साधना सिद्धि पैकेट बनाया गया है इसे समय रहते प्राप्त कर लें ।

श्री शनि जो कि सबसे प्रबल देव माने गये हैं, और यदि किसी को शनि पनौती हो, और शनि बाधा हो तो वह साधक शनिवार के दिन श्री हनुमान मूर्ति पर तेल चढ़ाएं और हनुमान मन्त्र अनुष्ठान करें तो यह बाधा भी पूर्ण रूप से दूर हो जाती है, ये सभी मन्त्र स्वतः अनुभव सिद्ध मन्त्र हैं, आशा है, साधक गण इनसे अवश्य लाभ प्राप्त करेंगे । ●

हनुमन्मन्त्र चमत्कारानुष्ठान

श्री शंकराचार्य हनुमान साधना के अनन्य ज्ञाता माने जाते हैं, उन्होंने हनुमन्मन्त्र चमत्कारानुष्ठान पद्धति की रचना की, इस महाग्रन्थ में साधना के सम्बन्ध में विशेष विवरण इत्यादि दिया हुआ है, मूल रूप से बीस मन्त्र प्रधान हैं ।

इन बीस मन्त्रों में से पाठकों हेतु सात मुख्य मन्त्र दिये जा रहे हैं, मंगलवार के दिन अपनी बाधा के अनुसार, अपने कार्य के अनुसार हनुमान पूजन कर एक मंगलवार से दूसरे मंगलवार तक ग्यारह हजार मन्त्र का जप करना है, इस अनुष्ठान हेतु मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त '**हनुमान गुटिका**' लाल कपड़े में बांध कर काले डोरे से अपने गले में धारण कर हनुमान चित्र के आगे अनुष्ठान सम्पन्न करना है, पाठक गण मन्त्र को ध्यान से देखेंगे तो मन्त्र में ही सम्बन्धित कार्य विवरण हैं—

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय विश्वरूपाय अमित-विक्रमाय प्रकटपराक्रमाय महाबलाय सूर्य-कोटिसमप्रभाय रामदूताय स्वाहा ।।

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय सर्वशत्रुसंहारणाय सर्वरोगहराय सर्ववशीकरणाय रामदूताय स्वाहा ।।

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय भक्तजनमनः कल्पना-कल्पद्रुमाय दुष्टमनोरथस्तम्भनाय प्रभंजन-प्राणप्रियाय महाबलपराक्रमाय महाविपत्तिनिवार-णाय पुत्रपौत्रधनधान्यादिविविधसम्पत्प्रदाय राम-दूताय स्वाहा ।।

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय वज्रदेहाय वज्र-नखाय वज्रसुखाय वज्ररोम्णे वज्रनेत्राय वज्रदन्ताय वज्रकराय वज्रभक्ताय रामदूताय स्वाहा ।।

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय परयन्त्रमन्त्रतन्त्र-त्राटकनाशकाय सर्वज्वरच्छेदकाय सर्वव्याधिनिकृन्त-काय सर्वभयप्रशमनाय सर्वदुष्टमुखस्तम्भनाय सर्व कार्यसिद्धिप्रदाय रामदूताय स्वाहा ।।

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय देवदानवयक्ष-राक्षस-भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-दुष्टग्रह बन्धनाय रामदूताय स्वाहा ।।

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय पंचवदनाय पश्चिममुखे गरुडाय सकलविघ्ननिवारणाय राम-दूताय स्वाहा ।।

गुरुधाम दिल्ली में

शत्रुहन्ता हनुमन्त प्रयोग

दिनांक–२४-१२-९२ (गुरुवार)

श्री हनुमान प्रतीक हैं– ब्रह्मचर्य शक्ति, पराक्रम, बल, वीरता, निडरता, भक्ति, विश्वास और सरलता के। पवन पुत्र रुद्रावतार हनुमत् साधना साधक के लिए एक अजय शक्ति की साधना है और जब हनुमान जाग्रत होते हैं तो फिर अन्य सारे भूत-प्रेत बाधाएं, शत्रु सब कुछ शान्त हो जाते हैं। श्री हनुमान को रुद्र का अवतार माना जाता है और इन्हें ब्रह्मा, विष्णु, महेश, यम, कुबेर, अग्नि, वायु, इन्द्र आदि द्वारा वर एव शक्तियां प्राप्त है। श्री हनुमान के दो स्वरूप हैं—वीर स्वरूप और दास स्वरूप। जब इस गुरुवार को शत्रुहन्ता साधना की जा रही है, तो श्री हनुमान के वीर रूप की साधना करनी आवश्यक है। श्री हनुमान भक्त साधक को उनकी आठ सिद्धियां—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व प्राप्त होती ही है। श्री हनुमान का रुद्र रूप तो मानों शत्रुओं का संहार करने के लिए ही तत्पर रहता है, इसीलिए इन्हें महावीर कहा गया है।

इस रात्रि को हनुमान साधना में सबसे पहले २१ पाठ हनुमान चालीसा से सम्पन्न करने हैं, फिर गुरुदेव द्वारा प्रदत्त हनुमन्त साधना सामग्री में से **'हनुमान यन्त्र'** को स्थापित कर उसकी पूजा करती है, इस पूजा में सिन्दूर का प्रयोग किया जाना है, और पांच बत्तियों का दीपक जलाएं प्रसाद में रोटी का चूरमा अथवा केले इत्यादि का प्रसाद रखें। इस दिन ब्रह्मचर्य का पालन करें और केवल हनुमान जी को चढ़ाया हुआ प्रसाद ही ग्रहण करें।

वीर मुद्रा में बैठकर साधना सामग्री को प्रयोग में लेते हुए मन्त्र जप करें—

बीज मन्त्र

॥ ॐ हुं हुं हसौं ह्स्फ्रौं हुं हुं हनुमते नमः ॥

शत्रुहन्ता हनुमान मन्त्र

॥ ॐ पूर्व मुखाय पंचमुखहनुमते टं टं टं टं टं सकलशत्रुसंहारणाय स्वाहा ॥

सम्पूर्ण विधि-विधान सहित शत्रुहन्ता प्रयोग सम्पन्न करने से साधक को सफलता सात दिन से सात सप्ताह के भीतर अवश्य ही प्राप्त हो जाती है।

शत्रु कितना ही बलवान हो, उसे झुकना ही पड़ता है, और कई बार तो ऐसा भी देखा गया है कि इस प्रकार का प्रयोग सम्पन्न करने से शत्रु साधक के अधीन हो जाता है।

भूत-प्रेत पिशाच इत्यादि का कोई भी डर नहीं रहता और जहां यह प्रयोग निरन्तर किया जाय उस घर पर तांत्रिक प्रयोग भी सफल नहीं हो सकते।

गुरु धाम में गुरु चित्र के समक्ष बैठ कर साधना करने से जो प्रभाव प्राप्त होता है, वह अन्यत्र कहीं भी नहीं मिल सकता। ●

हनुमान साधना सिद्धि

संसार की सर्वश्रेष्ठ सिद्धियों में से एक है. . .और वह गोपनीय, अमोघ मंत्र, जब बजरंग बली साक्षात् प्रगट होते हैं।

प्रातः स्मरामि हनुमन्त मनन्तवीर्यं,
श्रीरामचन्द्र चरणाम्बुज चंचरीकं।
लंकापुरी दहननन्दित देव वृन्दं;
सर्वार्थसिद्धि सदनं प्रथित प्रभावम्।।

– अर्थात्, "मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के चरणारविन्दों के प्रति भ्रमर के समान मुग्ध प्रेमी, जिन्होंने रावण की नगरी लंका को जला कर दुःखी देवगणों को आनन्दित किया, जिनकी सिद्धि व बल-वीर्य से समस्त विश्व परिचित है, ऐसे भक्तवत्सल श्री हनुमान को मैं प्रातः वेला में अनन्य भक्ति-भाव से नमन करता हूं, जिससे वे कृपा कर अपने समान हमें भी पराक्रमी बनने का वरदान दें।"
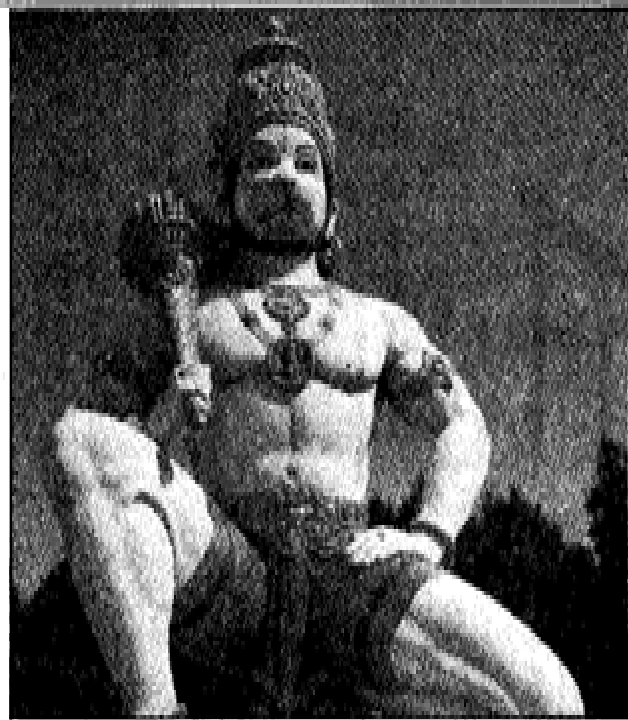
● संकट ते हनुमान छुड़ावै, मन क्रम वचन ध्यान जो लावै।।
● कौन सौ काम कठिन है जग में, जो कछु होय सके नाहि तुमसे।।
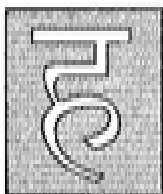
नुमान वीरता और बल के प्रतीक हैं, इसलिए इनका एक नाम ''संकटमोचन'' भी है अर्थात् ये संकटों को हरने वाले, रोग-शोक, व्याधि, पीड़ा, संताप का प्रशमन एवं शत्रुओं का दमन करने वाले एकमात्र देव हैं, जो संसार की सर्वश्रेष्ठ सिद्धियों में से एक माने जाते हैं।

पुराणों के अनुसार वीर और दास इन दोनों रूपों में उपासकों ने अपनी-अपनी भावनानुसार इनकी पूजा-अभ्यर्थना की है। वीर के रूप में ये विघ्नविनाशक माने जाते हैं, और सुख-लाभ को प्राप्त करने के लिए इनके दास रूप की उपासना की जाती है। शास्त्रों में दोनों ही रूपों का ध्यान, मनन व चिन्तन दिया गया है। वीर के लिए राजसिक और दास के लिए सात्विक उपचारों का उल्लेख है।

शास्त्रवचनानुसार इन्हें ''पवनसुत'' और ''अंजनी पुत्र'' के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इस सम्बन्ध में उद्धृत है, कि एक बार शाप भ्रष्ट हो 'पुंजिकस्थला' नाम की एक अप्सरा को वानरी रूप में अवतरित होना पड़ा, जब वह पूर्ण यौवनवान थी, उस समय अत्यंत दिव्य वस्त्राभूषणों से सुसज्जित हो पर्वत पर विचरण कर रही थी, कि तभी उसे लगा, जैसे कोई उसके आस-पास है, अतः वह तीक्ष्ण स्वरों में बोली— ''कौन है, जो पतिव्रता को स्पर्श करके अपना सर्वनाश करने के लिए दुराग्रही हो रहा है?''

अंजनी के क्रोधमय वचनों को सुनकर, उसके पास में विचरण कर रहे वायुदेव बोले— ''हे देवी! करुणा के आगार, निराकार भगवान इस पृथ्वी लोक पर मनुष्य देह धारण कर अवतरित हो रहे हैं, जिससे कि वे असुरों का नाश कर पृथ्वी पर शांति स्थापित कर सकें, अतः उनकी सेवा के लिए भगवान शिव अपने ग्यारहवें रुद्र स्वरूप में मनुष्य देह धारण कर आना चाहते हैं। उनके अवतरण को सहज बनाने के लिए ही तुम्हारा और मेरा मिलन होना आवश्यक है, क्योंकि तुम्हारे गर्भ से ही पुत्र रूप में जन्म लेने का योग है''; और तभी से ये अंजनी पुत्र और पवनसुत के नाम से विख्यात हो गये।

पूरे भारतवर्ष में श्री हनुमान जी की पूजा-उपासना पूर्ण निष्ठा-भाव से की जाती है, विशेषकर पुरुष व बालक इनकी पूजा-उपासना करते देखे गये हैं, जिससे कि वे भी उनकी तरह ही सर्वगुण सम्पन्न बन सकें।

आज पृथ्वी पर अर्थ और काम धर्म से नियंत्रित नहीं है, जिसके कारण ही विभिन्न दोष पल्लवित, फलित हो रहे हैं, जिसमें फंसकर व्यक्ति देश, राष्ट्र व समाज के प्रति अपने कर्तव्य से विमुख होता जा रहा है, और जो थोड़ी बहुत आध्यात्मिकता का अंश मात्र शेष है भी, वह भी झूठे, ढोंगी, दम्भी, पाखण्डियों की दुष्प्रवृत्तियों के कारण दूषित होता जा रहा है। ऐसी दुःखद स्थिति में, जबकि चारों ओर दुष्प्रवृत्तियों का ही बोलबाला है, और व्यक्ति पतन की गर्त में धंसता ही चला जा रहा है, ऐसे में उसके लिए तथा समाज

व देश के हितार्थ ही यह **"हनुमान साधना सिद्धि"** परमावश्यक मानी गई है।

चारों पुरुषार्थों को नियन्त्रित करने की क्षमता श्री हनुमान की उपासना से ही प्राप्त होती है, क्योंकि ये अष्ट सिद्धियों व नवनिधियों के दाता हैं, कुमति को समाप्त करने वाले हैं, सुमति को प्रदान करने वाले हैं।

जन्ममृत्युभयहननाय सर्वक्लेशहराय च।
नेदिष्ठाय प्रेत भूत पिशाच भयहारिणे।।

अर्थात् "श्री हनुमान जन्म और मृत्यु के भय को समाप्त करने वाले हैं, सम्पूर्ण कष्टों व बाधाओं का हरण करने वाले हैं। भूत, प्रेत, राक्षस आदि श्री हनुमान के नाम के प्रताप से ही भाग जाते हैं और मनुष्य भय रहित हो जाता है।

श्री हनुमान साधना करने पर साधक को निम्न लाभ प्राप्त होते हैं–

१. भगवान हनुमान की साधना करने पर साधक को बल, बुद्धि, वीर्य प्राप्त होने लगता है।
२. इस साधना में संलग्न रहने पर समस्त लौकिक व परालौकिक सिद्धियां प्राप्त होने लग जाती हैं।
३. रोगों का शमन होता है।
४. मानसिक दुर्बलता की स्थितियों में उनसे सहायता प्राप्त होती है।
५. अहंकारियों का गर्व समाप्त हो जाता है।

श्री हनुमान दीनों का क्लेश हरने के लिए दारुण दावानल के समान हैं, सर्वकाम पूरक हैं, संकट रूपी प्रलयघनघटा को विदीर्ण करने वाले और सर्वव्यापी हैं, ऐसे देव की साधना–उपासना करना ही सर्वश्रेष्ठ सौभाग्य की प्राप्ति है।

उपरोक्त फलों से फलीभूत कर देने वाली साधना सभी साधकों के सुख-लाभार्थ के लिए आवश्यक सिद्ध होती है तथा समस्त संकटों का विध्वंस करने में सहायक है।

साधना विधिः

१. सर्वप्रथम साधक तारक मंत्र से प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य **"हनुमान सिद्धि यंत्र"**, **"मूंगा माला"** एवं **"हनुमत् कल्प"** प्राप्त कर लें।
२. इसके पश्चात् साधक चौकी पर लाल वस्त्र बिछा कर किसी भी ताम्र अथवा स्टील के पात्र में **रंगे हुए लाल चावलों की ढेरी पर** "हनुमान सिद्धि यंत्र" स्थापित कर लें।
३. पंचामृत से यंत्र स्नान एवं धूप, दीप, पुष्प, अक्षत आदि समर्पित करें। यंत्र के चारों कोनों में चार बिन्दियां लगाकर यंत्र-पूजन करें।
४. साधक स्वयं लाल अथवा संतरी रंग की धोती पहिनें तथा ऊपर गुरुनामी चादर ओढ़कर **पीले आसन** पर बैठ जायें।
५. ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए भूमि शयन करें। शुद्ध एवं सात्विक आहार एक समय ग्रहण करें।
६. इस साधना में दिशा **पूर्व या उत्तर** ही रखें।
७. साधना प्रारम्भ करने से पूर्व **गुरु-पूजन** एवं ४ माला गुरु मंत्र का जप एवं साधना के पश्चात् १ माला गुरु मंत्र का जप सम्पन्न कर साधना की पूर्णता एवं सफलता के आशीर्वाद की मांग पूज्य गुरुदेव से करें।
८. यह साधना **प्रातः ४ बजे से ७ बजे के मध्य एवं सायं ६ बजे से रात्रि १० बजे से पूर्व** सम्पन्न कर लेनी चाहिए।
९. इस साधना को किसी भी **मंगलवार** या **शनिवार** से प्रारम्भ किया जा सकता है।
१०. "मूंगा माला" से मंत्र-जप करते समय "हनुमत् कल्प" को अपने बायें हाथ में दबाये रखें, जिससे किसी भी प्रकार की विघ्न-बाधा साधना काल में साधक पर प्रभावी न हो सके।
११. यह साधना **तीन दिवसीय** है।
१२. इस साधना में साधक को मूल मंत्र का प्रतिदिन **५ माला मंत्र-जप** करना चाहिए।

मंत्र

ॐ हुं हुं ह्सौः हनुमते हुं।

१३. मंत्र-जप समाप्ति के पश्चात् बेसन के लड्डू का भोग श्री हनुमान जी को लगायें और प्रसाद को वितरित कर दें।
१४. ध्यान रखें, साधना काल में तीनों दिन तक तेल का दीपक लगातार जलता रहे।
१५. तीन दिन के पश्चात् यंत्र व माला अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें, एवं **२१ दिन तक उक्त मंत्र का जप एक माला** प्रतिदिन करें, तथा २१ दिन के पश्चात् यंत्र व माला किसी नदी अथवा तालाब में प्रवाहित कर दें।
१६. प्रतिदिन साधना के पश्चात् **हनुमान आरती** एवं **गुरु आरती** सम्पन्न करें।

निश्चय ही यह साधना उन व्यक्तियों के लिए अत्यन्त ही लाभप्रद सिद्ध होगी, जो अपने-आप को शारीरिक एवं मानसिक रूप से दुर्बल समझते हैं। जिनका घर भूत-प्रेत बाधा से एवं तंत्र-प्रयोग से ग्रसित हो, ऐसी स्थिति में साधक इस साधना को सम्पन्न कर, अपने घर को तथा अपने-आप को पूर्ण दोष मुक्त बना सकते हैं। यदि इसी साधना को साधक सवा पांच लाख मंत्र-जप के अनुष्ठान के रूप में सम्पन्न करें, तो निश्चय ही सर्व सिद्धि प्रदायक महावीर हनुमान के साक्षात जाज्वल्यमान दर्शन प्राप्त होते ही हैं।

सामग्री न्यौछावर :

हनुमान सिद्धि यंत्र - २४०/-, मूंगा माला - १५०/-
हनुमत् कल्प - ६०/-

मंगलवार

क्या आप इतर योनियों या किसी अशरीरी आत्मा के प्रकोप से पीड़ित हैं?

महाबली साधना

भूत पिसाच निकट नहिं आवैं, हनुमान जब नाम सुनावैं।

जब तुलसीदास ने हनुमान चालीसा लिखी, तो उन्होंने इन पंक्तियों की भी रचना की जो कि पूर्णतया सत्य हैं। तुलसीदास के पूरे जीवन में भगवान राम, सीता और रुद्रावतार हनुमान की पूर्ण कृपा थी, समय-समय पर उन्हें इन तीनों के दर्शन होते थे। तुलसीदास का मार्ग भक्ति का था, परन्तु हनुमान की कृपा को साधना के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। किसी प्रकार की प्रेत बाधा या तंत्र बाधा हो, हनुमान की तंत्र दोष निवारण साधना से निश्चित रूप से वह समाप्त हो ही जाती है। ***हनुमान के साधक को या जिस पर हनुमान की कृपा हो, उसे तो ब्रह्मराक्षस भी दूर से ही नमस्कार करते हैं।***

ग्रामीण क्षेत्रों में प्रायःदेखने को मिलता है, कि स्त्रियों या पुरुषों को दौरे आ जाते हैं। यदि यह मिरगी का दौरा होता है, तो सामान्य औषधीय उपचार से ठीक हो जाता है, परन्तु जब ऊट-पटांग हरकत और सिर झटकाकर नाचना और ऊल-जलूल सी बातें व्यक्ति करने लगता है, तो यह किसी दुष्ट आत्मा का प्रकोप ही होता है। कई बार सुनने में आता है, कि अमुक स्त्री अथवा व्यक्ति पर किसी देवी का प्रकोप या आवेश हुआ है, या किसी के ऊपर किसी देव का वास हुआ है – परन्तु ये सब भ्रामक और मिथ्या बातें हैं।

दुर्गा, काली या उच्च स्तर की देवी और देवताओं के दर्शन, अनुभव और उन्हें शरीर में धारण करने के लिए ही तो साधक वर्षों की कठोर और श्रम साध्य साधनाएं करते हैं और अपने शरीर, मन और कर्म को पूरी तरह से शुद्ध रख कर जीवन जीते हैं, तब कहीं जाकर उन्हें दुर्गा आदि देवी के दर्शन या अनुभव होते हैं। और ***बिना किसी साधना के, पवित्र जीवन यापन के तथा बिना गुरु कृपा के किसी भी व्यक्ति को देवी का आवेश होता नहीं है। देवी को अंश रूप में धारण करने के लिए भी पूर्ण शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शुद्धता आवश्यक है।*** सामान्य तौर पर चक्कर खाकर जो लोग गिरते हैं, या यह बोलने लगते हैं, कि मैं दुर्गा हूं, देवी हूं, या मैं ब्रह्म देव हूं, और मैं जो कह रही हूं वैसा नहीं करोगे तो शाप दे दूंगी आदि – **यह सब डाकिनी, शाकिनी या किसी दुष्ट आत्मा के प्रकोप का प्रभाव होता है।** इसलिए जो लोग उस स्त्री या व्यक्ति को देवी मानकर उसे पूजने लगते हैं, यह अज्ञान ही है।

कई दुष्ट आत्माएं, कमजोर मन के स्त्री-पुरुषों पर हावी हो जाती हैं, अपनी इच्छा पूर्ति करवाने के लिए या अपनी मुक्ति करवाने के लिए उस व्यक्ति को तंग करती हैं। इन सबके शमन के लिए, उस दुष्ट आत्मा के प्रकोप से छुटकारा पाने के लिए महाबली हनुमान की यह छोटी सी साधना ही पर्याप्त है। यदि आप पर किसी प्रकार का अन्य प्रयोग या तंत्र बाधा किसी द्वारा करा दी गई हो, तो भी यह साधना पूर्ण प्रभावी है।

इस प्रयोग को किसी भी **मंगलवार** के दिन स्वयं के लिए या किसी अन्य के नाम से प्रारम्भ किया जा सकता है। अपने सामने लाल रंग के आसन एक पंचपात्र में जल भरकर रख लें। उसके ऊपर **'अतृप्त आत्मा शान्ति यंत्र'** रखें। यंत्र पर तेल और सिन्दूर का लेप करें। उस पर **'हनुमान बाहुक'** को स्थापित कर दें। फिर निम्न मंत्र का आधे घण्टे जप करें –

शरीरस्थ अतृप्त आत्मा निवारण मंत्र

॥ ॐ हूं हूं हनुमते भूत पिशाच शाकिनि डाकिनि विद्रावय विद्रावय ॐ ॐ फट् ॥

Om Hoom Hoom Hanumate Bhoot Pishaach Shaakini Daakini Vidraavay Vidraavay Om Om Phat

जप के बाद पंचपात्र में रखा जल उस व्यक्ति को पिला दें। ११ दिन तक ऐसा करें। ग्यारहवें दिन हनुमान बाहुक को रोगी के गले में धारण करा दें तथा यंत्र को जल में विसर्जित कर दें। इससे बाधा समाप्त हो जाती है।

साधना सामग्री पैकेट – 240/-

हनुमान साधना

नितान्त एकाकी रहने वाले, कामना रहित साधक वास्तव में अपनी आत्मलीनता के परम सुख का त्याग कर स्वयं को उत्सर्ग करने में ही लगे रहते हैं, किसी प्रान्त या देश के लिए नहीं, किसी जाति या धर्म विशेष के लिए भी नहीं, अपितु सभी के लिए, अखिल विश्व के लिए क्योंकि साधना उनके लिए 'स्व' से ऊपर उठने की क्रिया जो है . . .

ग्रीष्म की अग्नि वर्षा करती हुई दोपहर में उसका आगमन गांव में सुखद हरियाली का प्रतीक बन गया था। अत्यन्त अल्प समय में ही अपनी उदात्त प्रेम भावना को असहाय ग्रामीणों की सेवा-सुश्रुषा के रूप में लुटाते हुए वह हृदय में छिपी अपनी समष्टिगत करुणा का परिचय दे चुका था। आज वह कितने ही मुरझाये दिलों में प्रेरणा और प्रकाश भरने का अधिकारी है, सब कितना प्यार करते हैं उसे। गांव का एक भी घर उसकी कृपा दृष्टि की अमृत फुहार से अछूता नहीं बचा . . .

भव्य गौर वर्ण, सिर पर छोटी सी शिखा व मस्तक पर कभी न मिटने वाला रक्त चन्दन का तिलक। पर आंखों में असीम वेदना, करुणा और जिज्ञासा थी। नेत्रों में एक निस्तब्धता थी, जिसे देख कर लगता था, मानों अंधकार होने पर भी वह प्रकाश की ओर बढ़ रहा हो। उसके लम्बे व पतले अधरों पर विचित्र स्फुरण था, जैसे किसी अत्यन्त पवित्र शब्द का उद्घोष करने को व्याकुल हो उठे हों।

पर गांव वालों को इससे क्या? वे तो अत्यन्त कौतूहल से उस अल्पवय साधु को देख रहे थे, जो गांव की सीमा पर न जाने कहां से जेठ की तपती धूप में प्रकट हो गया था। पिछले कई माह से ग्रामीणों का जीवन किसी दैवीय आपदा से अस्त-व्यस्त हो चुका था, कितने परिजनों की अकाल मृत्यु हुई, कितनों के शिशु मृत्यु शैय्या पर झूल रहे थे। कई घर तो पूरी तरह से बरबाद हो चुके थे – शव को कंधा देने वाला भी शेष नहीं था। कदाचित इन्हीं कारणों से वे ग्रामीण किसी भी आगन्तुक को अत्यन्त भय की दृष्टि से देखा करते थे।

"पर यह तो बिल्कुल अलग सा दिखता है" – पीली धोती पहने व कंधे पर लाल झोली उठाये वह तरुण साधक प्रत्येक को अपनी ओर मानों खींच रहा था – "सचमुच ही इसमें तपस्या का तेज दिखाई दे रहा है, क्या मालूम ईश्वर ने हम दुःखी ग्रामीणों के कल्याण का माध्यम बना कर ही इसे यहां भेज दिया हो . . . कितनी प्रेमभरी आंखों से पूरे गांव को निहार रहा है" – कुछ ग्रामीण यह विचार कर ही रहे थे, कि उस युवा तपस्वी ने उनके पास आकर अत्यन्त विनम्रता पूर्वक पूछा – "यदि आप संत जन कृपा करें, तो मैं कुछ समय के लिए इस गांव में ठहरना चाहता हूं।"

—''विश्वास रखिये, मैं हर प्रकार से मंगल ही करूंगा।''

''हां बेटा! तुम इसे अपना ही गांव समझो'' — अन्य कोई होता, तो गांव वाले धक्के दे कर भगा देते, पर उसकी सम्मोहक वाणी और संत जनों का सम्बोधन सुन वे भोले ग्रामीण प्रसन्न हुए बिना न रह सके — ''पर आजकल इस गांव में मृत्यु ने अपना भयानक पञ्जा फैला रखा है, कोई परिवार सुखी नहीं है, इसीलिए तुम बाहर हनुमान मंदिर में डेरा डाल सको, तो हमें कोई असुविधा नहीं है।''

''हनुमान मंदिर'' — साधु के कान मानों इसी शब्द की प्रतीक्षा कर रहे थे, उसकी आंखों में अपूर्व चमक कौंध उठी। अपना कमण्डल व थैली उठाये वह दूर अमराइयों के बीच स्थित उस पुराने खण्डहरनुमा हनुमान मन्दिर के प्रांगण में प्रवेश कर गया। अपने लाल अंगोछे से मन्दिर की धूल साफ की और पत्तियों को एकत्र कर धूनी में डालने के पश्चात् एक ओर आसन लगा कर बैठ गया।

गांव के दो युवा खटिकों की इहलीला समाप्त होने के कारण यह अमराई और मन्दिर दोनों ही ग्रामीणों की दृष्टि में अभिशप्त साबित हो चुके थे, अतः वे दूर से ही कुछ समय टकटकी लगा कर साधु के क्रिया-कलाप से संतुष्ट हो लौट चले।

मर्मान्तक पीड़ाओं से मुक्ति

तपस्वी की रात्रि व्यतीत होनी थी, कि गांव का कायापलट आरम्भ हो गया। मृत्यु शैय्या पर लेटे गांव के लच्छू महाराज का एकमात्र पुत्र प्रातः ही उठ बैठा और भावविभोर शब्दों में इतना ही कह पाया — ''मां! रात में भूत बगीचे के हनुमान जी मेरे पास आये थे, मुझे छूते रहे और जाते-जाते कहने लगे, कि अब मैं अच्छा हो जाऊंगा, पहले की तरह खेल सकूंगा।''

माता-पिता बालक के शरीर में रोग का कोई लक्षण न देख प्रसन्नता से रो पड़े। कल तक जिसके लिए कोई उपचार शेष नहीं बचा था, वही मरणासन्न पुत्र आज किलकारियां भरते हुए मां की गोद में सिमटा जा रहा था।

तब भी ग्रामीणों को उस तपस्वी की महिमा का पूरा अंदाज नहीं मिल पाया था, अभी भी वे उसके निकट जाने से डरते थे। वह युवा साधु रात्रिपर्यन्त एक ही आसन पर बैठा हुआ मंत्र जप किया करता, सामने रक्तवर्णीय जंगली फूल व गुड़ का नैवेद्य बिखरा होता और वह दीपक के धीमे प्रकाश में किसी प्रखर देवात्मा का आवाहन करता प्रतीत होता, कभी-कभी तो भावावेश में रोने भी लगता।

दिन के तीसरे प्रहर जब गांव का बाल समूह विद्यालय से लौटता, तो अमराइयों में बसे उस साधक का लोभ बरबस ही उन्हें वहां खींच लाता। उस समय वह प्रत्येक से उसके घर का कुशल-क्षेम पूछता और तकलीफ सुनते ही अत्यन्त विश्वास के साथ अगले दिन ठीक हो जाने का आश्वासन भी दे देता। भोले-भाले बालक घर लौट कर माता-पिता को यह समाचार सुनाते और फिर कुछ डांट-फटकार खाकर चुप हो जाते। ग्रामवासी अभी भी जिस साधु को भय से देखते थे, बालकों को वही अपना सबसे परम मित्र प्रतीत होता।

आषाढ़ मास का प्रारम्भ हो चुका था। हल्की-फुल्की रिमझिम वर्षा ने अचानक एक दिन प्रलयंकारी रूप धारण कर लिया। वृद्धजन आश्चर्य से भर उठे, अपने जीवन में इस गांव में वर्षा का इतना भीषण ताण्डव उन्हें कभी स्मरण नहीं आया था। खेत-खलिहान डूबने लगे, सूरज देवता तो जैसे अदृश्य ही हो गये थे। चारों ओर जलाप्लावन का दृश्य उपस्थित हो गया। एक-एक करके मवेशियों की मृत्यु होने लगी।

घर गिर जाने की आशंका से कितने ही परिवार गांव छोड़ कर पलायन कर गये, जो बचे, वे अन्न-जल को भी तरसने लगे, साथ ही संक्रामक रोगों ने भी सबको अपनी गिरफ्त में ले लिया था, किसी को अब जीवन का भरोसा नहीं रह गया।

इन्हीं दुर्दिन के क्षणों में गांव वालों को उस तपस्वी का वास्तविक देवात्मा स्वरूप दिखाई पड़ा। कष्ट भोगते रोगियों को वह कुछ अभिमंत्रित जल दे देता और उनकी तकलीफ मिटने लगती।

गांव का सूखा तालाब, जो अब एक विशाल झील का रूप ले चुका था, उसमें से उस साधु ने कई बालकों को काल कवलित होने से बचा लिया। अपने प्राणों का तो जैसे उसे कोई मोह था ही नहीं, मूसलाधार वर्षा में भी वह आराम से तैरते हुए झील में प्रवेश कर डूबते मवेशियों को खींच लाता। पता नहीं कितनी अद्‌भुत शारीरिक क्षमता भगवान ने उसे प्रदान की थी, कि वह कभी रुग्ण नहीं होता था, अपितु दिवस पर्यन्त दूसरों की सेवा में ही लीन रहता और रात्रि साधना में ही बीत जाती।

प्रबल पराक्रम का रहस्य

अन्ततः प्रकृति का ताण्डव समाप्त हुआ, तपस्वी की रात्रि साधना सफल हो चुकी थी। अब उसके प्रस्थान का समय आ चुका था। गांव की सीमा पर पहुंचे उन ग्रामीणों ने तपस्वी के पुण्य चरणों में प्रणाम कर क्षमा याचना करते हुए कहा — ''भगवन्! अज्ञानवश हमसे जो भी भूल हो गई हो, उन्हें क्षमा कर

देना। कभी इधर आगमन हो, तो सेवा का अवसर हमें ही दें, आपके उपकारों से हम कभी उऋण नहीं हो पायेंगे।"

तपस्वी की आंखें छलक उठीं। स्नेह पूर्वक उस ग्रामीण के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा — "कल्याण करने की सामर्थ्य तो एकमात्र मेरे गुरुदेव में ही है, मैं तो उनका एक निमित्त मात्र ही हूं। पीड़ित मानवता के प्रति उनकी असीम करुणा ही मुझे यहां खींच लाई। सेवा से मिलने वाला आत्म संतोष ही मेरे लिए सबसे बड़ा वरदान है, वही मेरी प्रसन्नता है।"

"अब इस गांव में कभी कोई संकट या दैवी आपदा आ ही नहीं सकती। मेरी 'हनुमान साधना' यहां पूर्णतः सफल हुई है। गांव की सीमा पर विराजमान बड़े हनुमान जी स्वयं इस गांव की सुरक्षा करते रहेंगे, अपने गुरु की साक्षी में मैंने यही वरदान उनसे प्राप्त किया है।"

विलक्षण साधना प्रक्रिया

गुरुदेव के अत्यन्त प्रियपात्र उस तरुण सिद्ध तपस्वी ने अपनी कठिन तांत्रोक्त बजरंग साधना का जो सरल विधान बताया, वह इस प्रकार है।

सर्वप्रथम प्राण प्रतिष्ठित **'हनुमान यंत्र'** को प्राप्त कर लें, किसी मंगलवार की रात्रि में स्वयं स्नान कर लाल रंग का शुद्ध वस्त्र पहन हनुमान यंत्र को बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा कर उस पर सिन्दूर छिड़क कर स्थापित कर दें, दक्षिण दिशा की ओर आपका मुख हो।

पहले गुरु ध्यान कर वीर मुद्रा में बैठ कर घी का दीपक जलायें और सामने स्थापित हनुमान यंत्र को स्नान करा कर उस पर तेल मिश्रित सिन्दूर का लेपन करें, स्वयं भी सिन्दूर का तिलक करें तथा लाल पुष्प और कोई भी फल नैवेद्य रूप में समर्पित करें। तत्पश्चात् मंत्रसिद्ध 'मूंगा माला' से निम्नलिखित मंत्र का 21 माला मंत्र जप करें —

मंत्र

।। ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय हनुमते नमः।।

OM NAMO BHAGVATE ANJANEYAY MAHABALAY HANUMATE NAMAH

जप समाप्ति पर वहीं लाल बिछौने पर शयन करें। यही क्रम 11 दिनों तक नित्य दोहरायें तथा नैवेद्य को स्वयं ग्रहण करें। यथासम्भव मौन रहें तथा प्रयोग को भी गोपनीय ही रखें। पूर्ण एकनिष्ठ भाव व विश्वास के साथ साधना सम्पन्न करने पर अंतिम दिन बजरंग बली प्रसन्न होकर स्वयं दर्शन देते ही हैं तथा सभी विपदाओं का शमन करते हुए पूर्ण सुरक्षा प्रदान करते हैं।

हनुमान साधना के आवश्यक नियम

- हनुमान साधना में शुद्धता अनिवार्य है।
- लाल पुष्प यथा कमल, गुड़हल आदि को ही अर्पित करें।
- नैवेद्य में प्रातः पूजन में गुड़, लड्डू; दोपहर में गुड़, घी और गेहूं की रोटी का चूरमा तथा रात्रि में आम, अमरूद या केले का नैवेद्य चढ़ायें।
- इस साधना में घी की एक या पांच बत्तियों वाला दीपक जलायें।
- पूर्ण साधना काल में अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य ही करें।
- मंत्र जप करते समय दृष्टि सदैव यंत्र पर ही टिकी रहे।
- 'हनुमान दीक्षा' प्राप्त कर साधना में प्रवृत्त होने पर प्रथम बार में ही इष्ट के साक्षात् जाज्वल्यमान स्वरूप से साक्षात्कार सम्भव है। साथ ही इस साधना अवधि में किसी प्रकार की विघ्न-बाधा अथवा भयावह स्थिति उत्पन्न नहीं होती।
- साधना काल में एकान्तवास तथा मौन अत्युत्तम है।
- शारीरिक अथवा मानसिक रोगों की समाप्ति के लिए उसी प्रकार का संकल्प मंत्र जप से पहले अवश्य ले लेना चाहिए।

मात्र 11 दिनों तक नियम पूर्वक किया गया यह विलक्षण प्रयोग अतुलनीय बल, पराक्रम व निष्काम सेवा भक्ति के भाव से साधक को आप्लावित कर उसे जीवन के उच्चतम सोपान पर प्रतिष्ठित कर देता है।

न्यौछावर — 280/-

तांत्रोक्त हनुमत कल्प

महाशैलं समुत्पाट्य, धावतं रावणं प्रति।
तिष्ठ तिष्ठ रणे दुष्ट, घोर-रावत् समुत्सृजन् ।।
लाक्षा-रसारुणं रौद्रं कालान्तक यमोपमम्,
ज्वलदग्नि लसन्नेत्रं, सूर्य कोटि समप्रभम् ।
अंगदाद्यैर्महा-वीरैर्वेष्टितं रुद्र-रूपिणम् ।।

अर्थात् सभी प्रकार के शत्रुओं का नाश करने वाले, अपने भक्तों की पुकार सुनकर अत्यन्त क्रोधमय स्वरूप धारण कर लेने वाले, युद्ध भूमि में श्री हनुमान लाक्षा रस के समान रक्त-वर्णीय एवं कालान्तक हो गये हैं,उनके दोनों नेत्रों से क्रोधाग्नि निकल रही है और उनका शरीर कोटि-कोटि सूर्यों की तेजस्विता के समान उज्ज्वल प्रतीत हो रहा है। रुद्र रूपी हनुमान अंगदादि महावीर गणों से घिरे हुए, घोर गर्जना करते हुए, महाशैल को उखाड़ कर रावण की ओर दौड़े और उसे ललकारते हुए कहा—ठहर जा रावण! युद्ध से पलायन मत कर। ऐसे ही वीर हनुमान सभी संकटों से हमारी रक्षा करें।

अंजनी पुत्र हनुमान अतुलनीय पराक्रमी और सर्वाधिक साहसी हैं। इनकी साधना-आराधना करने से समस्त दुष्ट शक्तियां, प्रेत बाधाएं तथा जीवन में आने वाली सभी परेशानियां स्वतः समाप्त हो जाती हैं।

श्री हनुमान को बजरंग बली, महावीर और पवनपुत्र भी कहा जाता है। इनकी साधना तो स्वयं महाप्रभु श्रीकृष्ण ने अर्जुन से सम्पन्न करवायी थी। कृष्ण ने अर्जुन को "**हनुमतकल्प**" का तांत्रोक्त विधान समझाते हुए कहा था कि यदि तुम पवनपुत्र की कृपा प्राप्त कर लोगे तो रणभूमि में ही नहीं, अपितु जीवन के किसी भी विपत्ति भरे क्षण में भी विजय व यश तुम्हें ही प्राप्त होगा।

वैसे तो श्री हनुमान जन-जन के मानस में व्याप्त

हैं ही, क्योंकि प्रायः देखा गया है कि जब भी किसी पर थोड़ा सा भी संकट आता है, तो वह अपने आप हनुमान चालीसा का पाठ करने लगता है। यहां तक कि यदि छोटा सा बच्चा भी अकेले कहीं से गुजर रहा हो, सुनसान रास्ता हो या हल्का अंधकार हो तो वह भी जोर-जोर से बोलने लगता है—"भूत पिशाच निकट नहीं आवे. . . "

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि हनुमान हमारे जीवन में, साहस के सम्बल के रूप में प्रतिक्षण साथ-साथ रहते ही हैं।

इन्हीं श्री हनुमान की साधना का **"तांत्रोक्त हनुमत कल्प"** हमें प्राप्त हुआ पूज्य गुरुदेव द्वारा। जब हम सभी लोग सम्पूर्ण भारत-वर्ष की यात्रा कर, अन्त में आध्यात्मिक नगरी काशी में पहुंचे। वहां पर "संकट मोचन मंदिर" में पूज्यपाद गुरुदेव ने अत्यन्त कृपा कर, संकट नाशक श्री हनुमान की साधना सम्पन्न करायी। उस दिन सौभाग्यवश मैं भी वहां था, और मैं उस समय बहुत अधिक उल्लसित हुआ, जब उन्होंने इस अत्यधिक गोपनीय साधना को सम्पन्न कराने की घोषणा की, क्योंकि मैं तो अपना इष्ट हनुमान जी को ही मानता हूं। उन्होंने मेरे जीवन में आने वाली अनेक बाधाओं और परेशानियों से मुक्ति दिलाई है।

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व गुरुदेव ने इस साधना में ध्यान रखने योग्य सावधानियों का वर्णन किया, जिसे उस समय मैंने अपनी डायरी में लिख लिया था। उस ज्ञान से सभी लाभ प्राप्त कर सकें, अतः उसे यहां प्रस्तुत कर रहा हूं—

१. हनुमान साधना यदि अनुष्ठान के रूप में करें तो पूरे साधना काल में पूर्णतः ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।
२. **"हनुमान विग्रह या यंत्र"** जिस पर भी साधना सम्पन्न की जाए उसे जल और पंचामृत से स्नान कराने के उपरान्त तिल के तेल में सिन्दूर मिलाकर लगाना चाहिए।
३. हनुमान साधना में लाल पुष्प, लाल वस्त्र तथा लाल आसन का प्रयोग करना चाहिए।
४. नैवेद्य के रूप में गुड़ और रोटी का चूरमा अथवा बेसन के लड्डू चढ़ाने का विधान है।
५. यह साधना दक्षिणाभिमुख होकर सम्पन्न करनी चाहिए।
६. श्री हनुमान जी की साधना स्त्री, पुरुष, बालक कोई भी कर सकता है। यह किवदन्ति है कि स्त्रियों को हनुमान साधना नहीं करनी चाहिए, यह अत्यधिक भ्रामक है। हां! यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि रजस्वला स्त्री यह साधना न करे और ना तो उस कक्ष में ही जाए जहां हनुमान अनुष्ठान हो रहा हो।
७. इनकी उपासना प्रातः, सांय अथवा रात्रि में जब भी व्यक्ति को अवसर मिले कर सकता है।
८. हनुमान उपासना में चरणामृत नहीं चढ़ाया जाता है।
९. इन्हें तुलसीदल अत्यधिक प्रिय है, अतः तुलसी की पत्ती चढ़ाते हैं।
१०. हनुमत कल्प प्रयोग के लिए मंगलवार का दिन अत्यधिक उपयुक्त होता है।

इस प्रकार सावधानियों से अवगत कराकर, गुरुदेव ने हमें एक अत्यधिक गोपनीय मंत्र दिया और उसके प्रयोग की विधि निम्न प्रकार से स्पष्ट की—

अपने सामने लाल वस्त्र बिछाकर **"संकट निवारक यंत्र"** स्थापित करें और तिल के तेल में सिन्दूर मिलाकर यंत्र पर आठ बिन्दियां लगायें। फिर ध्यान करें-

अतुलित बलधामा हेमशैला भ देहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामाग्रगण्यम्।
सकलगुण निधान वानराणामधीशं
रघुपति प्रियभक्तं वातजातं नमामि।

इस प्रकार मंत्र बोलकर मन में यह भावना लायें कि श्री हनुमान की दिव्य और बलवान शक्तियां मेरे हृदय व शरीर में प्रवेश कर रही हैं। मेरे चारों तरफ के अणु उत्तेजित हो, सशक्त वातावरण का निर्माण कर रहे हैं और मेरी मनः शक्ति को बढ़ा रहे हैं।

फिर मूलमंत्र का उच्चारण करते हुए आठ लाल पुष्प अर्पित करें। फिर अपनी परेशानियों को नम्रता पूर्वक बोलते हुए उन से मुक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करें। तत्पश्चात **"रक्तवर्णीय माला"** द्वारा निम्न मंत्र का आठ माला मंत्र जप सम्पन्न करें—

मंत्र

ॐ हुं हुं हनुमतये फट्

साधना ९ अप्रैल ९५ को प्रारम्भ करें, यह मात्र एक दिवसीय प्रयोग है, किन्तु लगातार आठ दिन तक उस यंत्र पर पुष्प अर्पित करें तथा तेल का दीपक प्रज्वलित करें। फिर अपनी दैनिकचर्या सम्पन्न करें। नौवें दिन यंत्र तथा माला को किसी तालाब, कुंए या नदी में विसर्जित कर दें।

इस प्रकार हनुमत कल्प प्रयोग सम्पन्न करने वाले साधक के जीवन में विघ्न, धन, राज्यबाधा और शत्रुबाधा समाप्त हो जाती है, तथा जो कुछ भी साधक की इच्छा होती है, उसे वह वर प्राप्त होता ही है। ❑

हनुमान साधना

नासय रोग हरे सब पीरा

सेवा की प्रतिमूर्ति के रूप में यदि किसी का नाम लिया जा सकता है तो वह निःसन्देह श्री हनुमान है, जिन्होंने स्वयं देव स्वरूप होते हुए भी दास के रूप में प्रतिष्ठित होना ही अपना सौभाग्य माना। इतिहास में ऐसा कोई दूसरा उदाहरण है ही नहीं और इसका प्रतिफल उन्हें इस प्रकार से मिला कि वे अपने इष्ट से भी अधिक पूजनीय एवं वन्दनीय हो गए। वस्तुतः उनके इस प्रकार से पूजनीय होने के मूल में उनके इष्ट भगवान श्री राम का ही आशीर्वाद छिपा है।

इस सम्बन्ध में पुराणों में कथा मिलती है कि जब भगवान श्री राम वर्तमान रामेश्वरम नामक स्थान पर शिवलिंग की स्थापना करने को तत्पर हुए तब उन्होंने श्री हनुमान को उचित शिवलिंग की खोज करने को भेजा किन्तु विलम्ब होने के कारण उचित मुहूर्त निकलता हुआ देख बालुका शिवलिंग की ही स्थापना कर दी। उधर भगवान श्री हनुमान जब अपनी तपस्या के द्वारा भगवान शिव को प्रसन्न कर उन्हीं के द्वारा दिया गया शिवलिंग लेकर उपस्थित हुए, तो पाया कि वहां तो शिवलिंग की स्थापना हो चुकी है, यह देखकर उन्हें अत्यन्त दुःख पहुंचा किन्तु भगवान श्री राम ने उन्हें धैर्य दिया कि उनके द्वारा लाया गया शिवलिंग भी वहीं स्थापित किया जाएगा और उसका नाम होगा हनुमदीश्वर शिवलिंग। साथ ही उन्होंने यह भी वरदान दिया कि इस हनुमदीश्वर शिवलिंग के दर्शन के उपरान्त ही रामेश्वर शिवलिंग का दर्शन करना पुण्यदायक सिद्ध होगा। आज भी रामेश्वरम में यही परम्परा है कि पहले हनुमदीश्वर शिवलिंग का दर्शन किया जाता है, इसके उपरान्त ही मूल रामेश्वर शिवलिंग की अर्चना-पूजा की जाती है।

कालांतर में भगवान श्री हनुमान के इष्ट एवं स्वामी द्वारा दिया गया वरदान केवल उनके द्वारा स्थापित शिवलिंग तक ही सीमित नहीं रहा वरन् स्वयं भगवान श्री हनुमान के जीवन में भी उतर आया और भगवान श्री राम से भी पूर्व हनुमान की पूजा की ऐसी पद्धति प्रारम्भ हो गई जो

आज तक अक्षुण्ण है। **स्कन्द पुराण** में भगवान श्री राम ने स्पष्ट कहा है कि मेरे द्वारा किया गया प्रत्येक कर्म तुम्हारे (अर्थात् हनुमान) द्वारा किया गया कर्म है एवं तुम्हारे द्वारा किया गया प्रत्येक कर्म मेरे द्वारा किया गया कर्म है।

भगवान श्री हनुमान का रहस्य अत्यन्त विशाल है और उनकी पूजा पद्धति अपने-आप में कई-कई अर्थ समेटे है। भगवान श्री हनुमान की उपासना का तात्पर्य है साक्षात् भगवान श्री राम के इष्ट भगवान शिव की ही उपासना क्योंकि भगवान श्री हनुमान मूलरूप में रुद्र स्वरूप जो हैं। इसी कारणवश उनका स्वरूप इतना अधिक तेजस्वी, प्रखर है।

यों तो भगवान श्री हनुमान का पूजन एवं उनके प्रति जो श्रद्धा-भावना है उसकी जनसामान्य के मध्य कोई सीमा ही नहीं है, किन्तु इसी श्रद्धा-भावना के साथ जब साधक उनके नियम पूर्वक साधना भी सम्पन्न कर लेता है तो स्वयं निरोगी सबल बनकर भय-बाधा, अनिष्ट-बाधा से, सर्वथा मुक्त होकर अपना जीवन मंगलमय बना लेता है। **रोग निवारण एवं अनिष्ट निवारण के लिए भगवान श्री हनुमान की साधना से उपयुक्त कोई अन्य साधना मानी ही नहीं गई।** जिसको भी भगवान श्री हनुमान के अन्दर समाए तेज, बल का आभास प्राप्त करना हो, उसे चाहिए कि वह कहीं एकान्त में वीर मुद्रा अथवा वज्रासन मुद्रा में बैठकर उनके बीज मंत्र "हुं" का घोष निरन्तर पांच मिनट तक पूरी शक्ति से कर ले। यदि वह ऐसा नित्य पांच मिनट भी कर ले तो सारे चेहरे और शरीर की आभा ही बदल जाती है और एक विचित्र प्रकार का ओज व लालिमा झलक उठती है।

शास्त्रों में भगवान श्री हनुमान से सम्बन्धित अनेक साधनाएं वर्णित की गई हैं, जो अलग-अलग परिस्थितियों को ध्यान में रखकर रची गई हैं। यह उनकी विराटता और उनके वरदायक स्वरूप का ही उदाहरण है। शत्रु भय हो अथवा आकस्मिक राज्य बाधा अथवा भूत-प्रेत आदि का प्रकोप, प्रत्येक स्थिति के लिए अलग-अलग ढंग से मंत्रों व होम की व्यवस्था बनाई गई है। इन्हीं सैकड़ों प्रयोगों में से रोग निवारण के सम्बन्ध में

कैसी भी असाध्य पीड़ा हो, जटिलता हो भगवान श्री हनुमान की आराधना युगों युगों से परीक्षित विधि रही है। हनुमान बाहुक नामक स्तोत्र भगवान श्री हनुमान की इसी विशेषता पर आधारित है।

एक अचूक मंत्र का उल्लेख मिलता है, जिसका प्रयोग यदि किसी रोग के लिए किया जाए तो रोगी लाभ प्राप्त करता ही है। भगवान श्री हनुमान तो रोगनाशक एवं स्वास्थ्य प्रदाता दोनों ही रूपों में सदा से पूजनीय रहे हैं। **यहां तक वर्णन मिलता है कि रामचरितमानस के रचयिता श्री गोस्वामी तुलसीदास की बांह में जब असह्य पीड़ा हुई तब उन्होंने अपने इष्ट श्री हनुमान की उपासना में एक पूरा काव्य 'हनुमान बाहुक' रचा तथा असाध्य पीड़ा से मुक्ति प्राप्त की।**

प्रस्तुत लेख में जिस साधना का वर्णन दिया जा रहा है वह भगवान श्री हनुमान के प्रिय दिवस किसी भी मंगलवार को की जा सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि साधक के पास भगवान **श्री हनुमान का प्राण-प्रतिष्ठित चित्र** एवं **ताम्र पत्र पर अंकित मंत्र-सिद्ध हनुमान यंत्र** अवश्य हो। यदि साधक स्वयं किसी कारणवश प्रयोग सम्पन्न कर सकता है तो उसके नाम का संकल्प लेकर कोई अन्य साधक भी उसके लिए यह साधना कर सकता है। मंगलवार की रात्रि में दस बजे के आस-पास लाल वस्त्र बिछाकर पूर्वमुख होकर बैठ जाए, स्वयं के वस्त्र भी लाल हों और सामने बिछा कपड़ा भी लाल रंग का हो। यंत्र को चावलों की ढेरी पर स्थापित कर यथासम्भव लाल पुष्प चढ़ाकर गुड़ एवं घी का मिला हुआ भोग लगाए। यह ध्यान रखने की बात है कि हनुमान साधना में सुगन्धित द्रव्य आदि का प्रयोग कदापि नहीं किया जाता है, साथ ही ब्रह्मचर्य का पालन अत्यन्त दृढ़ता से करे। यह तीन दिवसीय प्रयोग है और उचित यह माना गया है कि साधक इन तीनों में केवल दुग्ध एवं फल ही ग्रहण करे, भूमि शयन करे और यथासम्भव कम-से-कम वार्तालाप करे।

यंत्र का पूजन, धूप आदि के बाद **चैतन्य मूंगा माला** से निम्न मंत्र का एक सौ आठ बार उच्चारण करें।

मंत्र

ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय महाबलाय स्वाहा

मंत्र-जप के उपरान्त रात्रि शयन वहीं पर करे और ऐसा नित्य तीन दिन तक करे। तीन दिन के बाद साधक माला को अपने गले में धारण कर ले, जबकि यंत्र को गुप्त दान के साथ कहीं भेंट कर दें। यदि साधक को किसी प्रकार की प्रेत बाधा होती है और इस कारण उसका स्वास्थ्य गड़बड़ बना रहता है तब भी यह प्रयोग पूर्ण सफलतादायक सिद्ध होता है।

के समान हैं, सर्वकाम पूरक हैं, संकट रूपी प्रलयघनघटा को विदीर्ण करने वाले और सर्वव्यापी हैं, ऐसे देव की साधना-उपासना करना ही सर्वश्रेष्ठ सौभाग्य की प्राप्ति है।

हनुमान साधना करने से साधक को निम्न लाभ प्राप्त होते हैं -

1. भगवान हनुमान की साधना करने पर साधक को बल, बुद्धि, वीर्य प्राप्त होने लगता है।
2. उसे साधना में संलग्न रहने पर समस्त लौकिक व परालौकिक सिद्धियां प्राप्त होने लग जाती है।
3. रोगों का शमन होता है।
4. मानसिक दुर्बलता की स्थितियों में उनसे सहायता प्राप्त होती है।
5. अहंकारियों का गर्व समाप्त हो जाता है।

उपरोक्त फलों से फलीभूत कर देने वाली साधना सभी साधकों के सुख-लाभार्थ के लिए आवश्यक सिद्ध होती है तथा समस्त संकटों का विध्वंस करने में सहायक है।

साधना विधान

सर्वप्रथम साधक तारक मंत्र से प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य **''हनुमान सिद्धि यंत्र''**, **''मूंगा माला''** एवं ''हनुमत् कल्प'' प्राप्त कर लें।

इस साधना को **किसी भी मंगलवार या शनिवार** से प्रारम्भ किया जा सकता है। यह साधना प्रातः 4 बजे से 7 बजे के मध्य एवं सांय 6 बजे से रात्रि 10 बजे से मध्य सम्पन्न कर लेनी चाहिए। साधना काल में ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए भूमि पर शयन करें। शुद्ध एवं सात्विक आहार एक समय ग्रहण करें। यह तीन दिवसीय साधना है।

साधना प्रारम्भ करने के लिए साधक लाल अथवा संतरी रंग की धोती पहिनें और ऊपर गुरुनामी चादर ओढ़ कर, पीले रंग के आसन पर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख कर बैठ जाए। अपने सामने एक चौकी या लकड़ी के बाजोट पर पर लाल रंग का वस्त्र बिछा कर किसी भी ताम्र अथवा स्टील के पात्र में रंगे हुए चावलों की ढेरी पर **''हनुमान सिद्धि यंत्र''** स्थापित कर लें। यंत्र के समीप गुरु चित्र भी स्थापित कर लें। इसके पश्चात् साधक साधना में सफलता हेतु गुरु का स्मरण करते हुए गुरु-चित्र का संक्षिप्त पूजन करें एवं 4 माला गुरु मंत्र जप अवश्य कर लें। गुरु से साधना में सफलता एवं पूर्णता का आशीर्वाद प्राप्त करने के पश्चात् यंत्र का पंचामृत से स्नान करायें एवं धूप, दीप, पुष्प, अक्षत आदि समर्पित करें। यंत्र के चारों कोनों में चार बिन्दियां लगाकर यंत्र-पूजन करें।

इसके पश्चात् **''मूंगा माला''** से मंत्र की 5 माला जप करें। जप करते समय हनुमत् कल्प को अपने बायें हाथ में दबायें रखें, जिससे किसी भी प्रकार की विघ्न-बाधा साधना काल में साधक पर प्रभावी न हो सके।

मंत्र

॥ ॐ हुं हुं हुसौः हनुमते हुं ॥

इस साधना में साधक को मूल मंत्र का प्रतिदिन 5 माला मंत्र जप करना चाहिए। मंत्र जप समाप्ति के पश्चात् बेसन के लड्डू का भोग श्री हनुमान जी को लगायें और प्रसाद को वितरित कर दें।

ध्यान रखें, साधना काल में तीनों दिन तक तेल का दीपक लगातार जलता रहे। तीन दिन के पश्चात् यंत्र व माला अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें, एवं 21 दिन तक उक्त मंत्र का जप एक माला प्रतिदिन करें, तथा 21 दिन के पश्चात् यंत्र व माला किसी नदी अथवा तालाब में प्रवाहित कर दें। प्रतिदिन साधना के पश्चात् हनुमान आरती एवं गुरु आरती सम्पन्न करें।

निश्चय ही यह साधना उन व्यक्तियों के लिए अत्यन्त ही लाभप्रद सिद्ध होगी, जो अपने आप को शारीरिक एवं मानसिक रूप से दुर्बल समझते हैं। जिनका घर भूत-प्रेत बाधा से एवं तंत्र-प्रयोग से ग्रसित हो, ऐसी स्थिति में साधक इस साधना को सम्पन्न कर, अपने घर को तथा अपने आप को पूर्ण दोष मुक्त बना सकते हैं। यदि किसी साधक ने हनुमान दीक्षा ग्रहण नहीं कर रखी है तो उसे सवा पांच लाख मंत्र-जप का अनुष्ठान

करना होगा। दीक्षा प्राप्त साधक के लिये सवा लाख मंत्र जप का अनुष्ठान ही सर्व सिद्धि प्रदायक होगा। इस साधना से सर्व सिद्धि प्रदायक महावीर हनुमान के साक्षात् जाज्वल्यमान दर्शन प्राप्त होते ही हैं।

साधना सामग्री - 360/-

*** ** *** ** ***

कृष्ण साधना

यह भगवान श्रीकृष्ण से सम्बन्धित प्रारम्भिक साधना है। भगवान श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण स्वरूप **'क्लीं'** स्वरूप होने के कारण एक प्रकार से आवश्यक ही होता है कि साधक इस प्रारम्भिक साधना को अवश्य ही करे। जीवन की प्रत्येक सौन्दर्य साधना का मूल भी यही साधना है और इस साधना को रात्रि में सम्पन्न करने पर साधक को अवश्य ऐसी प्रबलता मिल जाती है जिससे वह स्वयं रूप-सौन्दर्य के साथ-साथ एक विचित्र प्रकार के सम्मोहन से भरे चुम्बकत्व को प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है।

भगवान श्री कृष्ण का रोम-रोम इस **'क्लीं'** कामबीज से इस प्रकार आबद्ध था, जिससे उन्हें कुछ करने की अथवा किसी पर अपना प्रभाव डालने की आवश्यकता शेष नहीं रह जाती थी। व्यक्ति स्वतः उनका प्रशंसक और अनुयायी हो जाता था। केवल मनुष्य ही नहीं पशु-पक्षी भी, केवल उनके मित्र पांडव ही नहीं, उनके विरोधी कौरव भी उनके आकर्षण में समान रूप से बंधे थे।

इस साधना के लिए आवश्यक है कि साधक के पास ताम्र पत्र पर अंकित प्रामाणिक **'क्लीं मंत्र'** अवश्य हो, जो विशेष मंत्रों से मंत्र-सिद्ध हो तथा सहयोगी रूप में **कामकला माला** हो। इन दोनों सामग्रियों को अपने समक्ष पीले वस्त्र पर स्थापित कर दें, पीले वस्त्र धारण करें और पीले आसन पर पश्चिम की ओर मुख करके बैठें। सामने राधा-कृष्ण का संयुक्त चित्र स्थापित करें और कक्ष को सुसज्जित करें। यथासंभव रात्रि के दस बजे के बाद ही यह साधना प्रारम्भ करें। तदुपरान्त भोज पत्र पर अष्टदल कमल बनाकर उसके प्रत्येक दल में केसर से काम गायत्री के मंत्र को अंकित करें तथा मध्य में **'क्लीं'** बीज अंकित करें।

काम गायत्री मंत्र

॥ कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि तन्नोऽनंगः प्रचोदयात् ॥

यह भी यंत्र ही है और इसका भी पूजन साधक **'क्लीं यंत्र'** के साथ करे। घी का दीपक लगाएं और सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्जवलित करें। यंत्र, चित्र, माला आदि का पूजन केसर, पुष्प की पंखुड़ियों व अक्षत से कर, **कामकला माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें।

॥ ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा ॥

मंत्र जप के उपरान्त कुछ देर वहीं स्थिर चित्त बैठे रहें और भावना करें कि इस तेजस्वी मंत्र का प्रभाव आपके रोम-रोम में व्याप्त हो रहा है, यदि संभव हो तो रात्रि शयन भी वहीं करें। दूसरे दिन प्रातः जल्दी उठकर ताम्र पत्र पर अंकित 'क्लीं' यंत्र एवं कामकला माला किसी पवित्र सरोवर में विसर्जित कर दें, जबकि भोजपत्र पर अंकित यंत्र को ताबीज में भर कर दाहिनी भुजा में अथवा गले में धारण कर लें। साधक कुछ समय के बाद ही अपने रोम-रोम में होने वाले परिवर्तन और लोगों के व्यवहार में परिवर्तन देखकर खुद ही साधना की अनुकूलता को समझ सकता है, यद्यपि यह साधना वर्ष में कभी भी की जा सकती है, किन्तु जन्माष्टमी के अवसर पर करने से इसके प्रभाव में अतिरिक्त तीव्रता और तीक्ष्णता उतर आती है।

साधना सामग्री पैकेट - 260/-

*** ** *** ** ***

काली साधना

मेरा अनुभव तो यह है, कि हम चाहे शैव हों, चाहे वैष्णव हों, चाहे शाक्त हों अथवा किसी भी धर्म को मानने वाले हों, किन्तु यदि हमारे जीवन में महाकाली साधना नहीं है, तो जीवन अपने आप अपूर्ण और न्यून है। हमारे जीवन में यदि महाकाली का स्वरूप अंकित नहीं है, तो जीवन भयग्रस्त है। यदि हमें महाकाली का मंत्र स्मरण नहीं है, तो हम हर समय भय से आक्रांत रहते हैं। इन सभी दृष्टियों से यह मंत्र, यह साधना, यह विधि अपने-आप में पूर्ण श्रेष्ठ, अद्भुत और तेजस्वी है।

इस साधना विधि को आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। आप में से प्रत्येक इस साधना को सम्पन्न करे, आप खुद देखेंगे, कि आपको पहले ही दिन से कितनी अनुकूलता प्राप्त होती है। यह एक ऐसी विशिष्ट क्रिया है, जिसके माध्यम से आदमी एकदम से उस ऊंचाई पर पहुंच जाता है, जहां पहुंचने में कई वर्ष लगते हैं। यह एक ऐसी साधना है, जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है - वह चाहे अमीर हो, चाहे गरीब हो।

जबकि घर ही व्यक्ति का आश्रय स्थल, उन्नति का मूल और विश्राम का स्थान होता है।

नवरात्रि के अवसर पर गृहस्थ जीवन के सबसे महत्वपूर्ण पक्ष गृह से सम्बन्धित एक आवश्यक विवरण व सम्बन्धित साधना।

यद्यपि शीर्षक थोड़ा अटपटा सा लग सकता है क्योंकि किसी स्त्री या पुरुष के इतर योनि द्वारा ग्रस्त होने की समस्या तो सुनने में आती है, लेकिन घर भी ग्रसित हो सकता है या अभिशप्त हो सकता है, इसका आभास बहुत कम लोगों को ही हो पाता है। किन्तु ऐसा होता है अवश्य, और इसका ज्ञान सामान्य रूप से नहीं हो पाता क्योंकि जिन प्रभावों के कारण गृह दूषित हो जाता है या दूषित करवा दिया जाता है वही प्रवृत्तियां या दुष्ट आत्माएं गृह में रहने वाले व्यक्तियों की मानसिकता को इस प्रकार परिवर्तित कर देती हैं कि मूल कारण का पता कभी चल ही नहीं पाता।

यदि विश्व साहित्य के पन्ने पलटें तो इस सम्बन्ध में एक से एक अद्भुत घटनाएं भरी पड़ी हैं, जहां कोई मकान या विशाल भवन इस प्रकार से दूषित हुआ, जिसके कारण अनेक लोग अपने प्राण तक गंवा बैठे। ऐसे अभिशप्त मकानों की सूची बहुत बड़ी है, और सामान्य घर ही नहीं विश्व प्रसिद्ध महल और भवन भी इस श्रेणी में आते हैं। इंग्लैंड का विन्सडर पैलेस या अमेरिका का व्हाइट हाउस ऐसे स्थान हैं, जहां इसमें रहे अनेक व्यक्तियों की आत्माएं आज भी विचरण करती हुई देखी गई हैं। इंग्लैंड का ही बोरसवर्थ हाउस, टॉवर आफ लंदन भी इस प्रकार अजीबो गरीब घटनाओं के कारण विश्वविख्यात हो चुके हैं, जहां कभी कोई आत्मा आती है और पहरेदार के शरीर के आर-पार निकल जाती है या घोड़े पर बैठा हुआ कोई प्राचीन राजकुमार दिखाई पड़ने लगता है, कभी अचानक घंटियां बजने लगती हैं या ऐसी ही अनगिनत घटनाएं।

किन्तु जहां सामान्य जीवन की बात आती है वहां इस तरह की बातों की कौतूहल पूर्ण अथवा रोमांचक घटना समझकर चर्चा नहीं की जा सकती। क्योंकि ऐसी स्थिति में सारे परिवार का भविष्य, उसकी सुरक्षा, अस्तित्व और उन्नति का मार्ग संकट में पड़ जाता है। मैंने अपने जीवन में इस प्रकार के अनेक घरों को देखा है, जो किसी न किसी कारणवश अभिशप्त हो गए और उनमें रहने वाले व्यक्ति विचित्र दशाओं में गुजरने को बाध्य हुए। आश्चर्य तो यह है कि उन्हें फिर भी नहीं लगा कि वे ऐसा सब कुछ अपने घर की दूषितता या जिस भूमि पर वह मकान बना है उसकी अपवित्रता के कारण भोगने को विवश हुए हैं।

मैं बहुत पहले एक घर में किरायेदार के रूप में रहा और उस घर में आने के एक सप्ताह के भीतर ही भीतर अनुभव करने लगा कि न जाने क्यों मेरा चित्त उचाट रहता है, न साधना में मन लगता है न सामान्य जीवन में, और प्रत्यक्षः इसका कोई भी कारण समझ में नहीं आ रहा था। मैंने स्थान परिवर्तन से उत्पन्न हुआ प्रभाव समझकर विशेष ध्यान नहीं दिया, लेकिन कुछ दिन बाद अनुभव करने लगा कि मेरी यथास्थान रखी वस्तुएं कभी गुम हो जाती हैं, तो कभी कहीं और रखी मिलती हैं, जबकि ऐसा होने के पीछे कोई भी तर्कसंगत कारण नहीं था। स्थिति यहीं तक रहती शायद तब भी मैं शंकित न हो पाता किन्तु धीरे-धीरे मैंने अनुभव करना प्रारम्भ किया कि जिस समय मैं साधना में बैठता हूं, तो उस समय मेरे चारों ओर काली परछाइयां डोलने लगती हैं, घर की निचली मंजिल में होने के कारण मैंने प्राकृतिक रोशनी का अभाव समझ कर ट्यूबलाइट भी लगवा ली, लेकिन स्थिति ज्यों की त्यों रही। परिवर्तन होना तो दूर उल्टे मानसिक व्यग्रता और विरोधी व अत्यन्त अश्लील विचारों की प्रबलता दिन पर दिन बढ़ने लगी। मैंने दबे स्वर से मकान मालिक एवं उनकी पत्नी से घर के बारे में और जिस भूमि पर वह बना था घुमा फिराकर कोई सूत्र पाना चाहा लेकिन वे चुप्पी साधे रहे।

जहां मैं यह भी उल्लेख करना चाहूंगा कि मेरे मकान मालिक महोदय निःसंतान थे तथा पूर्ण स्वस्थ होते हुए भी अचानक पक्षाघात से पीड़ित होकर वर्षों से बिस्तर पर पड़े थे।

एक दिन अचानक मुझे अपने दूध देने वाले ग्वाले से बातों बातों में पता चला कि जिस स्थान पर यह घर बना, वह कभी कब्रिस्तान था, जिस कमरे में मेरा साधना कक्ष था, ठीक उसी स्थान पर खुदाई करते समय एक कब्र भी निकली थी, किन्तु मकान मालिक महोदय ने लालचवश वहां भी एक कमरा बनवा दिया। बाद में उत्पात व प्रकोप बढ़ जाने पर उन्होंने एक मुसलमान फकीर के कहने पर उस कमरे में एक आला बनवा दिया था। उस ग्वाले की बातों में तर्कसंगतता थी क्योंकि वास्तव में मेरे साधना कक्ष में आला बना हुआ था, जिसकी वहां कोई आवश्यकता भी नहीं थी और जहां वह घर बना था, उससे थोड़ी ही दूरी पर आज भी कब्रिस्तान है ही। हो सकता है कभी जमीन को किसी ने गलत ढंग से बताकर बेचा हो या मकान मालिक महोदय ने कौड़ियों के भाव मिलने के कारण खरीद लिया हो।

धन, सम्पत्ति, घर से अत्यधिक मोह, लगाव और उससे कभी भी अलग न होने की कल्पना व्यक्ति को मृत्यु के उपरान्त भी उसी स्थान पर रहने के लिए विवश कर देती है और तब उसकी उपस्थिति का आभास हल्की पदचाप, वस्त्रों की सरसराहट, हल्के खांसने की आवाज या जैसे कोई पीछे पीछे चल रहा है आदि से होता है।

मैं एक ऐसे घर में रहा, जिसके मृत मकान मालिक को बार-बार स्नान करने की आदत थी और रात्रि में या कई कई बार दिन में भी मकान के बाथरूम में स्पष्ट रूप से लोटे की खड़खड़ाहट, पानी की धार के गिरने की आवाज, पानी का नाली से बहना स्पष्ट दिखाई पड़ता था, जबकि पूरा परिवार सो रहा था। एक बार तो मकान मालिक का पूरा परिवार दो महीने तक बाहर रहा लेकिन इस क्रम में कोई भी अन्तर नहीं पड़ा।

कई बार ऐसी आत्माएं पूरी तरह से निरापद और शांति प्रिय भी होती है, वे केवल मकान से अपने मोहवश मृत्यु के बाद भी सूक्ष्म रूप से वहां उपस्थित तो रहती है, लेकिन किसी को हानि पहुंचाने का प्रयास नहीं करती, जबकि अधिकांश स्थितियों में आत्माएं उग्र व क्रोधी हो जाती है, और अपनी गाढ़ी कमाई के मकान में किसी अन्य को रहते हुए नहीं देख सकती। यद्यपि मृत आत्मा चाहे वह शांत हो या उग्र उसकी सामान्य गतिविधि भी जीवित मनुष्य के होशो हवाश उड़ा देने के लिए काफी होती हैं।

इसी प्रकार की एक अन्य घटना है, जब मेरा एक अभिशप्त मकान से पुनः सामना पड़ा। मकान में आए लगभग एक माह हुआ था कि एक दिन रात में साढ़े ग्यारह-बारह के आस-पास धड़ाम से आवाज आई, मैंने दौड़कर देखा तो मेरा छोटा भाई अचेत पड़ा है। होश में आने पर उसने बताया कि वह सोते से उठकर लघुशंका करने जा ही रहा था कि उसने अपने सामने एक मझोले कद की आकृति को खड़े देखा, जिसने ब्रिटिश काल के फैशन वाला सूट व हैट पहिन रखा था तथा कुछ झुक कर अपनी जेब से जेबघड़ी निकाल कर चांदनी में देखने की कोशिश कर रहा था। मैंने छोटे भाई को दिलासा दी कि शायद नींद में एकाएक उठकर लघुशंका के लिए जाते समय कोई भ्रम अनुभव कर गए हो। यद्यपि उसके बाद वह मेरे साथ ही सोने लगा और उसने रात में उठना भी छोड़ दिया, किन्तु उसके हाव-भाव से लगता था कि उसने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया है।

इस घटना के लगभग पन्द्रह दिन बाद की ही बात है कि उस मकान के मालिक अपने पैतृक घर की देखभाल करने आए और बातों बातों में उनके परिवार के इतिहास की बातें चल पड़ी। वे अपना एलबम उठा लाए और हम दोनों भाइयों को दिखाने के लिए बैठ गए। पहले ही पृष्ठ पर वह आकृति विराजमान थी, जिसका परिचय कभी मेरे भाई ने मुझे दिया था और अब जिसका परिचय मकान मालिक अपने स्वर्गवासी पिता के रूप में दे रहे थे। मेरी व मेरे छोटे भाई की स्थिति जैसी हो गई थी, उसे शब्दों में नहीं बता सकता और कहना न होगा कि दो दिन के भीतर ही भीतर हम लोगों ने उस मकान से विदा लेने में अपनी भलाई समझी।

स्वयं अनुभूत घटनाओं के अतिरिक्त भी ऐसी कई बातें होती हैं, जहां व्यक्ति के विवरणों से पता लग जाता है कि वह एक अभिशप्त स्थान पर रह रहा है। घर में खटपट की ध्वनि, पदचाप होते रहना, घर के किसी विशेष भाग में जाते समय भय लगना, पीछे-पीछे किसी के चलने का आभास होना, घर में सदैव अंधेरा व मनहूसियत बनी रहना, मन का उदास रहना, किसी न किसी सदस्य का सदैव बीमार बने रहना अथवा परिवार के सदस्यों में रोज ही कलह होना, जैसे सामान्य लक्षण इस बात को प्रगट करते हैं। कभी-कभी यह स्थिति अत्यन्त उग्र व भयानक भी हो जाती है तथा उसमें निवास करने वाले व्यक्ति के प्राणों पर भी संकट बन आता है।

घर कोई ऐसा स्थान नहीं होता जिसे व्यक्ति बाजार से जब चाहे तब खरीद ले और जब चाहे तब बेच दे। मध्यम वर्ग हो या उच्च वर्ग व्यक्ति पूरे-पूरे जीवन भर प्रयास करके ही

अपने लिए रहने को स्थान निर्मित कर पाता है और यदि भूमि दोष, इतरयोनि दोष या अन्य किसी कारण से अभिशप्त हो जाए तो सिवाय इसके कि वह उसे सहते हुए जीवन जीता रहे, कोई अन्य मार्ग नहीं होता। किन्तु अभिशप्त घर में रहना भी किसी दुर्भाग्य से कम नहीं होता, स्वयं के लिए भी और अपनी संतानों के लिए भी। बुद्धिमत्ता तो इसी में होती है कि समय रहते निवारक प्रयोग सम्पन्न कर लिए जाए, उचित साधना का अवलम्बन ले लिया जाए।

साधना दिवसों में नवरात्रि का पर्व एक अत्यन्त तीव्र और सिद्ध दिवस माना गया है। इस दिवस से सम्बन्धित जो साधनाएं ही है तथा इसी दिवस से सम्बन्धित गृह रक्षा एवं गृह बाधा निवारण की जो साधना है मैं उसे यहां प्रस्तुत कर रहा हूं। कोई आवश्यक नहीं कि घर में जब दूषित प्रभाव दृष्टिगोचर हो तभी ऐसी साधना को सम्पन्न किया जाए। नवरात्रि तो एक ऐसा अवसर है जबकि इस साधना को विजय पूर्वक, उल्लास पूर्वक सम्पन्न करना चाहिए।

जहां तक गृह की रक्षा का सम्बन्ध है, गृह की रक्षा करने, घर का वातावरण मंगलमय बनाने, उसमें निवास करने वाले व्यक्तियों के शरीर का रक्षण करने एवं उसे भूत-प्रेतादि बाधाओं से मुक्ति दिलाने हेतु भगवान श्री हनुमान से श्रेष्ठ अन्य कोई साधना है ही नहीं। यों भी भगवान श्री हनुमान रुद्र स्वरूप होने के कारण अत्यन्त सरल एवं शीघ्र प्रसन्न होने वाले देव हैं, साथ ही भूत प्रेत आदि के स्वामी भी हैं। जिस घर में भी एक बार भगवान श्री हनुमान का प्रवेश हो जाता है और नियमित साधना के द्वारा उनकी सूक्ष्म उपस्थिति को स्थायी रखा जाता है वहां भविष्य में भी कोई भूत प्रेतादि प्रकोप व्याप्त रह ही नहीं सकता। साधकों को चाहिए कि वे ऐसे श्रेष्ठतम मुहूर्त का लाभ भगवान श्री हनुमान की एक विशिष्ट साधना कर अपने जीवन को सौभाग्य प्रदान करें।

इस साधना के लिए अपने परम्परागत पूजन में कोई विशेष परवर्तन नहीं करना है। इसे आप नवरात्रि में प्रारम्भ करें प्रथम दिन रात्रि ११ बजे साधना आरम्भ करें वस्त्र आदि का रंग लाल हो और दिशा दक्षिण हो। अपने समक्ष ताम्रपत्र पर अंकित ***'हनुमान यंत्र'*** स्थापित करें और अपने घर में जितने भी द्वार हो (मुख्य द्वार सहित) उतने ***तांत्रोक्त नारियल*** प्राप्त कर उन्हें भी यंत्र के समक्ष रख दें। भगवान श्री हनुमान का वीर मुद्रा में अथवा पर्वत उठाए हुए प्राण प्रतिष्ठित चित्र भी मढवा कर स्थापित कर लें।

'हनुमान यंत्र' का पूजन सिंदूर एवं लाल पुष्प से करें तथा शुद्ध घी मिश्रित गुड़ का भोग लगाएं, ध्यान रखें की इस साधना में सुगन्धित द्रव्य आदि का प्रयोग नहीं करना है। अगरबत्ती के स्थान पर लोबान की धूप देना अधिक उचित माना गया है। उपरोक्त ढंग से संक्षिप्त पूजन कर प्रत्येक तांत्रोक्त नारियल पर एक सिंदूर का टीका लगाएं तथा तेल का बड़ा दीपक जला कर ***'मूंगा माला'*** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें --

॥ ॐ श्रीं महात्र्जनाय पवनपुत्रावेशयावेशय हुं श्री हनुमते फट् ॥

उपरोक्त मंत्र साधक को उच्चारण में प्रथम बार कठिन लग सकता है, किन्तु इसके वर्णों के संगुफन में एक विचित्र सी ऊर्जा छिपी हुई है जिसका अनुभव साधक जब मंत्र जप तीव्रता से करता है तो स्वयं अनुभव कर सकता है। इस काल में ऐसा भी अनुभव हो सकता है मानों कोई बाह्य शक्ति सारे शरीर को झंझोड़ रही है तथा हाथ से माला भी गिर सकती है किन्तु ये सब केवल इस मंत्र की ऊर्जा के ही परिणाम हैं, अतः साधक कदापि भयभीत न हो। यदि मंत्र जप खण्डित हो जाए तो पुनः प्रारम्भ से मंत्र जप करें।

मंत्र जप के उपरान्त प्रत्येक तांत्रोक्त नारियल को घर के प्रत्येक द्वार पर रख दें और रात भर रखा रहने दें। सुबह इस तांत्रोक्त नारियलों को यंत्र व माला के साथ किसी पवित्र स्थान पर विसर्जित कर दें अथवा घर से दक्षिण दिशा में जाकर कहीं एकान्त में गड्ढा खोदकर दबा दें।

उपरोक्त साधना के फलस्वरूप जहां साधक को गृह शुद्धि प्राप्त होती है वहीं भगवान श्री हनुमान की कृपा का फल भी प्राप्त होता है, और यदि साधक आगे के जीवन में भी संयम पूर्वक रह कर भगवान श्री हनुमान की आराधना करे तो कई अन्य लाभ प्राप्त होते रहते हैं। यह ध्यान रखें कि जिस दिन यह साधना सम्पन्न करें उस दिन केवल फलहार अथवा दुग्ध आहार ही ग्रहण करें, मौन रहें तथा ब्रह्मचर्य का पालन करें। अशुद्धता से हनुमान साधना में लाभ प्राप्त होने के स्थान पर हानि भी प्राप्त हो जाती है।

आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाए तथा कार्ड क्रं ६ पर अपने दोनों मित्र का पता लिखकर भेजे कार्ड मिलने पर रु. ४९०/- की वी. पी. द्वारा आपको मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठत 'हनुमान यंत्र' 'मूंगा माला' 'तांत्रोक्त नारियल' सामग्री भेज देगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।

इस साधना को सम्पन्न करने के लिए कुछ विशेष सावधानियां बरतनी चाहिए।

1. साधक लाल वस्त्र, लाल पुष्प तथा लाल आसन का ही प्रयोग करें।
2. यह साधना दक्षिणाभिमुख हो कर करें।
3. इस साधना को साधक प्रातः, सायं या रात्रि को कभी भी सम्पन्न कर सकता है।
4. साधना काल में ब्रह्मचर्य का पालन करें।
5. साधक साधना स्थल पर ही शयन करें।

हनुमान जितने सरल प्रकृति के हैं, क्रोध में आने पर उतने ही उग्र हो जाते हैं, इसलिए यदि साधक साधना काल में अत्यधिक क्रोध में रहने लगता है तो परेशान नहीं होना चाहिए अपितु गुरु मंत्र का जप कर लेना चाहिए।

साधकों के लिए तो यह सिद्धियों का द्वार खोलने की साधना है। हनुमान स्वयं कभी किसी के समक्ष पराजित नहीं हुए, अपितु कितनी भी विपरीत स्थिति हुई उसमें भी वे अपनी चार्तुयता से विजयी ही हुए हैं और साधकों में भी यही गुण (उनकी श्रेष्ठता का गुण) होना चाहिए, कि कैसी भी समस्या हो, कैसी भी परिस्थितियां हों, अपने पुरुषार्थ से, अपने बल, चातुर्य से विपरीत स्थितियों में सफलता प्राप्त करे ही।

हनुमान का एक प्रमुख गुण था, कि उन्हें अपने इष्ट, अपने गुरु में अखंड विश्वास था, कि उनके इष्ट उनके साथ हैं, इस कारण वे प्रत्येक कार्य करने को उद्यत रहते थे, चाहे वह लंका तक पहुंचना हो, समुद्र को पार करना हो या फिर लक्ष्मण के लिए जड़ी-बूटियों का पूरा पहाड़ लाना हो। यदि साधक साधना के प्रति पूर्ण विश्वास तथा साधना में सफलता प्राप्ति का विश्वास तथा अपने गुरु के प्रति पूर्ण विश्वास युक्त होकर इस साधना में प्रवृत्त होता है तो यह सम्भव ही नहीं, कि वह सफलता प्राप्त न करे। हनुमान साधना का मूल उत्स तो यही है।

लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र

किसी भी मंगलवार को दक्षिणाभिमुख हो कर लाल वस्त्र पहन कर **मूंगे की माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें –

मंत्र

मर्कटेश महोत्साह सर्वशोकविनाशनं।
शत्रुनसंहार मे रक्ष श्रियं दापय मे प्रभो।।

इस प्रकार पांच मंगलवार करें। पांचवें मंगलवार को हनुमान मंदिर में बेसन से बनी किसी मिठाई का भोग लगाकर माला नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर – 150/-

साधना विधि

- इस साधना में आवश्यक सामग्री '**हनुमान यंत्र**', '**हकीक माला**'।
- इस साधना को आप दिनांक 7.1.98 को या फिर किसी भी मंगलवार को सम्पन्न करें।
- साधक स्नानादि कर, पूजा स्थान को स्वच्छ कर लें, साधना हेतु लाल वस्त्र ही धारण करें तथा बैठने के लिए लाल आसन का उपयोग करें।
- अपने सामने लाल कपड़ा बिछा कर, एक पात्र में कुंकुम से हनुमान मंत्र लिखकर '**हनुमान यंत्र**' को स्थापित कर दें।
- यंत्र का पूजन सिन्दूर, अक्षत, पुष्प से करें, यंत्र के सामने तेल का दीप लगा दें, अगरबत्ती लगा दें।
- हकीक माला को भी पुष्प की पंखुड़ियां रखकर स्थापित कर दें।

हनुमान का ध्यान करें –

बालार्कयुत तेज संत्रिभुवन प्रक्षोभकं सुन्दरं।
सुग्रीवादि मस्तवान रगणैः संसेव्यपादाम्बुजम्।।
नादेनैव समस्तराक्षसगणान्संत्रासयन्तं प्रभुं।
श्रीमद्रामपदाम्बुजस्मृतिरतं ध्यायसामि वातात्मजम्।।

- हकीक माला से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करें।

मंत्र

।। ॐ ह्रौं हस्ख्फ्रौं ह्रौं ॐ।।

OM HROUM HASHASPHROUM HROUM OM

- मंत्र जप समाप्त होने के पश्चात साधक साधना स्थान पर ही सो जायें।
- अगले दिन यंत्र तथा माला नदी में प्रवाहित कर दें।

साधक जो भी कामना लेकर यह साधना सम्पन्न करेगा उसमें उसे सफलता प्राप्त होगी ही।

न्यौछावर प्रयोग पैकेट – 240 /-

कालचक्र

समय का चक्र निरन्तर गतिशील है और यदि सूक्ष्मता से देखें, तो प्रत्येक क्षण का अपना अलग विशिष्ट महत्त्व है। इस काल चक्र की गति के फलस्वरूप कुछ ऐसे विशिष्ट क्षण भी व्यक्ति के जीवन में आते हैं, जिनमें साधना विशेष को सम्पन्न करने पर सफलता का प्रतिशत अधिकतम होता है और श्रेष्ठ साधक इन विशेष क्षणों को अपने जीवन में उतार लेते हैं।

इस स्तम्भ के अन्तर्गत ऐसे ही चार विशिष्ट साधना मुहूर्तों को प्रस्तुत किया जा रहा है, जिनमें सम्बन्धित साधना सम्पन्न करने पर सफलता प्राप्त होगी ही . . .

10.11.97 – कार्तिक मास शुक्ल पक्ष की एकादशी, पूर्वा भद्रा नक्षत्र, सोमवार के दिन व्याघात योग में, तीक्ष्ण कर्म का योग बन रहा है। इस दिन शत्रु के प्रत्येक कर्म को क्षीण करने के लिए एक पात्र में '**त्रिष रत्ना**' (न्यौछावर – 115/-) को स्थापित कर घी का दीपक लगा दें। इसके समक्ष निम्न मंत्र का जप प्रात: 6.00 से 7.40 तक करें। मंत्र जप समाप्त होने पर त्रिष रत्ना को निर्जन स्थान पर फेंक दें।

मंत्र –

।। ॐ हूं फट्।।

OM HROOM PHAT

17.11.97 – सर्वार्थ सिद्धयोग और अमृत सिद्धि योग का समन्वय, सोमवार का दिन, मृगशिरा नक्षत्र आपके किसी कार्य को भी पूर्णता देने हेतु श्रेष्ठ समय है। आप '**विभुदय चक्र**' (न्यौछावर – 71/-) को अपने दाहिने हाथ में लेकर निम्न मंत्र का जप रात्रि को 9.00 बजे से 10.00 तक करें। मंत्र जप समाप्त होने पर '**विभुदय चक्र**' को निर्जन स्थान पर फेंक दें।

मंत्र –

।। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ।।

OM SHREEM HREEM SHREEM OM

22.11.97 – महाकाल भैरव का दिन, कार्तिक कृष्ण पक्ष की अष्टमी को अत्यन्त ही श्रेष्ट मुहूर्त में पड़ रहा है। इस दिन साधक स्वयं की तेजस्विता, प्रखरता को और अधिक निखार सकता है। '**तारक बीज**' (न्यौछावर – 50/-) को काले वस्त्र में बांध कर रात्रि 8.00 बजे से 8.48 तक निम्न मंत्र का जप करे। जप के पश्चात तारक बीज को किसी भी मंदिर में चढ़ा दे।

मंत्र –

।। ॐ क्रीं क्रीं भैरवाय क्रीं क्रीं फट्।।

OM KREEM KREEM BHAIRAVAY KREEM KREEM PHAT

25.11.97 – मंगलवार के दिन हस्त नक्षत्र, प्रीति योग तथा सिद्ध योग बन रहा है। इस दिन साधक गृहकर्म शांति के लिए '**अंकवारी**' (न्यौछावर – 60/-) लेकर लाल वस्त्र से बांध कर निम्न मंत्र का जप प्रात: 6.00 से 6.48 तक करें, '**अंकवारी**' को दान में दे दें।

मंत्र –

।। ॐ ह्रीं प्रीति भव सिद्धि ह्रीं ॐ।।

OM HREEM PREETI BHAV SIDHI HREEM OM

इस अंक में हम साबर मंत्रों के उसी विशाल भंडार से चुनकर तीन प्रयोग प्रकाशित कर रहे हैं जो उस क्षेत्र के निवासियों द्वारा अनुभव सिद्ध हैं। यद्यपि स्पष्ट नहीं होता कि कौन से मंत्र स्वयं चर्पटीनाथ जी द्वारा रचित है और किन मंत्रों में उनकी परम्परा में हुए योगियों ने काल के अनुरूप परिवर्तन किए। क्योंकि साबर मंत्रों के सम्बन्धों में यह उल्लेखनीय है कि अनेक साबर मंत्र मूलतः किसी और स्वरूप में रचे गए थे, जिनमें कालान्तर में युग के अनुरूप परिवर्तन भी होते रहे।

बालरोग निवारणार्थ - रोग तो क्लेश दायक होते ही हैं, किन्तु बालरोग की समस्या और भी जटिल होती है। बाल्यकाल, जीवन में ऐसा समय होता है जब शिशु में कोई न्यूनता आ जाए, कोई विकार उत्पन्न हो जाए अथवा सभी कुछ ठीक होते हुए भी विकास भली-भांति न हो रहा हो, तब माता-पिता को समझ नहीं आता कि वे अपने शिशु के लिये क्या करें। **जब घर का शिशु ही नहीं स्वस्थ होता है तब माता-पिता के दिल भी मुरझा जाते हैं।**

अक्सर बच्चे पता नहीं कि न कारणों से सूखते चले जाते हैं और सभी उपायों के बाद भी उनमें वह खिलखिलाहट व चुलबुलाहट नहीं दिखती जो बचपन का एक आवश्यक अंग होती है। यह सामान्य दशा नहीं होती। यदि बच्चा इस तरह से सुस्त, चिड़चिड़ा और निर्बल बना रहे तो इसके पीछे शारीरिक कारणों के साथ-साथ अन्य कारण भी हो सकते हैं जैसे घर में अशुभ आत्मायें आदि . . . और बच्चा संवेदनशील होने के कारण उनसे शीघ्रता से ग्रसित हो जाता है।

साबर मंत्रों में बालरोग के लिए अनेक प्रयोग मिलते हैं, जिनसे सामान्य रूप से तो लाभ होता ही है तथा अनिष्ट का निवारण भी सम्भव होता है। ऐसे सभी प्रयोगों में बच्चे के पिता को ही साधनात्मक उपाय करना पड़ता है। **'मधुरूपेण रुद्राक्ष'** ऐसे सभी प्रयोगों में निवारण के लिए स्वयं-सिद्ध माना गया है और यदि वह विशिष्ट मंत्रों से सिद्ध हो तब तो लाभ द्विगुणित हो जाते हैं। ऐसा मंत्र सिद्ध रुद्राक्ष बालक के गले में अथवा कमर में धारण करा देना लाभदायक रहता है। साथ ही **प्रति रविवार** बालक के पिता **हकीक माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप भी कर लें, यह आवश्यक है।

मंत्र

ॐ क्लीं रोगान्नशेषाय क्लीं फट्।।

२. रोजगार प्राप्ति हेतु - इस युग की सबसे जटिल समस्या बेरोजगारी ही है जिसके जाल में उलझ कर अनेक युवक न केवल अपने जीवन का उत्साह-उमंग खो देते हैं, वरन उनके सामने अपने अस्तित्व को बचाये रखने की समस्या भी आकर खड़ी हो जाती है। सभी तरह के प्रयत्न करने के बाद भी जब निराशा ही हाथ लगती है तो व्यक्ति का जीवन पर से भी विश्वास उठ जाता है। **ऐसी विकट स्थिति में जब साधक को आजीविका प्राप्ति न हो रही हो** या मनचाहा कार्य न मिल रहा हो तब यह प्रयोग एक विशेष स्थान रखता है। नाथ योगियों की भाषा में **'कुरसड़ा'** कहा जाने वाला एक विशिष्ट यंत्र रख कर यदि साधक एक बुधवार से आरम्भ कर अगले बुधवार तक निरन्तर प्रति रात्रि में निम्नलिखित मंत्र की एक माला मंत्र जप **'मूंगे की माला'** से कर लेता है तो उसे लाभ मिलने की क्रिया आरम्भ हो जाती है।

मंत्र

ॐ श्रीं मम् कार्य सिद्धि करि करि ह्रीं फट्।।

मंत्र जप के उपरान्त साधक को चाहिए कि वह यंत्र को तो अपने शरीर पर धारण कर ले, जबकि माला को किसी पेड़ की जड़ में छोड़ आए। इन्टरव्यू या रोजगार के सम्बन्ध में बातचीत करते समय इस यंत्र को अपनी देह पर अवश्य धारण किए रहें।

३. अनायास लड़ाई-झगड़े होना:- कई-कई बार ऐसा होता है कि व्यक्ति सीधा-शांत होते हुए भी अनायास झगड़े-झंझट में उलझने को मजबूर हो जाता है या उसके साथ अनायास मान-हानि की स्थिति बनती रहती है। अदने से अदना आदमी उसे खरी-खोटी सुना देता है और वह तिलमिलाकर रह जाता है, कुछ कर नहीं पाता। **यह तो सभ्य व्यक्ति की शिष्टता होती है कि वह ऐसी सभी स्थितियों में शांत रहता है, अपने बड़प्पन को नहीं छोड़ता, लेकिन मन को पीड़ा तो पहुंचती ही है।** ऐसा क्या किया जाए जिससे कोई हमारे स्वाभिमान को न कोई कुचल सके, कोई अनायास पीड़ा न दे। इसके लिए भी साबर साधनाओं में एक श्रेष्ठ साधना दी गई है। इस प्रकार के अपमान और कष्ट मूलरूप में 'बाधा' ही हैं, जिनका निवारण करने के उपाय के रूप में **'सर्वबाधा निवारण यंत्र'** एक अचूक यंत्र है। यह प्रयोग एक मंगलवार का है। रात्रि में अथवा प्रातः साधक अपनी इच्छानुसार किसी भी समय साधना में बैठकर यंत्र को स्थापित कर संक्षिप्त गुरु पूजन कर **'मूंगा माला'** से गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करें तथा निम्न मंत्र की भी एक माला मंत्र-जप करें:-

मंत्र

ॐ ह्रौं हसौं ह्रीं हुं फट्।।

मंत्र-जप के उपरान्त उपरोक्त यंत्र को धागे में पिरोकर गले में अथवा बांह पर धारण कर लें। जीवन की उपरोक्त तीनों स्थितियां अपने-अपने ढंग से साधक को विचलित करने वाली अथवा उसके मार्ग में बाधा डालने वाली हो सकती हैं। इन लघु प्रयोगों के माध्यम से साधक इनका समाधान सहज ही प्राप्त कर सकता है।

यों तो किसी भी रोग के शमन हेतु आज चिकित्सा विज्ञान के पास अचूक इलाज है, परन्तु मंत्रों के माध्यम से चिकित्सा के पीछे धारणा यह है, कि सभी रोगों का उद्भव मनुष्य के मन से ही होता है। मन पर पड़े दुष्प्रभावों को यदि मंत्र द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए, तो रोग स्थायी रूप से शान्त हो जाते हैं।

१. कहीं आप बीमारी के शिकंजे में तो नहीं फंसते जा रहे हैं?

बीमारी, रुग्णता अवसाद यह कब हौले कदमों से आकर व्यक्ति को घेर ले – यह तो कोई नहीं जान सकता है, यहां तक कि जानने के बाद भी व्यक्ति इसे हल्के ढंग से ले लेता है और कब कोई एक बीमारी इसका सहारा लेकर उग्र रूप धारण कर पूरे शरीर में फैल जाए यह तो स्वयं आजकल के डॉक्टर भी नहीं स्पष्ट कर पाते हैं। यदि आप भी छोटी-छोटी बीमारियों से ग्रसित होने लग गये हैं तो शीघ्र ही सावधान हो जाइए और स्वयं को सुरक्षित कर लीजिए।

किसी पात्र में कुंकुम से अपना नाम लिखकर **'हेमांगा'** स्थापित कर दें। **हेमांगा** का पूजन सिंदूर, अक्षत, पुष्प से करें। निम्न मंत्र का जप २१ बार पांच दिन तक नित्य करें –

मंत्र

॥ ॐ शं शंभवाय रोगनाशाय रुद्राय फट् ॥

पांच दिन के बाद हेमांगा को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट – 60/-

२. कई रोगों की रामबाण औषधि – ध्यान

ध्यान सिर्फ आंख बंद करके बैठने की क्रिया नहीं है। यह स्वयं को पूर्ण रूप से ऊर्जावान बनाने के लिए है, बशर्ते ध्यान में गहनता हो। ध्यान के लिए उपयुक्त समय है, प्रातः काल, जब वातावरण भी पूर्ण चैतन्य रहता है और प्रकृति भी नूतनता एवं स्फूर्ति का अहसास कराती है। मन को पूर्ण रूप से शांत करने की प्रक्रिया एवं बाहरी विचारों से सप्रयास कटने की क्रिया से अनेक रोग ठीक होते हैं, शरीर स्वस्थ एवं मन प्रफुल्लित रहता है।

आप भी जब गुरु मंत्र या इष्ट मंत्र का जप करते हुए ध्यान प्रक्रिया में संलग्न होंगे, तो निश्चय ही आप स्वयं को अनेक बीमारियों से मुक्त कर पायेंगे। आप ध्यान करते समय **'गुरु रहस्य सिद्धि माला'** धारण करके बैठें।

साधना सामग्री पैकेट – 300/-

३. क्या आप मेण्टल टेन्सन से पीड़ित हैं तो इसे अवश्य करें?

व्यक्ति के जीवन में अनेकों उतार-चढाव आते रहते हैं, जिनसे वह प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता। सीमा से अधिक प्रभावित होने पर ये घटनाएं उसके मन मस्तिष्क पर बुरा असर डालती हैं, जो उसे मेण्टल टेन्सन जैसी व्याधि का शिकार बना देती हैं।

शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा हो, जो इस बीमारी से प्रभावित न हो, यही प्रायः समस्त मानसिक रोगों की जड़ है। इस रोग से पीड़ित व्यक्ति अत्यन्त ही उदास, निष्क्रिय, निराशावादी एवं मूक हो जाता है, उसे किसी भी कार्य को करने में रुचि नहीं आती, हर काम उसे बोझ सा लगने लगता है, न किसी से बात करने की इच्छा होती है और न ही कुछ खाने-पीने की।

कई बार तनाव व्यर्थ के कारणों द्वारा भी हो जाता है, जिनका कोई आधार नहीं होता। जब व्यक्ति मानसिक तनाव से पीड़ित हो और किसी भी समस्या का हल नहीं सूझ पा रहा हो या कोई निर्णय लेने में असमर्थता की स्थिति उत्पन्न हो रही हो, तो ऐसे में उसे यह छोटा सा किन्तु अद्भुत फलदायक

प्रयोग कर ही लेना चाहिए और जब व्यक्ति इस प्रयोग को करता है, तब वह एहसास करता है, कि शारीरिक व मानसिक दोनों रूपों से वह पूर्ण स्वस्थ अनुभव कर रहा है।

इसके लिए व्यक्ति को चाहिए, कि वह गले में **मूंगे के आठ दाने** किसी लाल धागे में पिरोकर धारण कर नित्य पांच बार २१ दिन तक इस मंत्र को बोलें –

मंत्र

॥ ॐ हुं हुं हनुमते हुं हुं फट् ॥

ऐसा करने पर वह मानसिक तनाव का शिकार नहीं होता तथा उसके चेहरे पर सदा प्रसन्नता ही बनी रहती है।

साधना सामग्री पैकेट – 60/-

४. क्या आप थक गए हैं, तो इससे उबरने के लिए यह तरीका अपनाइये?

आज मनुष्य इस कम्पयूटराइज्ड युग में शरीर की अपेक्षा मस्तिष्क से अधिक काम लेने लगा है, उसके लिए इतने सुख-सुविधाओं के साधन उपलब्ध हो चुके हैं, कि वह बैठे बैठे केवल दिमाग से अपना कार्य सम्पन्न करने में सक्षम है, इसीलिए वह जल्दी थक भी जाता है और उसका प्रभाव अपने शरीर के प्रत्येक अंग अंग में महसूस करने लगता है, क्योंकि मन का सीधा सम्बन्ध शरीर के प्रत्येक अंग से जुड़ा होने के कारण उसका प्रभाव शरीर के प्रत्येक तन्तु पर पड़ता ही है।

ऐसी अवस्था में वह शरीर में अकड़न और हड्डियों में दर्द महसूस करने लगता है और अन्य कार्यों को पूर्ण करने में सक्षम नहीं हो पाता, जिसका निराशाजनक परिणाम भी उसे भुगतना पड़ता है – आपके मन में यह प्रश्न अवश्य उठ रहा होगा, कि ऐसा कौन सा उपाय है, जिससे हमेशा तरोताजा, स्फूर्तियुक्त और चैतन्यवान रहा जा सकता है।

इसके लिए स्नान आदि से शुद्ध व पवित्र होकर **'चैतन्य माला'** को धारण करें और निम्न मंत्र का दस मिनट तक मानसिक जप करते हुए शवासन में लेट जायें।

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ ॥

आप जब भी थकावट महसूस करें, इस क्रिया पद्धति को अपनायें और अपने आप को चैतन्य पुरुष बनायें। माला को किसी निर्जन स्थान पर पन्द्रह दिन के बाद डाल दें।

साधना सामग्री पैकेट – 150/-

५. आप अपनी जवानी को हमेशा कायम रखिये !

यौवन तो एक ऐसी उमड़ती घटा है, जो जीवन में पता नहीं कहां से आकर बरसती है और जीवन को भिगो कर चली जाती है, इसकी कसक पूछिये उनसे, जिन पर यह घटा बरस कर जा चुकी हो। मन का नैराश्य व्यक्ति को असमय ही बूढ़ा कर देता है, वह ढूंढता रहता है, कि जीवन में नये स्वप्न मिलें, नयी आशायें मिलें और वह उन सपनों को मूर्त रूप दे सके, लेकिन उसके शरीर और मानस के तन्तु उसे ऐसा घटित नहीं करने देते, जीवन की उस घटाटोप स्थिति में कोई भी विज्ञान, कोई भी समाज शास्त्र या विधि शास्त्र आगे बढ़कर व्यक्ति की मदद नहीं कर सकता।

आप अपनी जवानी को हमेशा कायम रख सकते हैं, सामान्यतः यह शीर्षक पढ़कर शायद आपको विश्वास न हो, मगर हमारे योगियों और ऋषियों ने इस प्रकार के नुस्खे को ढूंढ निकाला है, जो अभी तक अज्ञात था, मगर यदि हम अपने अन्दर की जितनी भी शिथिल नाड़ियां हैं, मांसपेशियां हैं, उन्हें पुनः अनुकूल बना सकें, तो वापिस जवानी लौट सकती है। महर्षि च्यवन ने इसी प्रकार पुनः यौवन को प्राप्त किया था।

इसका सर्वश्रेष्ठ उपाय यह है, कि कम से कम भोजन करें, अन्न का आहार कम लें तथा तरल पदार्थ ज्यादा लें, जिससे आप अन्नमय कोष की अपेक्षा प्राणमय कोष में ज्यादा जाग्रत रह सकेंगे, तथा कैलोरी भी आपकी उतनी ही हो, जो आपके शरीर को हर समय सुव्यवस्थित एवं स्वस्थ रख सके, और धीरे-धीरे अन्नमय कोष की अपेक्षा प्राणमय कोष में अपने आप को स्वस्थ रखते हुए निम्न मंत्र का प्रातः काल ६ बजे स्नान करने के पश्चात **'सर्वकार्य सिद्धि माला'** से पांच माला मंत्र जप करें –

मंत्र

ॐ श्रीं अश्विन्यै नमः

यह नियमित जप ११ दिन तक करें ग्यारह दिन के बाद माला को नदी में प्रवाहित कर दें, तो निश्चय ही आपकी सदा बहार जवानी लौट सकती है और साथ ही वह व्यक्ति रोग मुक्ति भी प्राप्त कर लेता है।

साधना सामग्री पैकेट – 150/-

सौ-सौ कार्य खुद-ब-खुद सम्पन्न हो जाते हैं

इस अद्वितीय मूंगा मणि माला से

यह अनंग माला है, वशीकरण माला है, शत्रु विजय माला है, यह तो एक प्रकार से रक्षा कवच ही है। इसे सदैव धारण किये रहें।

माला का महत्व प्रत्येक प्रकार से मंत्र-जप में विशेष है, साधक के लिए यह प्राणों के समान प्रिय वस्तु है, माला जप के समय मन को नियंत्रण में रखते हुए शक्ति को एक ही दिशा में प्रवाहित करती रहती है, और एक ही दिशा में प्रवाह होने से जप अनुष्ठान के कार्य में सफलता मिलती है, बिना माला मंत्रानुष्ठान करना उसी प्रकार है जैसे आत्मा के बिना देह, माला के अभाव में जप-प्राणहीन है, इसीलिए हर अनुष्ठान में अलग-अलग प्रकार की माला का विधान आवश्यक रहता है।

मूंगा मणि माला का तात्पर्य है, जो मंत्र सिद्ध मूंगा मणि रूप रूप में पिरोया गया हो, जिसमें सभी स्वर-वर्ण रूप में गुंथे हुए हों, **मूंगा मणि माला** में मूलाधार से आज्ञा चक्र पर्यन्त सूत्र रूप में विद्यमान है, इसीलिए मूंगा मणि माला द्वारा किया गया किसी भी मंत्र का जप निष्फल नहीं जा सकता।

विजयप्रद वशीकरण माला

माला के 108 मनके केवल मनके नहीं हैं, इसमें स्वर क्रम के सभी वर्ण विद्यमान हैं, और विजयप्रद वशीकरण माला षोडश संस्कार युक्त हिरण्यगर्भ मंत्रों से सिद्ध होने के कारण अपने नाम के अनुरूप ही साधक को फल प्रदान करती है, इस विशिष्ट माला के पूजन का, धारण करने का विशेष विधान है, जिसे भली-भांति समझ कर करना चाहिए।

पूजा विधान

रविवार के दिन प्रातः शुभ मुहूर्त में मूंगा मणि माला को अपने पूजा स्थान में पीपल के नौ पत्ते ला कर, अष्ट दल कमल की भांति आठ पत्तों को रखें, नौवां पत्ता बीच में रखें, तथा उस पर माला स्थापित करें, स्थापित करने से पहले माला को "**सद्योजात**" मंत्र का उच्चारण कर शुद्ध जल से धो दें -

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवे नाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥

इसके पश्चात् "**वामदेव मंत्र**" का उच्चारण कर **मूंगा मणि माला** पर चन्दन, अगर, गंध, पुष्प, इत्यादि चढ़ायें -

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रूद्राय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः। बलाय नमो बलप्रमथाय नमः सर्वभूत दमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥

इस समय जिस कार्य की विशेष इच्छा हो, उसका स्मरण करना चाहिए, अब अघोर मंत्र का उच्चारण करते हुए एक ओर घी का दीपक तथा दूसरी ओर अगरबत्तियाँ जलायें।

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

किसी भी प्रकार का दोष हो, इस अघोर मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करने से दूर हो जाता है, अब आत्म शक्ति हेतु भगवान शिव का स्मरण करते हुए पांच बार तत्पुरुष मंत्र का उच्चारण करें और माला पर कुंकुम चढ़ायें -

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय।
धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

अब सिद्धि माला के सर्वाधिक महत्वपूर्ण ईशान मंत्र का जप 108 बार करना चाहिए -

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोऽम्॥

अपने इष्ट देव का ध्यान करते हुए माला का पूजन कर इष्ट मंत्र का जप करें और प्रार्थना करें -

माले माले महामाले सर्वतत्व स्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥

माला में सम्पूर्ण रूप से शक्ति तत्व विद्यमान है, और इसे जाग्रत करने हेतु लाल रंग के पुष्पों से पूजा करते हुए 108 बार विजयप्रद आकर्षण मंत्र का जप करें -

॥ ॐ ऐं श्रीं अक्षमालायै नमः॥

इस प्रकार पूजा सम्पन्न कर माला को उठा कर अपने मस्तक से तथा नेत्रों से लगायें तथा प्रार्थना करें कि -

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां सर्वसिद्धिप्रदा मता।
तेन सत्येन मे सिद्धिं देहि मातर्नमोऽस्तुते॥

जब भी कोई विशेष कार्य हेतु जाना हो, तो ऊपर लिखी प्रार्थना बोल कर माला धारण कर लें, कार्य निश्चय ही सिद्ध होता है, इस विशेष माला को हमेशा धारण किये रहें, यह हाथ से गिरनी नहीं चाहिए, यदि इसका सूत पुराना हो जाय तो माला मंत्र का जप करते हुए पुनः गूंथ दें।

इस विजय माला का महत्व इतना अधिक है, कि शक्ति का कोई भी अनुष्ठान इस माला से मंत्र जप करते हुए किया जाय, तो वह साधना अवश्य ही पूर्ण होती है -

- शरीर में कोई व्याधि हो, तो इसे धारण करने से वह पीड़ा जड़-मूल से ही समाप्त हो जाती है।
- यदि विद्यार्थी इस माला को धारण करें और इस माला से **"सरस्वती मंत्र"** का जप करें, तो विद्या में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।
- वशीकरण हेतु, किसी को अपने आकर्षण में बांधने हेतु इस माला का प्रभाव सर्व सिद्ध है, गले में यह माला धारण कर अनजान व्यक्ति के सामने चले जायें तो वह आपके अनुकूल हो जाता है।
- यदि कोई कन्या इस माला से **"शिव गौरी मंत्र"** का जप करती है तो छः महीने के भीतर-भीतर विवाह का योग बन जाता है, और इच्छित वर की प्राप्ति होती है।
- यह माला **"अनंग साधना"**, अनंग शक्ति का सम्पूर्ण स्वरूप है, इसे धारण करने से बल, वीर्य, तेज की वृद्धि होती है।
- इस मणि माला को धारण करते ही कितनी ही चिन्ताएं हों, मन को शान्ति प्राप्त होती है, और साधक सही दिशा में चिन्तन कर अपनी समस्या का उचित हल प्राप्त कर सकने में समर्थ होता है।

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇

मूंगा मणि माला से हनुमान का लघु प्रयोग

यह सिद्ध बात है कि कृष्ण पक्ष में अर्द्धरात्रि के पश्चात् शहर क्या घने जंगल अथवा श्मशान में भी हनुमान मंत्र, हनुमान चालीसा इत्यादि का पाठ करते हुए निकल जायें तो सर्प, बिच्छू, जंगली जानवर क्या भूत-प्रेत पिशाच भी आपके पास नहीं फटक सकते।

मरणान्तक पीड़ा से व्याप्त कष्ट भोगते हुए रोगियों को हनुमान साधना से अभिमंत्रित कर जल पिलाया है और हनुमान जी की कृपा से वे पूर्ण स्वस्थ हुए हैं, क्योंकि ऐसा चमत्कार केवल हनुमान ही कर सकते हैं, वे अपने भक्त को कष्ट में नहीं देख सकते और उनके लिए कुछ भी करना सहज संभव है, जो एक संजीवनी बूटी के लिए पूरा पहाड़ उठा कर ले जा सकते हैं, जो रावण जैसे महा प्रतापी का अंहकार चूर-चूर कर सकते हैं, ऐसे एकादश रुद्र की महिमा उनकी भक्ति करके ही जानी जा सकती है।

श्री हनुमान प्रतीक हैं - ब्रह्मचर्य, बल, पराक्रम, वीरता, भक्ति, निडरता, सरलता और विश्वास के। इनके एक-एक गुण के सम्बन्ध में हजारों अध्याय लिखे जा चुके हैं, निर्बल हो कर अधीन हो कर जीना भी कोई जीना है क्या? शत्रु अथवा बाधा बड़ा अथवा छोटा नहीं होता, वह तो केवल व्यक्ति अथवा घटना होती है, और उस पर आत्म विश्वास द्वारा विजय प्राप्त की जा सकती है और जो श्री हनुमान का साधक है उसके भीतर तो आत्मविश्वास की आत्म शक्ति छलकती रहती है, उसे ज्ञान है कि मेरे पीठ के पीछे प्रबल पराक्रम देव श्री हनुमान बजरंग बली खड़े हैं फिर मुझे काहे की चिंता।

जीवन में बल प्राप्ति हेतु, शत्रु बाधा निवारण हेतु, संकल्प सिद्धि हेतु, अनंग शक्ति एवं वीर्य शक्ति हेतु और पूर्ण कल्याण एवं सर्वोन्नति की प्राप्ति हेतु मंगलवार अथवा शनिवार की रात्रि में रात 9.45 के बाद **मूंगा माला** से निम्न **हनुमान मंत्र** की 7 माला जप करने के पश्चात् 45 मिनट तक श्री हनुमान जी के **सर्व विघ्न निवारण मंत्र** का जप मूंगा मणि माला से करना चाहिए। साधक को चाहिए की वह नित्य मंगलवार एवं शनिवार को एक माला हनुमान बीज मंत्र का जप करें। इस मूंगा मणि माला को कार्य सिद्धि करने हेतु धारण करें तथा कार्य सिद्ध हो जाने पर पुनः पूजा स्थल में स्थापित कर दें या स्वयं धारण कर लें।

हनुमान बीज मंत्र

॥ ॐ हुं हुं हस्रौं हस्फ्रौं हुं हुं हनुमते नमः॥

सर्व विघ्न निवारण के लिए

ॐ नमो हनुमते परकृतयंत्रमंत्रपराहंकारभूत-प्रेत पिशाच परदृष्टिसर्वविघ्नमार्जनहेतु विद्यासर्वोग्रभयान् निवारय निवारय वध वध लुण्ठ लुण्ठ पच पच विलुंच विलुंच किलि किलि सर्वकुयन्त्राणि दुष्टवाचं ॐ ह्रीं ह्रीं हुं फट् स्वाहा।

साधना सामग्री - 300/-